मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 52 अक्टूबर, 2011 अंक : 4

प्रकाशन तिथि : 3 अक्टूबर, 2011

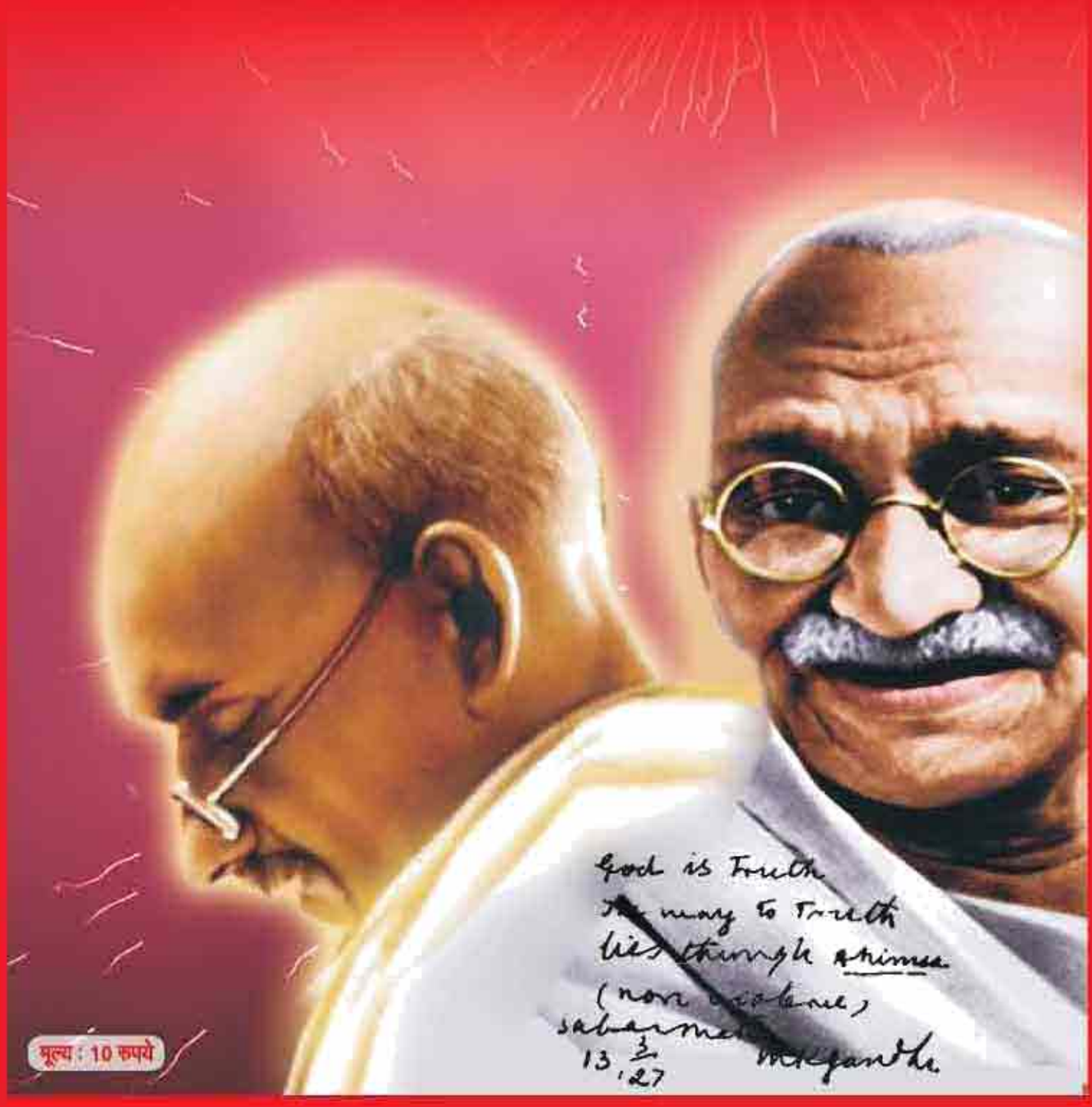

मूल्य : 10 रुपये

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, 2011

दिनांक 5 सितम्बर, 2011 स्थान : बिड़ला सभागार, जयपुर

माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित करते महामहिम राज्यपाल श्री शिवराज पाटील, मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, शिक्षामंत्री मास्टर भँवरलाल मेघवाल एवं संस्कृत शिक्षा मंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा तथा दाएं गरिमामय मंच पर सम्माननीय अतिथि महानुभाव।

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए दाएं से क्रमशः राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री शिवराज पाटील, मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, शिक्षा मंत्री मास्टर भँवरलाल मेघवाल, संस्कृत शिक्षा मंत्री बृजकिशोर शर्मा, शिक्षा राज्य मंत्री मांगीलाल गरासिया, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अध्यक्ष डॉ. सुभाष गर्ग, प्रमुख शासन सचिव श्री अशोक सम्पतराम एवं शिक्षा सचिव श्रीमती वीनू गुप्ता।

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में (बाएं) उपस्थित अधिकारी महानुभाव एवं (दाएं) पुरस्कृत शिक्षकगण। अधिकारी महानुभावों में प्रथम पंक्ति में दाएं से क्रमशः डॉ. वीना प्रधान, निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, राज. एवं श्री आलोक गुप्ता, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान विराजमान हैं।

समारोह फोटो : मोहन मित्तल, जयपुर

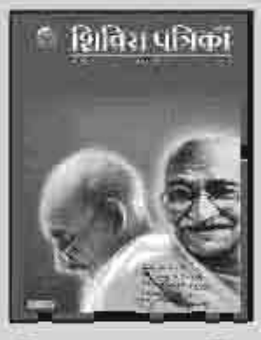

शिविरा पत्रिका

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा का समाचार-विचार मासिक

वर्ष : 52 अंक : 4

अक्टूबर, 2011

प्रकाशन तिथि : 2 अक्टूबर, 2011

प्रधान सम्पादक
आलोक गुप्ता

•

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

•

सहायक
लक्ष्मी नारायण शर्मा
मुकेश व्यास

- एक प्रति 10 रु.
- वार्षिक चंदा
  - शिक्षकों/लिपिकों के लिए 50 रु.
  - संस्थाओं/अन्य व्यक्तियों के लिए 100 रु.
- मनी ऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय है।
- पोस्टल ऑर्डर/चैक स्वीकार्य नहीं हैं।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –व.सं.

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

इस अंक में

शिक्षा के दीप जले	5	दिशाकल्प
महात्मा गाँधी : अहिंसा का आग्रह	6	डॉ. नन्दकिशोर आचार्य
बापू स्मरण : बजरिये हिन्द स्वराज	8	शुभू पटवा
दिल बदलो, दुनिया बदलेगी	11	डॉ. के.के. पाठक
जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप	15	श्याम सुन्दर बिस्सा
सत्याग्रह का हिस्सा है अनशन	16	भारत दोसी
गाँधी एवं गीता	17	डॉ. के.डी. शर्मा
महात्मा गाँधी और शिक्षा	18	आत्म प्रकाश मिश्र
बापू की सीख - 5		
अहिंसा	31	मो.क. गाँधी
और वे फकीर बन गये	32	द्वारकेश भारद्वाज
हिन्दी बाल काव्य में गाँधीजी	34	दीनदयाल शर्मा
गाँधी जीवन के कुछ प्रसंग	36	मधु सोनी
शांति के पुजारी : लाल बहादुर शास्त्री	37	अनिल कुमार झंवर
झोला पुस्तकालय - 3		
आत्मकथा एक अध्यापिका की	39	शिवरतन थानवी
अब आदमी बाघ को खाने लगा है	42	शिवनाम सिंह
अंधेरे से उजाले की ओर ले जाता दीपोत्सव	43	अचलचन्द जैन
गाँधी होने के मायने	50	प्रतिध्वनि

विशेष रपट

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, 2011
शिक्षा के शिल्पियों का सम्मान 23-26
मुकेश व्यास

स्थाई स्तम्भ

पाठक पीठ - 4/आदेश परिपत्र 27-30/पुस्तक परिचय 44-45/
चतुर्दिक 46-47/शैक्षिक समाचार - 48/भामाशाह - 49

आवरण चित्र : अनूप गोस्वामी
आवरण सज्जा : मुकेश व्यास

पाठक पीठ

शिविरा पत्रिका का माह सितम्बर 2011 का अंक देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। मुखपृष्ठ पर जलती मोमबत्ती के साथ डॉ. राधाकृष्णन् का फोटो एवं हमारी विरासत के रूप में वृक्षारोपण के मनमोहक फोटोग्राफ। नये निदेशक जी ने दिशाकल्प में दिल खोलकर विचार रखे हैं। तेजकरण जी डंडिया को स्मरण करना तीर्थ के समान है। सामग्री बहुत उपयोगी एवं रोचक है। कागज की गुणवत्ता, रंगीन व श्वेत श्याम मुद्रण का आकर्षण व प्रस्तुति बहुत सुन्दर एवं मनमोहक है। सच तो यह है कि शिविरा पूर्णतः बदल गई है। यह गति बनी रहे ताकि देश-विदेशों में इसकी खुशबू फैले, यही प्रार्थना है।

– मदन मोहन व्यास, बीकानेर

दिशाकल्प में 'उत्तम संस्कारों के संवाहक हैं शिक्षक' शीर्षक के माध्यम से निदेशक महोदय ने कर्त्तव्यनिष्ठ और संवेदनशील शिक्षकों को नमन किया है, शिक्षक समुदाय अभिनंदन करता हुआ कृतज्ञता व्यक्त करता है। गुरु आदि काल से वन्दनीय रहा है, बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में शिक्षक को अपनी गरिमा का सम्मान बनाये रखने की आवश्यकता है।

– महेन्द्र कुमार शर्मा, भवानीखेड़ा, अजमेर

मुखपृष्ठ पर डॉ. राधाकृष्णन् का चित्र 'शिक्षा की जोत जलती रहे' का सन्देश देती है। उनका जीवन परिचय सुरेन्द्र 'अंचल' के आलेख से पढ़ने को मिला, शिविरा की खास बात यह है कि जिस समय जो जयन्ती आती है, उसका वस्तु चित्रण एवं आलेख इस पत्रिका में पढ़ने को मिल जाते हैं, जो श्लाघनीय है। ऐसे ही प्रयास निरन्तर जारी रहें, ऐसी आशा है।

– श्याम लाल, भीण्डर (उदयपुर)

अत्यन्त प्रभावशाली, शिक्षाप्रद व मनमोहक मुखावरण के लिए संपादक महोदय एवं चित्रकार श्री देवीलाल परिहार 'देऊ' को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

– महेन्द्र कुमार चौधरी, 40 जी.बी., श्रीगंगानगर

शिविरा के मुखपृष्ठ पर डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का चित्र एवं मोमबत्ती की ज्योति शिक्षा रूपी ज्ञान से सबको प्रकाशित कर राष्ट्र की चहुँमुखी प्रगति की कामना कर रही है। शिक्षक की गरिमा ही शिक्षक का आभूषण है इस विचार को समझकर शिक्षक अपने स्तर को विमल रखेंगे, तभी सार्थक परिणाम प्राप्त होंगे।

– सालगराम परिहार, बाड़मेर

दिशाकल्प' में नये निदेशक महोदय का सन्देश प्रभावपूर्ण व अनुकरणीय है। बालक के व्यक्तित्व निर्माण पर बल देते हुए विद्यालय वातावरण को सरस बनाने के लिए विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने तथा उत्तम नागरिक बनाने का दायित्व गुरु का ही होता है।

– रामजीलाल घोड़ेला, बीकानेर

'शिविरा' का शिक्षक दिवस अंक अत्यन्त आकर्षक व प्रेरक लगा। सभी लेख व संस्मरण, व्यक्ति के जीवन में गुरु की भूमिका को स्वीकारते व महिमामंडित करते हैं। अंक की सभी रचनाएं इस भोग प्रधान युग के गुरुजनों को – 'हम कैसे थे, कैसे हो गए और कैसा होना चाहिए?' इन तीनों प्रश्नों के उत्तर देने में दिक्सूचक यंत्र की भूमिका तो निभाती ही है, उन्हें चिन्तन हेतु प्रेरित कर उनमें कर्तव्यनिष्ठा के भाव को सुदृढ़ भी करती हैं। सभी लेखकों के साथ आपको भी बधाई !

– उषा किरण सोनी, बीकानेर

शिविरा का बेसब्री से इन्तजार रहता है, कारण कि इसमें विविध प्रकार की जानकारियाँ रहती हैं, अनेक शिक्षाविदों के विचार, शिक्षा जगत के समाचार नियम, संशोधन, सामाजिक गतिविधियाँ, जगत के नवाचारों को अपने में समेटकर शिविरा हम तक पहुँचाती हैं। अंक में शिक्षाविद् श्री तेजकरण जी डंडिया व डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर से साक्षात्कार पढ़ा, पढ़कर बहुत ही अच्छा लगा। इनके विचार प्रेरणास्पद लगे, आगे भी ऐसे साक्षात्कार प्रकाशित करें।

– जशोदा एम. गर्ग, बेक्स, जोधपुर

'काश ! मैं भीरू नहीं होता' लेखक जगदीश शर्मा उज्ज्वल ने शिक्षा की बैलगाड़ी का शब्दचित्र उकेर कर शिक्षा जगत का पारदर्शी चित्रण किया है। प्रतिध्वनि कॉलम वरिष्ठ संपादक का वह संपादकीय लेख होता है जो पूरे अंक में प्रकाशित सामग्री की प्रतिध्वन्यात्मक जानकारी कराता है जैसे 'निर्बल से लड़ाई बलवान की ये कहानी है- दीये की और तूफान की तथा आचार्य रौ जीवन स्वयं आदर्श है, संदेश है।'

– अरविन्द कुमार डण्ड, चूरू

सर्वप्रथम सम्पादक महोदय श्री ओमप्रकाश सारस्वत व सम्पादन टीम को बधाई ! वह उनकी मेहनत का ही रंग है कि 1. देश के लिए दस मिनट, 2. पहाड़ी गडरिया और हाफिज का दीवान, 3. दलाली हीरालालन की, 4. लाली मेरे लाल की, 5. काश ! मैं भीरू न होता, 6. शांति के लिए शिक्षा तथा शिक्षक को सगरे जग को व महानता सिद्ध करके शिक्षक आदि शिक्षा, शिक्षक व शिष्य से सम्बन्धित लेख, आलेख, लघुकथा, मर्मस्पर्शी प्रसंग व साक्षात्कार आदि पढ़ने को मिले।

– मोहम्मद इस्हाक, सिरोही

चिन्तन

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्॥

– मनुस्मृति 2/121

जो नित्य बड़ों को प्रणाम करने के स्वभाव वाला और वृद्धों व लाचारों की सेवा करने वाला है, उसके आयु, विद्या, यश और बल, ये चार बढ़ते हैं।

सत्यमेव जयते

आलोक गुप्ता
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

जहाँ शिक्षा जीवन में उमंग भरती है, उत्साह का संचरण करती है, वहीं अशिक्षा निराशा व कष्ट का कारण बनती है। शिक्षा प्रकाश है तो अशिक्षा अंधेरा। यदि एक-एक शिक्षित व्यक्ति अपने शिक्षा दीप के बल पर अशिक्षितों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाए तो अशिक्षा का तिमिर हरण होते देर नहीं लगे।

दिशाकल्प

शिक्षा के दीप जले

इस माह में भारत के दो महानायकों का एक ही दिन जन्म दिवस है। दिन 2 अक्टूबर तथा जन्मदिवस हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एवं द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के। महात्मा गाँधी ने सत्य को सर्वोपरि माना और सत्याग्रह के बल पर भारत को आजाद कराने का महान काम कर दिखाया। सत्याग्रह में उनका अमोघ अस्त्र अहिंसा रहती थी। सत्याग्रह की नाव और अहिंसा की पतवार, कितना विलक्षण संयोग है। पर, इतिहास गवाह है कि ऐसे ही उदात्त व लोकमंगलमयी चेता के धनी महापुरुषों ने देश व समाज की दशा व दिशा बदलने का काम किया है।

राष्ट्रभक्ति, सरलता व सादगी तथा हर पल सावधान रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करने वाले प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री का जीवनचरित्र राष्ट्रवासियों को अद्भुत संदेश देता है। फर्श से अर्श तक पहुँच कर भी अभिमान जिनके पास फटक नहीं सका और रेल दुर्घटना होने पर नैतिकता के आधार पर रेल मंत्री के पद से तत्काल त्यागपत्र देने वाले शास्त्रीजी का व्यक्तित्व गुणों का भण्डार है। इन महापुरुषों के जीवन का गहराई से अध्ययन कर हमें उस पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

विद्यालय से लेकर राज्यस्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताएँ प्रायः सम्पन्न हो चुकी हैं। विद्यार्थी खिलाड़ियों एवं उनके प्रशिक्षकों को चाहिए कि वे सम्बन्धित खेलकूद में दक्षता हासिल करने हेतु सतत अभ्यास करते रहें। याद रखें, दक्षता का कोई अन्तिम छोर नहीं है तथा बड़ी से बड़ी क्रीड़ा प्रतियोगिता में सहभागी बनने का रास्ता स्कूल के मैदान से ही गुजरता है। मैं चाहता हूँ कि खेलकूद उत्तम शिक्षण व सहज अनुशासन के आधार बनें।

शिक्षा सत्र के तीन महीने निकल गए हैं। इस अवधि में शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों ने पढ़ाई-लिखाई के साथ ही अन्य सर्जनात्मक कार्य भी बहुतायत में किए हैं। समाज सेवा व राष्ट्रीय सरोकारों में उनकी महत्ती भूमिका रही है। अब अध्ययन को गति देना आवश्यक है।

इसी माह में दीपावली भी है। दीपों का झिलमिलाता त्यौहार दीवाली। उत्साह एवं उमंग जगाने वाला त्यौहार दीवाली। जहाँ शिक्षा जीवन में उमंग भरती है, उत्साह का संचरण करती है, वहीं अशिक्षा निराशा व कष्ट का कारण बनती है। शिक्षा प्रकाश है तो अशिक्षा अंधेरा। यदि एक-एक शिक्षित व्यक्ति अपने शिक्षा दीप के बल पर अशिक्षितों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाए तो अशिक्षा का तिमिर हरण होते देर नहीं लगे। अतः हमें दीवाली पर शिक्षा के दीप जलाने का संकल्प लेना है।

दीप से दीप जले, अँधेरा दूर हटे।
शिक्षा के दीप जले, निरक्षरता दूर हटे॥

(आलोक गुप्ता)

महात्मा गाँधी अहिंसा का आग्रह

❑ डॉ. नन्दकिशोर आचार्य

अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'चौथा सप्तक' के कवि डॉ. नन्दकिशोर आचार्य हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, चिन्तक, समालोचक एवं नाटककार हैं। आप अनेक विशिष्ट काव्य संग्रहों, साहित्यालोचनाओं तथा नाट्यकृतियों के लिए चर्चित रहे हैं। आपने जापानी ज़ेन कवि रियोकॉन के अतिरिक्त ब्रावस्की, व्लादिमिर होलन, लोर्का और आधुनिक अरबी कविताओं का हिन्दी रूपान्तरण किया है। शोध, शिक्षा और समाज दर्शन पर भी आपने आधिकारिक ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें 'कल्चरल पॉलिटी ऑफ द हिन्दूज़' दी पॉलिटी इन शुक्रनीतिसार (शोध) संस्कृति का व्याकरण, परम्परा और परिवर्तन (समाज दर्शन) तथा आधुनिक विचार और शिक्षा (शिक्षा-दर्शन) प्रमुख हैं। गाँधी चिन्तन पर केन्द्रित पुस्तक 'सभ्यता का विकल्प' ने हिन्दी बौद्धिक जगत को विशेष रूप से आकर्षित किया। डॉ. नन्दकिशोर आचार्य द्वारा सम्पादित 'अहिंसा-विश्वकोश' अहिंसा से सम्बन्धित सभी पहलुओं को समाहित किए वैचारिक जगत की अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है। अहिंसा पर आधिकारिक कार्य महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा में करने के पश्चात् सम्प्रति आईआईआईटी, हैदराबाद से सम्बद्ध हैं।

आधुनिक विचारकों के साथ एक ऐसे व्यक्ति को श्रेणीबद्ध करना बहुत से लोगों को एक अन्तर्विरोध लग सकता है जिसने आधुनिकता की बाबत पूछे जाने पर एक व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट के साथ कहा हो कि यह एक दिलचस्प विचार है– 'इट इज एन इंटेरेस्टिंग आइडिया'। डॉ. राधाकृष्णन् की पुस्तक 'एन आइडियलिस्ट व्यू ऑफ लाइफ' के प्रकाशित होने पर सी.ई.एम. जोड ने उसे पश्चिम पूर्व का प्रत्याक्रमण कहा था। महात्मा गाँधी (1869-1948) के चिन्तन को भी हम इसी तर्ज पर 'आधुनिकता पर सनातनता का प्रत्याक्रमण' कह सकते हैं– बल्कि 'प्रत्याक्रमण' शब्द में ध्वनित हिंसा-भाव से बचने और गाँधीजी के विचारों की आत्मा को ठीक तरह से व्याख्यायित करने की दृष्टि से इसे 'आधुनिकता के सम्मुख सनातनता का सत्याग्रह' कहना अधिक संगत होगा।

'सत्य का आग्रह'– गाँधीजी के सम्पूर्ण चिन्तन और कर्म की केन्द्रीय विषयवस्तु है और यह 'सत्य' कोई जटिल दार्शनिक अवधारणा नहीं है – क्योंकि गाँधीजी शास्त्रीय दार्शनिक पद्धतियों की अधिक चिन्ता नहीं करते थे – बल्कि एक सीधी-सादी व्यावहारिक बात है। जब गाँधीजी 'ईश्वर सत्य है' की बजाय 'सत्य ईश्वर है' कहते हैं तब भी वह किसी दार्शनिक बहस में उलझने की बजाय एक आध्यात्मिक ईश्वरानुभूति के व्यावहारिक रूप पर ही, उसके कर्मपक्ष पर ही जोर देना चाहते हैं क्योंकि उनके लिए कर्म या व्यवहार ही चिन्तन और अनुभूति का उत्स भी है और कसौटी या परख भी। इसी कारण जब महात्मा गाँधी अपने जीवन को 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' कहते हैं, तब वह प्रकारान्तर से ईश्वर-प्राप्ति के लिए उनकी अनवरत साधना हो जाती है क्योंकि उन्हीं के शब्दों में – 'ईश्वर की असंख्य परिभाषाएँ हैं, क्योंकि उसके रूप भी असंख्य हैं। वे मुझे विस्मय और भय से विह्वल कर देते हैं और पल भर के लिए मैं स्तम्भित हो जाता हूँ। पर मैं सत्य के रूप में ही ईश्वर की पूजा करता हूँ। मैं अभी तक उसे पा नहीं सका हूँ, अभी भी मुझे उसकी तलाश है।' लेकिन साथ ही वह यह भी जोड़ देते हैं, 'सत्य को पूर्णतः प्राप्त कर लेना अपने-आप को और अपनी नियति को उपलब्ध कर लेना है, अर्थात् सर्वसम्पूर्ण हो जाना है। मैं तो अपनी-अपनी अपूर्णताओं को जानता हूँ और इसी में मेरी सारी शक्ति निहित है।'

दार्शनिक जटिलताओं की बजाय ईश्वरत्व की अवधारणा अर्थात् सत्य की संकल्पना के व्यावहारिक पहलू पर आग्रह की ही वजह से गाँधीजी कहते हैं– 'मेरे लिए ईश्वर सत्य और प्रेम है, ईश्वर नीति और नैतिकता है, ईश्वर निर्भयता है, ईश्वर जीवन और आलोक का स्रोत है... ईश्वर अन्तरात्मा है।' और इस ईश्वर को पाने का एक ही उपाय है कि– 'उसे उसकी सृष्टि में देखा और उसके साथ एकाकार हुआ जाए।'

गाँधीजी के सत्य-चिन्तन का व्यावहारिक पहलू इसीलिए अहिंसा के रूप में अभिव्यक्ति पाता है क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि के साथ अहिंसात्मक मनोवृत्ति और आचरण ही हमें उसके साथ अर्थात् ईश्वर के साथ एक करता है। वह स्वयं कहते हैं– 'जब आप सत्य को ईश्वर-रूप में पाना चाहते हैं, तो एकमात्र अनिवार्य साधन प्रेम, अर्थात् अहिंसा है। और क्योंकि मैं मानता हूँ कि साधन और साध्य पर्यायवाची हैं, अतः मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि ईश्वर प्रेम है।'

गाँधीजी की ये दार्शनिक प्रस्थापनाएँ ही उनके सामाजिक चिन्तन का विन्यास करती हैं। सत्य अहिंसा के रूप में अभिव्यंजित होता है, अतः एक आदर्श समाज-व्यवस्था और उसके प्रत्येक व्यक्ति सदस्य के आचरण की कसौटी भी अहिंसा ही हो सकती है– स्थूल और नकारात्मक अर्थों में नहीं बल्कि सूक्ष्म और सकारात्मक अर्थों में। इसीलिए गाँधीजी किसी भी प्रकार की पराधीनता को– चाहे उसका रूप राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक या मनोवैज्ञानिक कुछ भी हो– अनुचित और अन्यायपूर्ण मानते हैं क्योंकि वह किसी-न-किसी प्रकार की हिंसा पर टिकी होती है और हिंसक मनोवृत्ति को बढ़ावा देती है। किसी भी प्रकार का राजनीतिक दमन, सामाजिक उत्पीड़न और आर्थिक शोषण –

चाहे वह मनुष्य का हो या प्रकृति का – गाँधीजी के अनुसार हिंसा के ही विभिन्न रूप हैं और इसीलिए वह उनके खिलाफ सत्याग्रह अर्थात् अहिंसा का आग्रह करते हैं। इसी कारण एक ओर गाँधीजी केन्द्रीकृत आर्थिक व्यवस्था और आधुनिक प्रौद्योगिकी को हिंसक मानकर त्यागने का आग्रह करते हैं क्योंकि वह अनिवार्यता मनुष्य और प्रकृति के अन्यायपूर्ण दोहन पर आधारित है तो दूसरी ओर केन्द्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था को भी हिंसक मानते हैं क्योंकि वह अनिवार्यतया नागरिक को राजतन्त्र के सम्मुख असहाय बनाती और उसकी स्वतन्त्रता का दमन करती है।

इसलिए यह स्वाभाविक है कि गाँधीजी एक ऐसी समाज-व्यवस्था की कल्पना करते हैं जिसमें सत्ता के किसी भी रूप का केन्द्रीकरण न हो क्योंकि केन्द्रीकरण अनिवार्यतः हिंसा की मनोवृत्ति को बढ़ाता है। इसीलिए गाँधीजी की समाज-व्यवस्था की आदर्श इकाई आत्म-निर्भर गाँव है – इसी को राजनीति और अर्थशास्त्र की भाषा में राजनीतिक और आर्थिक विकेन्द्रीकरण कहा जाता है। आत्म-निर्भर या स्वावलम्बी गाँव ही एक आत्मनिर्भर और अहिंसक राष्ट्र का आधार हो सकता है क्योंकि हिंसा की जरूरत भी तभी पड़ती है जब हम किसी अन्य पर अनिवार्यतया आश्रित हों। लेकिन जाहिर है कि एक अहिंसक समाज और आत्मनिर्भर गाँव के लिए हमें अहिंसक आचरण वाले आत्म-निर्भर या स्वावलम्बी व्यक्ति की आवश्यकता होगी।

एक अहिंसक समाज के लिए अहिंसक स्वावलम्बी व्यक्ति का निर्माण– गाँधीजी का सम्पूर्ण शिक्षा-दर्शन इसी उद्देश्य को विन्यस्त करता है। जिसे हम 'बुनियादी शिक्षा' या 'नयी तालीम' के नाम से जानते हैं, उसका प्रमुख उद्देश्य चिन्तन, अनुभूति और कर्म में एक अहिंसक व्यक्ति का निर्माण करना है। सामान्यतः बुनियादी शिक्षा को 'लर्निंग बाइ डूइंग' या 'करके सीखो' तक सीमित कर उसे कुछ दस्तकारियों आदि की शिक्षा मान लिया जाता है। निश्चय ही वह आजीविका-कौशल की भी शिक्षा है जो हर शिक्षा-पद्धति को निश्चय ही होना चाहिए– लेकिन उसका वास्तविक उद्देश्य एक ऐसे स्वावलम्बी व्यक्ति का निर्माण करना है जिसका अपने सम्पूर्ण परिवेश के साथ –प्राकृतिक और मानवीय दोनों तरह के परिवेश के साथ– अहिंसात्मक और सर्जनात्मक रिश्ता हो। गाँधीजी की शिक्षा-प्रक्रिया का उद्देश्य आत्मनिर्भर व्यक्ति का विकास है, अतः यह जरूरी है कि उसकी प्रक्रिया भी आत्मनिर्भर हो अर्थात् शिक्षार्थी की शिक्षा का व्यय-भार वह स्वयं उठा सके। साधन और साध्य यदि एक हैं तो आत्मनिर्भर व्यक्ति और समाज का साध्य निश्चित करने वाली शिक्षा को अपनी प्रक्रिया में भी अहिंसक और आत्मनिर्भर होना होगा।

गाँधीजी के शिक्षा-चिन्तन को आजकल आधुनिक प्रौद्योगिकी और जटिल विज्ञान से आकर्षित समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों और शिक्षाशास्त्रियों द्वारा एक खब्त की तरह ही लिया जाता है। बुनियादी शिक्षा के प्रयोग को व्यापक समाज के लिए असफल मान लिया गया है और अब केवल कुछ गाँधीवादी संस्थाओं द्वारा ही उसे एक कर्मकाण्ड की तरह किया जा रहा है– समाज में प्रचलित और स्वीकृत शिक्षा-संस्थाएँ सामान्य तौर पर उससे अपने को अलग ही रखे हुए हैं। लेकिन यहाँ यह विचारणीय है कि कोई भी शिक्षा-पद्धति तभी सफल हो सकती है जब हम उसकी पृष्ठभूमि में काम कर रहे तत्त्व-दर्शन और मूल्य-दर्शन के अनुरूप समाज-रचना करना चाहें। दुर्भाग्य से हम स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद जिस सामाजिक ढाँचे की ओर आकर्षित होते गये हैं, वह एक हिंसक मनोवृत्ति वाले समाज का ढाँचा है जो राज्यसत्ता और अर्थसत्ता के केन्द्रीकरण पर टिका है तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी पर आश्रित होने की वजह से प्रकृति और परिवेश के साथ मूलतः हिंसक मनोवृत्ति रखता तथा मनुष्य को असहाय बनाता और उसकी स्वनिर्भरता का दमन करता है। गाँधीजी के शिक्षा-चिन्तन की सार्थकता तभी समझ में आ सकती है जब हम एक अहिंसक और आत्मनिर्भर समाज और व्यक्ति के विकास का लक्ष्य सामने रखकर चलें और केवल शिक्षा-प्रक्रिया को ही नहीं, अपनी राजनीतिक-आर्थिक संस्थाओं और व्यवहार को भी तदनुसार रूपान्तरित करने का 'सत्याग्रह' करें। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री शुमाकर का यह कथन विचारणीय है कि 'हम दरअस्ल एक तत्त्वमीमांसीय रोग के शिकार हैं, इसलिए इसका इलाज भी तत्त्वमीमांसीय होना चाहिए।' गाँधीजी का चिन्तन हमारे इस रोग का सही निदान और इलाज बताता है और यह कहना शायद अब जरूरी नहीं है कि रोग के कारणों को मिटाये बिना कोई उपचार सफल नहीं हो सकता।

–सुधारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर

वैष्णव जन तो तैंने कहिए

वैष्णव जन तो तैंने कहिए
जे पीड़ पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये
मन अभिमाण न आणे रे।

सकल लोकमां सहुने वंदे,
निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन-निश्चल राखे,
धन धन जननी तेरी रे।

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी,
परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले,
पर धन नव घाले हाथ रे।

मोह माया व्यापे नहि जेने,
दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे,
रामनामशुं ताली लागी,
सकल तीरथ तेना तनमां रे।

धन लोभी ने कपट रहित छे,
काम क्रोध निवार्या रे,
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां
कुल एकोतेर तार्या रे।

–नरसी मेहता

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस

बापू स्मरण बजरिये हिंद स्वराज

❑ शुभू पटवा

राजस्थान के शीर्ष पत्रकारों एवं शिक्षाविदों में अग्रणी हैं – श्री शुभू पटवा। कई लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक एवं आकाशवाणी सहित देश के चोटी के समाचार पत्रों के संवाददाता रहे श्री पटवा पत्रकारिता को सत्य की अहिंसक लड़ाई मानते हैं। पर्यावरण जगत में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आपका नाम अत्यन्त श्रद्धा के साथ लिया जाता है। आपका लेखन बेमिसाल है। शासन एवं संगठनों द्वारा उच्च स्तर पर आप सम्मानित हुए हैं। आपने अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेकर देश-प्रदेश का मान बढ़ाया है। कई पुस्तकों के लेखक श्री पटवा की एक पुस्तक 'छोटे गाँव की बड़ी बात' (नेशनल बुक ट्रस्ट) का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। वर्तमान में आप राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर के अध्यक्ष एवं मासिक पत्रिका जैन भारती के मानद् सम्पादक हैं।

पहली अक्टूबर 2008 को **हिंद स्वराज** पर जब एक परिचर्चा बीकानेर में आयोजित हुई तो अधिकांश लोगों को सुखद आश्चर्य हुआ। वर्ष 2008 में एक ओर हिंद स्वराज को लिखे एक सौ साल पूरे हो रहे थे, तो ठीक इससे पहले वर्ष 2007 में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने दो अक्टूबर का दिन **अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस** घोषित किया था। बीकानेर की एक स्वैच्छिक संस्था बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति ने यह परिचर्चा आयोजित की थी। एक तरह से **हिंद स्वराज** पर निरन्तर चर्चाओं का सिलसिला इस क्षेत्र में बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति ने ही शुरु किया था। फिर वर्ष 2009 में यह सिलसिला बढ़ता चला गया। बीकानेर के अधिकांश युवजनों के लिए यह परिचर्चा नवीन जानकारियों से भरी थी और उनकी दिलचस्पी देखते ही बनती थी।

गाँधीजी ने लंदन से दक्षिणी अफ्रीका लौटते हुए संवाद की शैली में जो लिखा, वही हिंद स्वराज है। उन्होंने सन् 1909 में यह लिख दी थी। सन् 2009 इस पुस्तक का शताब्दी वर्ष था। तब हिंद स्वराज पर अलग-अलग स्तरों पर कई समूहों ने चर्चा की। कई विचारकों-चिंतकों ने हिंद स्वराज पर अपने-अपने भाष्य लिखे। यह सिलसिला आजाद भारत में रह-रहकर चलता ही रहा। सन् 1982 में **गांधियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्टडीज, वाराणसी** में हिंद स्वराज को लेकर एक सेमिनार आयोजित हुआ और इसके अलग-अलग पक्षों पर चर्चा की गई।

गाँधी के **ट्रस्टीशिप** सिद्धांत पर भी इसी तरह चर्चाएँ हुई हैं। देश और दुनिया के कई हिस्सों में होने वाली चर्चाओं का सार भी एक ही निकलता रहा है कि वर्तमान की विषमताओं, विसंगतियों से बचने के लिए गाँधी के सिवा कोई अन्य विकल्प नहीं है। एक ओर यह बात है और दूसरी तरफ हम यह भी साफ-साफ देख रहे हैं कि आजादी के बाद हमने गाँधी को अपनाया तो सही, छिटकाया नहीं– भारत की मुद्रा पर उनकी छवि अंकित की गई, डाक-टिकटों में वे सदा उपस्थित रहे, उनको हमने अपना **राष्ट्रपिता** कहा और पूजा, पर उनकी जीवन दृष्टि को कहीं दूर छिटका दिया कि वह पास ही न फटके।

खुद पंडित जवाहरलाल नेहरू जो देश के पहले प्रधानमंत्री और आधुनिक भारत के निर्माता कहलाए – हिंद स्वराज से उनका विमत रहा। गाँधी के जीवनकाल में ही उन्होंने हिंद स्वराज पर अपनी असहमति प्रकट कर दी थी। नतीजतन जो विकास आज हम देख रहे हैं, वह गाँधी के हिंद स्वराज में जो कुछ कहा गया है – वैसा विकास नहीं है। यह विकास वस्तुओं का विकास है, भौतिक विकास है। इस विकास की विषमता और विसंगतियों पर कुछ कहने की यहाँ आवश्यकता नहीं है। देश की आधी आबादी आज भी गरीबी से नीचे का जीवन बसर कर रही है। इतना ही जान लें हिंद स्वराज में सन् 1909 में महात्मा गाँधी ने जो कुछ लिखा, कोई तीस वर्ष बाद दिनांक 14 जुलाई 1938 में उन्होंने इस पर क्या कहा– इसे देखा जाना चाहिए। गाँधी सन् 1938 में कहते हैं– 'यह पुस्तक अगर आज मुझे फिर से लिखनी हो, तो कहीं-कहीं मैं उसकी भाषा (वर्तनी या वाक्य सुधार) बदलूँगा।' वे कहते हैं– 'मुझे इस पुस्तक में बताए हुए विचारों में कुछ भी फेरबदल करने का कुछ भी कारण नहीं मिला। इसे लिखने के बाद तीस साल मैंने अनेक आँधियों में बिताए हैं, पर फेरबदल का कोई कारण नहीं मिला।'

गाँधी ने सन् 1909 में लंदन से दक्षिण अफ्रीका जाते हुए इसे जहाज में ही लिख दी थी और उसका पहला असर दक्षिण अफ्रीका में रह रहे हिंदुस्तानियों पर उन्होंने देख लिया था। वे कहते हैं, 'दक्षिण अफ्रीका के हिंदुस्तानियों में जो 'सड़न' दाखिल होने वाली ही थी, उसे इस पुस्तक ने रोका था।' यह पुस्तक मात्र दस दिन (13 से 22 नवम्बर) में लिख दी थी। स्वयं गाँधी यह स्वीकार करते हैं कि यह पुस्तक (हिंद स्वराज) 'रस्किन' की किताब का सार है। रस्किन की **अन टु दिस लास्ट** महात्मा गाँधी ने सन् 1904 में पढ़ी थी और अपनी आत्मकथा में इसका जिक्र **एक पुस्तक का जादुई असर** जैसे मंतव्य से किया है।

हमारे समय के गाँधी-विचार के प्रखर विचारक श्री कांतिभाई शाह हिंद स्वराज को **गाँधी का मेनिफेस्टो** मानते हैं। वे इसे सर्वोदय का घोषणा पत्र भी कहते हैं, जबकि मान्यवर गोखले जी (गोपालकृष्ण गोखले) को यह एक अनगढ़ पुस्तक लगी और कहा कि हिंद (हिंदुस्तान) में एक साल रहने के बाद गाँधी खुद ही इस पुस्तक को नष्ट करेंगे।

गाँधी स्वयं इस पुस्तक के बारे में लिखते हैं कि 'इस पुस्तक में वर्णित विचारों में परिवर्तन करने का मुझे कोई कारण नहीं मिला। इसमें मैंने जो कुछ लिखा है उसकी सत्यता की पुष्टि मेरे अनुभवों से हुई है। उसमें विश्वास रखने वाला केवल मैं अकेला ही रह जाऊँ तो भी मुझे अफसोस नहीं होगा। सत्य को मैं जैसा देखता हूँ, वही मेरे लिए उसका प्रमाण है।'

हिंद स्वराज में यंत्रीकरण की अंधी दौड़ से लेकर स्वास्थ्य और चिकित्सा, वकील और अदालतें, शिक्षा, युद्ध और हथियार, अशांति और असंतोष जैसे मुद्दों पर एक नजर डाली गई है। कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं, बंग-भंग, इंग्लैंड की हालत क्या है सहित हिंदुस्तान की दशा पर भी विचार किया गया है। स्वराज्य क्या है और सभ्यता का दर्शन, सत्याग्रह जैसे बिन्दुओं पर भी गाँधी प्रकाश डालते हैं। जो बिन्दु हिंद स्वराज (नव जीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद ने जो हिंदी अनुवाद छापा है, उसमें पुस्तक का नाम **हिंद स्वराज्य** है, जबकि उसके बाद आए भाष्यों में यह **हिंद स्वराज** हो गया है – हम दोनों को ही सही मान सकते हैं) में उठे हैं, यहाँ उनकी गणना भर की गई है। यह बेहतर होगा कि यह पुस्तक पूरी पढ़ी जाए।

महात्मा गाँधी के सम्पूर्ण साहित्य में इस छोटी सी पुस्तक को **बीज ग्रंथ** माना गया है। नवजीवन से प्रकाशित यह पुस्तक मात्र 90-91 पृष्ठों की है। अलबत्ता इस छोटी सी पुस्तक के लिए यहाँ तक कहा गया है कि **कार्लमार्क्स का दास कैपिटल और गीता** जैसे महान ग्रंथों के लक्षणों को एक साथ दर्शाने वाला हिंद स्वराज है। महात्मा गाँधी के निकटतम सहयोगी रहे महादेव भाई देसाई (उनके सेक्रेटरी भी रहे) के पुत्र श्री नारायण देसाई (जो आज गाँधी कथा के माध्यम से दुनिया भर में गाँधी को जीवंत कर रहे हैं) कहते हैं – 'गीता की तरह संवाद शैली में लिखी गई, गीता की तरह ही आकार में छोटी इस पुस्तिका ने कैपिटल (दास कैपिटल, मार्क्स) की तरह जीवन के अनेक क्षेत्रों को समेट लिया है और उसी की तरह आँखें खोल दे, वैसा पृथक्करण भी उसमें है। गहराई से जाँच करने वाले को उसमें सागर जैसा गाम्भीर्य और हिमालय जैसा स्थैर्य मिलेगा।' नारायण भाई देसाई फिर आगे कहते हैं– **हिंद स्वराज भारत की संस्कृति का सार निकाल कर, आधुनिक युग का पृथक्करण करके उत्तर आधुनिक युग की ओर जाने का इशारा करने वाली पुस्तक है। सारी आधुनिक संस्कृति का विश्लेषण करने के बाद वह उसे चुनौती देती है तथा उसके विकल्प के रूप में प्राचीन मूल में से उगने वाली, परन्तु नव संस्करण प्राप्त करती उत्तर आधुनिक का सपना प्रस्तुत करती है। गाँधी का प्रयास हिंसा-परम्परा या विकृति को चुनौती देकर अहिंसक संस्कृति का आह्वान करने का है।**

श्री नारायण भाई देसाई के उपर्युक्त कथन से यह बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है कि महात्मा गाँधी अपनी इस पुस्तक में प्रकट इन विचारों के अनुरूप भारत का निर्माण चाहते थे और इस तरह सम्पूर्ण विश्व की छवि भी वे इसी तरह की गढ़ना चाहते थे।

गाँधी को यंत्रों का घोर विरोधी माना गया है और आज भी उनको यंत्र विरोधी कहते हुए यह भी कह दिया जाता है कि वे विकास विरोधी थे। दरअसल गाँधी को ठीक से न पढ़ने अथवा न समझने का ही यह प्रतिफल है कि उनको यंत्र विरोधी मान लिया जाता है। अन्यथा सन् 1924 में एक प्रसंग पर अपनी मनःस्थिति स्पष्ट करते हुए गाँधी ने साफ कहा है– 'मेरा विरोध यंत्रों के लिए नहीं है, बल्कि यंत्रों के पीछे जो पागलपन आज चल रहा है, उसके लिए है। आज जिन्हें मेहनत बचाने वाला यंत्र कहते हैं, उनके पीछे लोग पागल हो गए हैं।' वे कहते हैं– 'यंत्रों के उपयोग के पीछे जो प्रेरक कारण है, वह श्रम की बचत नहीं, बल्कि धन का लोभ है।' गाँधी के उक्त कथन को हम आज के संदर्भ में देखें। जो आर्थिक बेमेलपन या असंतुलन आज समाज में व्याप्त है, जो घोटाले और भ्रष्टाचार हमें आज दिखाई देता है – उससे गाँधी के इस कथन की ही पुष्टि होती है कि समाज में धन का लोभ बेइंतहा व्याप्त है।

महात्मा गाँधी कपड़ा सीने की मशीन का स्वागत करते हैं। वे कहते हैं – 'ऐसी मशीन बनाने वाले कारखानों का मालिक या तो राष्ट्र हो, या जनता की सरकार की ओर से ऐसे कारखाने चलें। उनकी हस्ती नफे के लिए नहीं बल्कि लोगों के भले के लिए हो।'

महात्मा गाँधी का यह उपर्युक्त कथन दो बातों की ओर संकेत कर रहा है। जब वे **जनता की सरकार** की बात कर रहे होते हैं, तो क्या ऐसी सरकार किसी दल विशेष की सरकार होती हैं? हमारा वर्तमान संसदीय लोकतंत्र बहुमत के आधार पर सरकार का निर्धारण करता है। जिसका संसद में बहुमत हो, भले मतदाता की कुल संख्या के अनुपात में वह दल (सत्तारूढ़ दल) अल्पमत ही क्यों न हो। जनता की सरकार से गाँधी का तात्पर्य क्या हो सकता है, एकदम स्पष्ट है।

अपने उपर्युक्त कथन में महात्मा गाँधी यह भी चाहते हैं कि ऐसे कारखाने नफे के लिए न हों, बल्कि लोगों के भले के लिए हों। इस कथन से हमें गाँधी का **ट्रष्टीशिप** का सिद्धान्त याद आता है। बेशक आज शायद ही कोई कारखाना ट्रष्टीशिप के आधार पर चलता हो, पर जहाँ भी कहीं ये चल रहे हों – वहाँ की स्थिति को हमें देखना चाहिए। ट्रष्टीशिप में नफा किसी एक का नहीं होता, सबकी भागीदारी होती है और एक मजदूर भी मालिक होता है, क्योंकि वह भी उस उद्योग का **भागीदार**, शेयर होल्डर होता है।

हिंद स्वराज मूलतः गुजराती में लिखा गया। हिंद स्वराज का दूसरा संस्करण भी गुजराती में ही सन् 1914 में दक्षिण अफ्रीका में ही प्रकाशित हुआ। फिर कई संस्करण निकले और तीखी आलोचनाएँ भी हुईं। सन् 1921 में इस पुस्तक के हिंदी अनुवाद की प्रस्तावना में महात्मा गाँधी ने लिखा – 'बारह साल के अनुभव के बाद भी मेरे विचार जैसे थे, वैसे ही रहे हैं। सन् 1921 में ही **यंग इंडिया** में हिंद स्वराज के बारे में फिर लिखा – 'यह पुस्तक 1909 में लिखी गई थी। मेरी जो प्रतीति उसमें प्रकट हुई है, यह आज पहले से अधिक दृढ़ हुई है।' इसी क्रम में सन् 1938 में एक अंग्रेजी मासिक **आर्यन पाथ** का 'हिंद स्वराज विशेषांक' प्रकाशित हुआ।

महात्मा गांधी की यह पुस्तक एक पुस्तक की शक्ल में आने से पहले लेखों के रूप में **इंडियन ओपीनियन** नामक साप्ताहिक में सिलसिलेवार भी छपे। फिर यह पुस्तक रूप में आई और बंबई (मुंबई) सरकार ने इसे जब्त भी किया। फिर गाँधी जी ने ही मि. कैलनबैक के लिए इसका अंग्रेजी अनुवाद भी किया। यह माना गया कि बंबई सरकार के जब्ती के आदेश के प्रतिरोध में भी यह अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया गया।

हिंद स्वराज पर आर्यन पाथ अंग्रेजी मासिक के विशेषांक में तत्समय के एक बड़े विचारक जॉन मिडल्टन मरी ने लिखा– 'मुझे लगता है कि आधुनिक समय में लिखे गए ग्रंथों में **हिंद स्वराज** सबसे महान ग्रंथ है। मैं उसे विश्व के महान आध्यात्मिक ग्रंथों में से एक मानता हूँ।' इसी क्रम में एक बड़े लेखक और साहित्यकार फोसेट कहते हैं – **'अगर जीवन का सर्जनात्मक हेतु सिद्ध करना हो तो हम सबके भीतर असल बुनियादी क्रांति की जरूरत है, हिंद स्वराज ऐसी यथार्थ बुनियादी क्रांति के लिए श्रेष्ठ आधुनिक मार्गदर्शिकाओं में से एक है।'** एक अन्य विचारक जिराल्ड हर्ड कहते हैं– 'कुछ ग्रंथ मात्र ग्रंथ नहीं, परन्तु महान कुदरती घटना जैसे होते हैं। हिंद स्वराज ऐसा ही एक ग्रंथ है। यह एक नए युग की, एक नूतन व्यवस्था के आरम्भ की पुस्तक है। मनुष्य बंधनों से मुक्ति चाहता था, परन्तु उस मुक्ति के लिए उसने हिंसा का ही आश्रय लिया – जिस हिंसा के मार्फत उसको बंधन में डाला गया था, उसी हिंसा का उपयोग कर उसने अपने बंधनों को तोड़कर दूसरों को बंधन में डाला। परिणामतः इन क्रांतियों में से प्रतिक्रांतियों का जन्म हुआ। मनुष्य के इतने परिश्रम के बाद भी नए जुल्मखोर सिंहासनारूढ़ हुए हैं। इस सत्य को आत्मसात करके गाँधी एक नई राह बताते हैं। अर्थात् **शुद्ध साधन के द्वारा ही शुद्ध साध्य प्राप्त हो सकता है।** अशुद्ध साधनों से अनिष्ट परिणाम ही आएंगे... अहिंसा एक नया दर्शन हमारे सामने खोल देती है। उसे अगर हम साकार कर सकेंगे तो दुनिया इस नए युग के पथ-दर्शक के रूप में गाँधी को हमेशा याद करेगी। गाँधी के प्रयोग में सारी दुनिया को रस है, रुचि है और उसका महत्त्व युगों तक कायम रहेगा।'

आज **हिंद स्वराज** के सामने आए सौ साल से अधिक समय गुजर गया है, पर कोई कहे कि इसका महत्व कम हो गया है, यह मुमकिन नहीं लगता। बेशक शासनाध्यक्षों ने अपनी रीति-नीति में **हिंद स्वराज** के बताए अनुसार कुछ नहीं किया, पर यह भी संभव न हो सका कि यह ग्रंथ चर्चा से बाहर कर दिया गया हो। सौ साल के बाद भी यदि **हिंद स्वराज** चर्चा में है, तो इसकी अहमियत सर्वसिद्ध हो जाती है।

गाँधी स्वयं ही कहते हैं – 'यह किताब द्वेष-धर्म की जगह प्रेम-धर्म सिखाती है, हिंसा के स्थान पर अहिंसा को रखती है, पशुबल की जगह टक्कर लेने के लिए आत्मबल को खड़ा करती है।'

इतना सब कुछ होते हुए भी आज विश्व जितना आक्रांत है, अब से पहले कभी रहा ? हमारे आज के समाज विज्ञानी इस सवाल का उत्तर **हिंद स्वराज** में यदि तलाश सकें तो देश व दुनिया को नई रोशनी मिल सकती है। दो अक्टूबर – अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का इतना अभीष्ट तो सामने आना ही चाहिए।

बीकानेर से वर्ष 2008 में शुरू हुई यह चर्चा वर्ष 2011 में भी जारी है, जब राज्य शिक्षा विभाग की शीर्षस्थ पत्रिका **शिविरा** मासिक का अक्टूबर 2011 का अंक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी पर केन्द्रित है और हिंद स्वराज पर उसमें चर्चा है। सही भी है कि गाँधी पर बात हो और हिंद स्वराज पर कुछ न कहा जाए तो बात अधूरी रहती है।

राजस्थान शासन के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का विद्यार्थी जीवन गाँधी-विनोबा की घुट्टी से शुरू हुआ है। राज्य का शिक्षा विभाग बीकानेर में है और परिस्थितियों की अनुकूलता का तकाज़ा है कि राज्य शिक्षा विभाग गाँधी और हिंद स्वराज पर कुछ ऐसा ठोस कार्य करे कि हिंसा और आतंकवाद, विषमता और असंतुलन तथा वैरभाव और वैमनस्य के बीज अंकुरित ही न हों। यह अंकुरण शुरुआती दौर में ही प्रमुखतः होता है और विद्या संस्थान वे स्थान हैं जहाँ आसानी से इन पर नियंत्रण हो सकता है। ऐसा कुछ हो, यह अपेक्षा स्वाभाविक है। बस।

–भीनासर-334403, बीकानेर

मेरी बहनों स्वराज लेना सहज है, ले लो

❑ इला र. भट्ट

गाँधीजी ने समझाया है कि धर्म और कर्म दोनों साथ-साथ ही चलने चाहिए। माला फेरते हुए भगवान का नाम लिया जा सकता हो तो कोई भी काम करते हुए क्यों नहीं लिया जा सकता ? 2000 वर्ष पुरानी बौद्ध, जैन, हिंदू परम्परा की विचारधारा में गाँधीजी एक बहुत बड़ा बदलाव यह लाये कि कर्म करते हुए धर्म बजाओ। कर्म कोई निजी मामला नहीं है लेकिन सामाजिक कार्य है। समाज के कर्मों का भोग व्यक्तियों को भुगतना पड़ता है यह कोई भाग्य की बात नहीं है। अफ्रीका की आधी जनता एच.आई.वी./एड्स का शिकार होकर मरे यह कोई उनका भाग्य नहीं है। सती प्रथा समाज का कर्म था। रोटरडेम में एक लाख लोग एक रात में मर जाएँ ये क्या कोई उनके ललाट पर लिखा हुआ कर्म था ? कोमल बच्चे को मजदूरी करने जाना पड़े यह उसका भाग्य नहीं है मेरे कर्म का तुम पर और तुम्हारे कर्म का प्रभाव मुझ पर पड़ता है, अच्छा या बुरा। अगर इतना हम समझ लें तो देश दुनिया को हम जिम्मेदारीपूर्वक चला सकते हैं। धर्म अगर जीवन में काम न आए तो उसका क्या उपयोग है? और कहते हैं कि मेरा धर्म अर्थशास्त्र में जाएगा, मेरा धर्म राजनीति में जाएगा, साहित्य शिक्षा, उद्योग-व्यापार सबमें जाएगा। गाँधीजी ने भले ही राजनीति की कलगी लगाई हो, पर मूलतः तो वे धार्मिक पुरुष ही थे। 'हिन्द स्वराज' में लौट-लौटकर उनकी धार्मिकता उभर आती है। वे हर विचार या कार्य को ईश्वर पर श्रद्धा के साथ करते हैं, विचार, कर्म, सुधार सबमें ईश्वर का ही ध्यान है। यह कैसा विरल संयोग था इस एक महापुरुष में।

❂❂❂

अहमदाबाद में सर चिनुभाई बारोट हरिजनों के लिए एक मंदिर बनवाकर उसका उद्घाटन करा रहे थे। उनकी इच्छा थी कि यह शुभ कार्य गाँधीजी के हाथों ही सम्पन्न हो लेकिन उन्हीं दिनों पेथिक लॉरेंस कमीशन हिंदुस्तान में आया हुआ था और गाँधीजी उसमें व्यस्त थे। इसलिए किसी को उम्मीद नहीं थी कि मंदिर के उद्घाटन में वे अहमदाबाद आ पाएँगे। लेकिन वे तो आए ! क्योंकि अस्पृश्यता निवारण तो स्वराज से पहले होना चाहिए। और स्वराजप्राप्ति के बाद सवर्ण लोग अगर इस काम को नहीं करेंगे तो? तब इस अवसर पर उन्होंने कहा था कि 'मूलतः तो मैं समाज सुधारक हूँ। गाँधीजी के लिए रचनात्मक काम पहले होता था, उसके बाद राजनीतिक मामले।

❂❂❂

स्त्रियों पर मेरी श्रद्धा क्यों बढ़ती जा रही है ? क्योंकि स्त्रियों द्वारा निर्मित परिवर्तन भिन्न होते हैं : विकास अधिक सुग्रंथित होते हैं। और फिर, परिवर्तन परिवार के स्तर पर होता है। स्त्रियाँ अधिक सहिष्णु, धैर्यवान, भारी परिश्रमी होती हैं और अपने हिस्से आने वाले काम को वे लेती हैं और फायदे को भी बाँटती हैं। परस्पर को सहारा देने की व्यवस्था भी स्त्रियाँ अपने आप जमा लेती हैं। कैसी भी मुसीबत में परिवार को टिकाए रखती हैं, इसीलिए घर बैठे मिलने वाले कामों को स्त्रियाँ अधिक पसंद करती हैं। इनकी इस लाचारी को समझकर उनका शोषण भी अधिक किया जाता है। इनके उत्पादन को बाज़ार चाहिए– स्थानीय और वैश्विक दोनों तरह के, उन्हें आर्थिक सुविधाएँ चाहिए, स्वास्थ्य की हिफाजत चाहिए, बाल-हिफाजत चाहिए, शिक्षा एवं तालीमें चाहिए। जिस समाज को वे पोषण देती हैं उसमें उन्हें अपनी आवाज़ चाहिए। अपनी गिनती चाहिए, इन स्त्रियों के वातावरण में शक्ति निवेश ही सही राष्ट्र निर्माण है, स्वराज है।

❂❂❂

गाँधीजी की दूसरी बात है, साधन-शुद्धि की। साधन-शुद्धि के बिना गाँधी की बात हो ही नहीं सकती। इससे पहले शायद किसी ने यह बात की ही नहीं होगी। सब यही मानकर चलते थे कि अच्छे काम के लिए बोले जाने वाले झूठ, हिंसा, विश्वासघात सभी कुछ क्षम्य है, उचित है क्योंकि हम जो कुछ भी करते हैं वह दुनिया के भले के लिए ही तो करते हैं। दुनिया जब से पैदा हुई है तब से यही विचार चला आ रहा है। यहाँ तक कि गीता में भी भगवान ने अर्जुन से कहा कि तुम्हारे दादा, काका, मामा, भाई, गुरु की हत्या करो। क्यों ? 'धर्म संस्थापनार्थाय।' परिणाम क्या आया? युद्ध के उन्नीसवें दिन सभी मर गये। ज़हर के वृक्ष पर अमृत के फल तो नहीं ही फल सकते न ! बबूल पर कैरी थोड़े ही फलने वाली है। सत्य तो सत्य से मिलेगा। गाँधीजी की सत्य की खोज से ही उनकी साधन-शुद्धि की बात प्रगट हुई होगी और इसका जोड़ तो दुनिया में कहीं है ही नहीं। उन्होंने क्रांतिकारी युवाओं से कहा 'भाई, बंदूक से अगर स्वराज लेंगे तो बंदूक वालों का ही राज आयेगा, लोगों का राज नहीं आयेगा।' लोकमान्य से भी उन्होंने यही कहा कि अगर राजनीति में सत्य नहीं आयेगा तो इसका अर्थ यह हुआ कि राजनीति तो असत्य की ही साक्षी है। राजकाज को क्या शैतान के हवाले करोगे ? सत्य और अहिंसा हर क्षेत्र में चलते हैं और चलने चाहिए। इसी का नाम तो है साधन-शुद्धि। यही तो जीवन रस है। *(हिंद स्वराज पर इला र. भट्ट के निबन्ध से साभार)*

गाँधीवाद के मूल मंत्र

दिल बदलो, दुनिया बदलेगी

❑ डॉ. के.के. पाठक

डॉ. के.के. पाठक भारतीय प्रशासनिक सेवा के अत्यन्त ऊर्जस्वी व गतिमान युवा अधिकारी हैं। आप उच्च कोटि के चिन्तक, लेखक एवं उद्भट विद्वान हैं। आपने लगभग दो दर्जन पुस्तकें लिखी हैं जिनमें धर्म की विज्ञान यात्रा (दो भाग), प्रेम : एक वैज्ञानिक अध्ययन, नकारात्मक सोच : महानता का सूत्र, गाँधीगिरी का मैनेजमेंट, गाँधीवाद और मार्क्सवाद, भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ, मृत्युपथ : अमृत की तलाश आदि प्रमुख हैं। आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में गाँधी जी के सहज ही में दर्शन होते हैं। अपनी प्रशासनिक कार्य कुशलता के लिए विख्यात डॉ. पाठक माध्यमिक शिक्षा निदेशक एवं शिविरा पत्रिका के प्रधान संपादक रहे हैं। वर्तमान में आप राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर में सचिव पद पर कार्यरत हैं।

हृदय-परिवर्तन का सिद्धांत गाँधी की समस्त प्रणाली व समस्त नैतिकता का आधार है। सबसे पहले हमने आत्म-परिवर्तन से व्यवस्था-परिवर्तन का संदर्भ लिया था। वह हमारा नारा था– 'हम बदलेंगे, जग बदलेगा'

यहाँ हमने हृदय-परिवर्तन से व्यवस्था परिवर्तन का सिद्धांत लिया है, अतः हमारा नारा है– 'दिल बदलेंगे, दुनिया बदलेगी।'

जो आज मानवता और नैतिकता के विरुद्ध हैं, उन्हें नष्ट करना सही समाधान नहीं हो सकता। समाधान तो यह है कि जिनके भी भीतर अमानवता और अनैतिकता है, उनके इस भाव को नष्ट किया जाए। पाप और अपराध तो रक्तबीज हैं। हम एक ओर से नष्ट करते हैं, दूसरी ओर से ये पनपते जाते हैं।

अपराध के सम्बन्ध में दण्ड के तीन सिद्धांत माने जाते हैं– प्रतिशोधात्मक, निवारणात्मक तथा सुधारात्मक। गाँधी का बल सुधारात्मकता पर है। राम ने रावण की हत्या की, इससे रावणत्व समाप्त नहीं होता। कृष्ण ने कंस का वध किया, इससे कंसत्व तिरोहित नहीं होता। संभव है उनका प्रभाव या उससे उत्पन्न भय बहुत दिनों तक ऐसे राक्षसत्व को न पनपने दें, किन्तु जब भी नैतिकता की बात आएगी, प्रतिशोध की बजाय सुधार का सिद्धांत ही शिखर पर होगा।

गाँधी ने सत्याग्रह को दुधारी तलवार भी बतलाया है और दोहरी गुणकारी प्रणाली भी। यह हमें तो शुद्ध करता ही है, क्योंकि हम स्वयं नैतिकता के लिए नैतिक आचरण कर रहे होते हैं। इसके साथ ही यह अपने विरोधी को भी शुद्ध करता है क्योंकि उसकी अनैतिकता को हम नैतिकता से हटा रहे होते हैं। इसमें दोनों का हृदय-परिवर्तन होता है।

मुझे एक कथा याद आती है– एक व्यक्ति किसी ज्योतिषी के पास गया। ज्योतिषी ने उसके हाथ और कुंडली को देखकर बतलाया कि उसका भाग्य अच्छा नहीं है। इस कारण उसे अपने कर्म का समुचित फल या यश नहीं प्राप्त होगा।

व्यक्ति दुःखी तो हुआ, किन्तु उसने सहमति में सिर हिलाया। उसने कहा– 'आपने बिल्कुल सच कहा। दुनिया में तमाम लोग हैं, जो कई बार कुछ किए बिना ही नाम और दाम पाते रहते हैं और एक मैं हूँ जो अपने ही परिश्रम व पारितोषिक नहीं पाता, अपने ही उपकारों का यश नहीं ले पाता। महाराज ! आप तो ये बताएँ मुझे क्या करना चाहिए ?'

व्यक्ति ने सोचा कि ज्योतिषी कुछ रत्नधारण करने के लिए कहेगा या फिर कुछ टोने-टोटके या कर्मकाण्ड कराने के लिए सलाह देगा। मगर ज्योतिषी थोड़ा फकीरी स्वभाव का निकला, उसने कहा– 'बेटा ! नियति या भाग्य पर किसी का वश नहीं चलता। ये पत्थर और टोटके भी धरे के धरे रह जाते हैं और नियति अपना काम करती जाती है।'

व्यक्ति अब और दुःखी हुआ। उसने पूछा– 'तो महाराज ! मेरे दुर्भाग्य का कोई निदान नहीं है ?'

ज्योतिषी ने थोड़ा सोचकर कहा– 'है बेटा ! निदान सरल भी है और कठिन भी।'

व्यक्ति ने उत्कंठा के साथ पूछा– 'महाराज ! आप तो मार्ग बताएँ। चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो, मैं ज़रूर अपनाऊँगा।'

ज्योतिषी ने उत्तर दिया– 'तो फिर आज से एक काम करना शुरू कर दो। तुम आज से अपने मन में बुरे विचार लाना बन्द कर दो। तुम न अपने विषय में बुरा सोचो, न ही दूसरों के विषय में। फिर देखना बस तेरा भला ही होगा।'

कहते हैं कि उस व्यक्ति का वाकई भाग्य बदल गया। उसे कर्मों का श्रेय ही नहीं, उससे बढ़कर सम्मान भी मिलने लगा।

यह बात हम सभी पर लागू होती है। गाँधी के तीन बन्दर दरअसल यही उपदेश देते हैं– न हम बुरा देखें, न हम बुरा बोलें, न हम बुरा सुनें और इसके आगे यह कि हम बुरा सोचें भी नहीं।

अभी तो हम औंधे घड़े हैं। वर्षा होती है और हम रीते के रीते रह जाते हैं। जिस दिन भीतर पवित्रता आती है पात्रता अपने आप विकसित हो जाती है। फिर तो हममें पड़ने वाली ओस की बूँद भी अमृत की बूँद बन जाती है।

हृदय परिवर्तन से जगत् परिवर्तन के सम्बन्ध में एक और प्रसिद्ध कथा स्मरण हो आई है–

चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस के समय की बात है। चीनी सम्राट कन्फ्यूशियस से सलाह लेने

पहुँचे। उन्होंने पूछा कि दक्षिणी चीन की जनजातियाँ उनका आधिपत्य नहीं स्वीकार कर रही है। वे ऐसा क्या करें, जिससे वे अधीन हो जाएँ। सम्राट जानना चाहते थे कि उन्हें अपनी सेना किस प्रकार नियोजित और सुगठित करनी चाहिए, जिससे जनजातियों के विद्रोह को दमित किया जा सके।

कन्फ्यूशियस ने अप्रत्याशित उत्तर दिया। उसने कहा– 'महाराज ! आपने जो सेनाएँ जनजातियों के विरुद्ध लगा रखी हैं, उन्हें समाप्त कर दीजिए। उन पर और उस क्षेत्र में होने वाले शस्त्रों तथा सैन्य अभियानों पर जो व्यय होता है उसे आप जनजातियों के कल्याण पर खर्च कर दीजिए। फिर देखिएगा, वे स्वयं ही आपका प्रभुत्व स्वीकार कर लेंगी। अगर इन जनजातियों के क्षेत्रीय मुखिया विरोध भी करेंगे, तो जनता स्वयं उनके खिलाफ हो जाएगी।'

कन्फ्यूशियस सही था। संसार को बदलने का सरलतम मार्ग यही है। यह मानवीय स्वभाव है कि वह प्रेम और आदर्श के लिए अपना बहुत कुछ न्यौछावर करने को तत्पर हो जाता है। हृदय परिवर्तन से जगत परिवर्तन में आदर्श की उदात्तता भी है और प्रेम की गहनता भी।

चीन में तीरंदाजी की कला अपने शिखर पर पहुँची है। वहाँ तीरंदाज जब निशाना साधते थे, तब तीर के पथभ्रष्ट होने से बचने के लिए कन्फ्यूशियस का यह वचन लिख देते थे– 'भ्रष्ट विचार मत रखो।' जिस समय मन में गलत विचार आए, उसे फिर बाहर जाने दो, संजोकर मत रखो अन्यथा वह हमें पथभ्रष्ट कर ही जाएगा, लक्ष्य से भटका ही जाएगा।

दिल भी तीर चलाता है और सहता भी है। वह जितना साफ होगा, उतना सुरक्षित होगा, जितना पारदर्शी होगा, उतना प्रभावी होगा। हृदय को सरल रखना उसके सफल होने की पूर्वपीठिका है। जीसस ने कहा था– 'धन्य हैं वे लोग जिनके हृदय शिशुवत हैं। जो सरल हैं।'

हम जब बाल सुलभता नहीं लाते, तब भी बचकानापन तो कर ही रहे होते हैं। हमें स्वयं नहीं पता होगा कि हम क्या ओछापन कर रहे हैं, क्योंकि तब हम निरर्थक चीजों को ही मूल्यवान समझकर बैठे होते हैं।

गाँधी के अनुसार दिल और दुनिया को बदलने के लिए हमें सात महापापों से मुक्त होना होगा– 1. श्रम के बिना संपदा, 2. अंतर्विवेक के बिना ज्ञान, 3. चरित्र के बिना ज्ञान, 4. नैतिकता के बिना व्यवसाय, 5. मानवता के बिना विज्ञान, 6. त्याग के बिना पूजा, 7. सिद्धांत के बिना राजनीति।

इन सातों पापों से मुक्ति व्यष्टि एवं समष्टि को एकीकृत करा देती है। यहाँ व्यक्ति भी अच्छा बनता है और विश्व भी।

समाजवाद का बल विश्व को बदलने पर है। उसके अनुसार समाज के बदलते ही व्यक्ति स्वयं बदल जाएगा। समाजवाद का अपना अर्द्धसत्य है, इसलिए वह सफल होकर भी असफल है।

धर्म का बल व्यक्ति को बदलने पर है। वह स्वप्न देखता है कि व्यक्ति बदल गए, तो विश्व बदल ही जाएगा। उसका भी अपना अर्द्धसत्य है, इसलिए वह भी जितना सफल है उतना ही असफल भी है।

गाँधी व्यावहारिक आदर्शवादी हैं, इसलिए वे दोनों पर बल देते हैं। फिर भी उनका बल व्यक्ति पर है। वे मानते हैं– मानस बदलना पहले जरूरी है, तभी जाकर मानव बदलेगा।

हम जिस पूँजीवादी युग में जी रहे हैं वहाँ व्यक्ति प्रधान है। व्यवस्था ने स्वयं ही चाभी व्यक्ति के हाथ में दे दी है। समस्या यह है हम इसका बदलाव मस्तिष्क से लाना चाह रहे हैं, हृदय से नहीं। ब्लेजी पास्कल ने कहा था– 'हृदय के अपने तर्क हैं, जिसके बारे में मस्तिष्क को नहीं पता।'

सही है। हृदय की सुनने का तात्पर्य भावना के आवेग में बहना नहीं है। वह तो उसकी दुर्बलता होगी। हृदय को स्वच्छ करते ही हममें मस्तिष्क की श्रेष्ठ क्षमताएँ प्रतिध्वनित होने लगती हैं। सच तो यह है कि हृदय के पास सोचने की क्षमता होती ही नहीं, उसका कार्य तो रक्त शुद्ध करना और उसकी आपूर्ति करना है। जैसे ही हम भावनात्मक रूप से शुद्ध होते हैं, हमारे मस्तिष्क की ही सुषुप्त शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं। तब हमें विश्वमस्तिष्क सही दिशा में जाने के स्पष्ट संकेत देने लगता है। हमारे निर्णय सटीक होने लगते हैं, हमारे प्रयास सफल होने लगते हैं।

❑❑❑

'न दैन्यं, न पलायनं'

गाँधी ने आजादी का एक नया हथियार अपनाया - सत्याग्रह। यह शब्द थोड़ा घिस गया है; इसलिए इस आलेख का नाम रखा– 'न दैन्यं न पलायनं।'

यह शब्द संस्कृत के किसी प्रसिद्ध ग्रन्थ का है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं। कभी अटल बिहारी वाजपेयी के भाषण या प्रचार में यह शब्द सुना था। वाजपेयी जी विद्वान हैं पर मुझे यकीन कम है कि उन्होंने यह वाक्य स्वयं गढ़ा हो। इसका भावार्थ है– *'मैं न दैन्य (दीनता) दिखलाऊँ,/न ही पलायन करूँ/अर्थात् मैं साहसपूर्वक सामना करूँ।'*

मेरे विचार से उक्त उक्ति भी गाँधी सत्याग्रह का आदर्शवाक्य बन सकती है। बशर्ते उसमें यह वाक्य भी जोड़ दिया जाए–

'पुरः सैन्यं वा प्राणसंकटं,
न दैन्यं न पलायनं॥'

सत्याग्रह अभय का मार्ग है– सामने सैन्यबल हो या प्राणभय हो, हम न तो याचना करेंगे, न ही पलायन करेंगे। इस सम्बन्ध में कहीं श्याम नारायण पाण्डेय की लिखी कविता स्मरण हो आती है–

सामने पहाड़ हो,
सिंह की दहाड़ हो,
काँप रहा हाड़ हो,
तुम अमर रुको नहीं
तुम निडर झुको नहीं।

लेकिन यह शौर्यभाव किसके लिए? इस साहसिकता का लक्ष्य क्या है? गाँधी ने सत्याग्रह नाम दिया था। पहले मगनलाल गाँधी ने 'सदाग्रह' शब्द सुझाया था, किन्तु वह आध्यात्मिक शब्दावली की तरह प्रतीत होता था। गाँधी इस विषय में टालस्टॉय के 'निष्क्रिय प्रतिरोध' (Passive Resistance) के सिद्धांत तथा थोरो के 'सविनय अवज्ञा' (Civil Disobidience) के सिद्धांत से प्रेरित व प्रभावित अवश्य थे, किन्तु एक प्रणाली के रूप में संभवतः वे इसके प्रथम व्यवस्थित प्रयोक्ता थे।

गाँधी ने नाम सत्याग्रह भले ही रखा, परन्तु ठीक से देखें तो यह उस समय की स्थिति में न्यायग्रह था, जिसका मार्ग 'सत्य और अहिंसा' से होकर जाता था। 'न्याय' के आग्रह का तात्पर्य क्या था? वह था स्वतंत्रता

और समानता का आग्रह।

सच कहें तो यह आग्रह केवल अंग्रेजों के ख़िलाफ़ आज़ादी की लड़ाई के साथ खत्म होने वाला नहीं था। यह जंग तो आज भी जारी है।

दुःखद यह है कि आम आदमी के लिए भी आज यह निरर्थक सा हो गया है, सम्पन्न-संभ्रांत वर्ग के लिए तो यह वाग्विलास से अधिक था भी नहीं। हाँ, आज कोई उद्योग नहीं चलता, कोई माँग नही मानी जाती, तो अनेक लोग धरने-अनशन-हड़ताल पर ज़रूर बैठ जाते हैं।

सच कहें, तो ऐसे सत्याग्रह में प्रायः सच को लेकर लड़ाई कम ही लड़ी जाती है। आज हम संघ के लिए लड़ते हैं, समाज के लिए नहीं। सबकी यूनियन बनी हुई है और सभी विशेषाधिकार चाहते हैं। अगर वे सत्याग्रह भी अपनाते हैं तो यह उनका प्रायः कर्महीन योग होता है। वह लड़ाई है– काम से बचने और अधिकाधिक दाम पाने की लड़ाई।

अधिकारों की लड़ाई उचित है, परन्तु कर्तव्यों को भुलाकर लड़ी जाने वाली लड़ाई अंततः असत्याग्रह की ओर जाने के लिए अभिशप्त है। शायद मार्क्सवाद ने इसकी अवहेलना की, जिसकी चरम परिणति आज के नक्सलवाद और आतंकवाद में देखी जा सकती है।

सच कहें, तो सत्याग्रह की लड़ाई शासक और शासित दोनों के समान हितों की लड़ाई है। जिस दिन दोनों समझ जाएँगे कि दोनों के हितवर्द्धन में ही उनका हित है उस दिन शायद सत्याग्रह की आवश्यकता ही न रहे।

आज एक उद्योग में प्रबंधक पाँच लाख रुपये मासिक पा रहा होता है वहीं उसका श्रमिक पाँच हजार रुपये मासिक पर जी रहा होता है। कहने के लिए उद्योगपति और प्रबंधक को यह लाभ इसलिए दिया जाता है ताकि कुशल प्रबंधक मिल सकें और वे अधिक प्रेरणा से कार्य कर सकें। अभी जब यूरोप और अमेरिका में आर्थिक मंदी छाई थी, तब सिंगापुर के राष्ट्रपति भारत आए थे। उस समय भारतीय वित्त मंत्री ने नौकरियों में कटौती कर रही कंपनियों से कहा था– 'आप वेतन में कटौती कर लें, मगर नौकरियों में कटौती न करें।' सिंगापुर के राष्ट्रपति का बयान था– 'अगर मूँगफली बाँटोगे, तो बन्दर ही आएँगे।' उनके लिए एक लाख रु. के वेतन को काटकर पचास हजार करने का मतलब मूँगफली देने जितना था। उन्हें नहीं पता कि इतने वेतन में भी भारत में दस-बीस परिवार पलते हैं।

दरअसल यह पूँजीवादी और विलासितावादी सोच है। श्रमिक को कम वेतन इसलिए जरूरी है, ताकि वह काम कर सके। प्रबंधक को भी अधिक वेतन इसलिए जरूरी है ताकि वह काम कर सके। दो लोगों के लिए दो मानदण्ड हो सकते हैं, किन्तु उनका इतना विपरीत होना जरूरी नहीं है।

सभी जानते हैं– सापेक्षिक वंचना का भाव संघर्ष को जन्म देता है। अगर हम समानता नहीं लाना चाहते तो कम से कम न्यायोचित समानता का भाव तो लाएँ ही। तब हम पाएँगे कि जो लोग कल तक हमारे खिलाफ खड़े थे वे ही अब हमारे साथ खड़े हैं।

सत्याग्रह का सरल सा सिद्धांत है–

'सच के लिए लड़ें, सच के साथ लड़ें।'

हमारी दुनिया की एक अजीब विडम्बना है। जो लोग सच की राह चाहते हैं, वे लड़ना नहीं जानते और जो लड़ना जानते हैं, वे सच की राह चलना नहीं जानते। बर्ट्रेंड रसेल का एक प्रसिद्ध लेख है– 'The harm, that the good men do' अर्थात् अच्छे लोग जो क्षति पहुँचाते हैं उनका तर्क है कि कुछ नुकसान ऐसे हैं जो अच्छे लोगों द्वारा किए जाते हैं। उनके अनुसार अच्छे लोग प्रायः बुरी जगह जाना बन्द कर देते हैं, बुराई के खिलाफ लड़ना बंद कर देते हैं, फलतः बुराई अमिट हो जाती है, क्योंकि वह बुरे लोगों का अभ्यारण्य बन जाती है।

गाँधी ने सत्य के संघर्ष को अहिंसा का संघर्ष बना दिया। वे न्याय की लड़ाई को एक नई राह पर लाए। राजनीति के क्षेत्र में यह एक नई रणनीति थी– अहिंसक युद्ध की रणनीति।

यह कुछ ऐसा था कि लड़ने वाला लड़े भी और विरोधी को यह भी लगे कि वह लड़ नहीं रहा है। अब यह लड़ाई बाहर के धरातल से आगे अंतस् के धरातल पर चलने लगती है। वह लड़ने की बजाय सोचने पर मजबूर हो जाता है। जो ऊर्जा वह बाहर शारीरिक या यांत्रिक रूप से लड़ने में लगाता वह भीतर मानसिक और भावनात्मक रूप से सोचने में लगाता।

यह एक अद्भुत रसायन है। फिर विरोधी भी भीतर ही भीतर बदलने लगता है। उसे स्वयं पर शर्म आने लगती है, क्योंकि दूसरा व्यक्ति उसे अपनी महानता से जीत रहा होता है। तब पहली बार लगता है कि सच की राह पर चलने वाला लड़ना ही नहीं जानते, बल्कि केवल वही सही लड़ाई लड़ना जानते हैं। तब पहली बार 'सत्यमेव जयते' चरितार्थ होता दिखता है।

युद्ध के सामान्य नियम क्या होते हैं–

'हमला करो। जरूरत पड़े तो छिपकर भी हमला करो।
संकट पड़े तो भाग भी लो।'

अहिंसक युद्ध में ये तीनों नियम बदल गए–

'कोई हमला न करो, सत्याग्रह करो।
सदा सामने रहकर सत्याग्रह करो।
संकट पड़े तब भी पलायन न करो।'

ऐसे संघर्ष के अदम्य साहस चाहिए, अटूट संकल्प शक्ति चाहिए। सच कहें तो यह पूरा संग्राम ही मानसिक स्तर पर लड़ा जाता है। अज्ञेय ने 'शेखर : एक जीवनी' में कहा है– 'बाहर की लड़ाई लड़ने से पहले हमें एक भीतर की लड़ाई लड़नी पड़ती है।' यह तो प्रत्येक संघर्ष का हिस्सा है, मगर सत्याग्रह इसे ही सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बना देता है।

जीवन स्वयं एक संघर्ष है। मार्क्स के शब्दों में सारा संसार व इतिहास ही वर्ग संघर्ष का इतिहास है, किन्तु इस संघर्ष में भी एक विकास है। हम जिन्हें विरोधी मानते हैं, वे भी उच्चतर सोपान में समन्वित हो जाते हैं। वहाँ पक्ष और प्रतिपक्ष मिलकर संपक्ष बन जाते हैं।

गाँधी संपक्ष की ओर ले जाते हैं, मगर उनका बल संघर्ष से अधिक सौहार्द्र पर है, इसी कारण उनके संघर्ष में एक उत्कर्ष है– आंतरिक भी, बाह्य भी।

सत्याग्रही के लिए विरोधी भी विरोधी नहीं होता। वह कृष्ण की तरह कौरवों और पाण्डवों में समान रूप से बँटा होता है किन्तु सदा राम मर्यादा अपनाता है, वह भी युद्ध की राह पर चलकर। एक पुरानी फिल्म है– 'जिस देश में गंगा बहती है।' राजकपूर की यह फिल्म सत्य के दोनों पक्षों में समान रूप से बँटे होने की सुन्दर गाथा है। इसमें राजकपूर ने पुलिस और डाकुओं दोनों का साथ देते दिखाया गया है। ऐसे दोहरे चरित्र प्रायः

खलनायकीय रूप प्राप्त कर लेते हैं, किन्तु वहाँ वह महानायकीय रूप प्राप्त कर लेता है।

गाँधी भी इसी तरह दो स्तरों पर विभक्त हो जाते हैं। अंग्रेजों से उनकी लड़ाई है, अगर जब अंग्रेज किसी और से लड़ाई लड़ रहे होते हैं तब वे अंग्रेजों के साथ होते हैं। वे जान रहे होते हैं कि अंग्रेज हार गए, तो जो दूसरा आएगा वह और भी बर्बर होगा और भी अत्याचारी होगा। अंग्रेज स्वयं उपनिवेशवादी थे, मगर तब वे साम्राज्यवादी शक्तियों से लड़ रहे थे।

जिन्दगी में भी हमारा वास्ता प्रायः पूर्ण सत्य और पूर्ण असत्य से नहीं होता, अपितु अल्प सत्य और अधिक सत्य से होता है। इन दो मिश्रित सत्यों में हम अधिक अनुपात वाले का साथ दे रहे होते हैं।

सत्याग्रह की लड़ाई का रोचक पहलू तो यह है कि यह प्रतिकार करना जानता है, प्रतिशोध लेना नहीं जानता। हज़रत मुहम्मद के जीवन की गाथा है। किसी युद्ध में उनकी तलवार दुश्मन की गर्दन पर थी। दुश्मन ने उन पर थूक दिया। मुहम्मद साहब चाहते तो उसकी जान ले सकते थे, किन्तु उन्होंने उस समय वहाँ से तलवार हटा ली। उन्होंने कहा– अगर इस समय मैंने तुम्हारी हत्या की, तो यह युद्ध किसी सार्वजनिक लक्ष्य की बजाय व्यक्तिगत प्रतिशोध का बन जाएगा। फिर यह पाप बन जाएगा।

सत्याग्रह इसी भाषा में सोचता है, किन्तु वह तो तलवार वाले के सामने भी तलवार नहीं उठाता, अपनी गर्दन आगे कर देता है। शत्रु यदि बर्बर होकर ऐसी गर्दन काट भी दे, तो वह सिर उठाकर नहीं, सिर झुकाकर ही इसे जीत का नाम देगा।

जीवन के रण में संसार ने युद्ध व अस्त्रों के अनेक रूप देखे हैं। जब मनुष्य आहार संग्राहक युग से शिकारी युग में पहुँचा तब उसने पत्थर के हथियार बनाए। उसी वन्य युग के शिखर पर उसने तीर-धनुष से युद्ध लड़े। फिर राजतंत्रों के युग में तलवार उसकी निर्णायक हथियार बनी। फिर बारूद की खोज हुई और उसने आग्नेयास्त्र बनाने में कुशलता हासिल की। बंदूकों ने तोपों और तोपों ने आधुनिक टैंकों का रूप ले लिया। फिर परमाणु बम भी बने। भौतिकीय युद्धों से आगे बढ़कर हमने रासायनिक और जैविक युद्ध के लिए भी क्रमशः रासायनिक व जैविक हथियार तैयार कर लिए हैं।

ये सभी अस्त्र-शस्त्र युद्ध में विध्वंसक भी रहे हैं और सफल भी। मगर गाँधी ने पहली बार सृजनात्मक और अहिंसात्मक युद्ध का प्रचलन किया। उनके हाथ में भी लाठी थी, मगर उन्होंने चरखे से लड़ाई लड़ी। उनकी खादी आज़ादी का हथियार बन गई।

हम कारखानों और कार्यालयों में काम करते हैं, वहाँ कलम और कागज भी हथियार हैं, मजदूर के औजार और किसान के हल-बैल भी हथियार हैं। हमें अपने इन उपकरणों का मूल्य समझना होगा। हमें चुनना होगा कि जीवन के इस नए संघर्ष में हमारे लिए वह कौन सा उपकरण उपयुक्त होगा, जो वार से प्रभावित तो करे, मगर धार से आहत न करे। हमें वह हथियार चाहिए, जिसमें आत्मा बसती हो, जिसमें अपनापन बसता हो।

❑❑❑

माँगे सबकी खैर

गाँधी ने सर्वोदय की अवधारणा दी। वे इसका श्रेय जॉन रस्किन को देते हैं। उनकी लिखी पुस्तक "Unto this Last" से गाँधी इतने प्रभावित हुए कि जो काम रस्किन अपने दर्शन से सोच भी न सके थे, वह गाँधी ने कर दिखाया।

सर्वोदय एक ऐसी दुनिया में जन्मा था, जहाँ लोकतंत्र का संघर्ष चल रहा था और लोकतंत्र का नारा है– बहुमत का शासन। गाँधी इस नारे के भीतर की विसंगति को समझ चुके थे। वे जानते थे कि बहुमत सदा सही नहीं होता और ऐसा प्रायः हो सकता है कि बहुमत के शासन में अल्पमत की आवाज़ न केवल अनसुनी कर दी जाए, बल्कि उसे दमित भी कर दिया जाए। एक प्रसिद्ध इतालवी विचारक था – विल्फ्रेडो परेटो। उसने अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, प्रबंधन, प्रशासन इत्यादि तमाम क्षेत्रों में सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं। उसका एक राजनीति विषयक सिद्धान्त है – ''अल्पतंत्र का लौह नियम।'' वह कहता है कि कहीं भी बहुमत मात्र एक छलावा है, वास्तविक रूप से राज तो अल्पतंत्र ही करता है। उसने पूरी दुनिया के समाजों और शासनों से दृष्टांत दिए। अब बात और भी उल्टी हो जाती है। बहुमत भी वस्तुतः अल्पमत ही होता है। इसका तात्पर्य यह है कि अगर बहुमत का शासन माना भी जाए, तो भी आधे से अधिक जनता तो सत्ता के हाशिए पर ही रहती है। ऐसे में बहुमत के विरुद्ध गाँधी का आरोप गलत न होकर और अधिक सही हो जाता है।

सर्वोदय क्या कहता है ? वह कहता है कि जब तक सभी लोगों का विकास न हो, समझो कि तुम्हारी नीति और दिशा सही है ही नहीं।

सिद्धान्ततः सबके हित की कामना सरल है, मगर व्यवहारतः उसके लिए प्रणाली ढूँढ़ना कठिन है। गाँधी इसका रास्ता अन्त्योदय बताते हैं। हमें सर्वाधिक वंचित तबके के चेहरे पर खुशी लानी होगी, उसके हित के विषय में सोचना होगा।

हम सभी अपनी ज़िन्दगी में बहुत कुछ करते हैं और उसमें से कुछ दूसरों की ज़िन्दगी के लिए भी करते हैं। मगर हमें लगता है कि हमने अपने लिए कुछ कम ही किया और दूसरों के लिए बहुत कुछ कर दिया। खास तौर पर सार्वजनिक सेवा से जुड़े लोगों में ऐसा अहंकार कुछ अधिक ही हो जाता है। गाँधी जी ने इससे बचने के लिए एक बड़ा अच्छा जन्तर दिया है। उन्होंने कहा है – जब हमें लगे कि हमारा अहंकार हम पर हावी हो रहा है, तब हम उस आखिरी पंक्ति में बैठे व्यक्ति का चेहरा देखने की कोशिश करें कि क्या उसके चेहरे पर मुस्कान आई। और तब हम पाएँगे कि हमारा अहंकार शीघ्र ही विलीन हो रहा है।''

हम अगर आखिरी आदमी की फिक्र न करेंगे तो कौन करेगा ? अगर हम आप इस पृथ्वी पर हैं, तो इसमें अनगिनत कारकों और व्यक्तियों की भूमिका है और यह सामान्य बात है कि हम सब देखकर भी अनजान बने रहते हैं। मगर दुःखद क्या है ? यह कि हमारे बनने, सम्पन्न बनने, सफल बनने में तमाम उन लोगों की भूमिका होती है, जिन्हें हम साथ रखने और साथ होने में भी शर्म महसूस करते हैं। उन्हें उनका देय देना तो दूर, श्रेय देने तक में हम कृतघ्न होते हैं। गाँधी इसे समझने और समझकर सर्वोदय की कामना करने का ही तो आह्वान करते हैं – माँगे सबकी खैर।

–सचिव, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

सत्य साधक शास्त्री जी- सत्य रूप गाँधी

जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप

❑ श्याम सुन्दर बिस्सा

भारतीय प्रशासनिक सेवा के कुशल अधिकारी श्री श्याम सुन्दर बिस्सा वस्तुतः गाँधीपथ के अनुगामी हैं। करुणा व उपकार भाव से ओतप्रोत श्री बिस्सा जी भारतीय दर्शन के चिन्तक, प्रखर वक्ता एवं उद्भट विद्वान हैं। आपकी कार्य प्रणाली में गाँधीजी के सहज ही में दर्शन होते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक के पद पर कार्यरत रहते हुए शिक्षक भाई-बहनों के अभाव-अभियोग सुनने का आपका गाँधीवादी तरीका एवं समाधान दृष्टि याद करके लोग रोमाञ्चित हो जाते हैं। वर्तमान में आप जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, नागौर पद पर कार्यरत हैं।

वर्तमान समय में हमारे देश की यात्रा पर आने वाला सामान्य विदेशी नागरिक इसकी पहचान पर्यटक रूप में ताजमहल, खुजराहों के देश, महलों, किलों के देश के रूप में करेगा। अधिक से अधिक इसे पुरातन, साधु संतों, भिखारियों और योगा (योग नहीं) के देश के रूप में पहचानेगा और अपने यात्रा वृतान्तों, पर्यटक पुस्तकों में इनकी चर्चा भी करेगा। होटलों, गाइडों और दुकानदारों के असत्य भाषण और उनसे स्वयं के ठगे जाने को विस्तार से उल्लेखित करेगा। किन्तु वास्तव में भारतवर्ष की पहचान ताजमहल और किले नहीं हैं, और न गोवा बीच और जैसलमेर के धोरे हैं। **हमारी गौरवशाली पहचान है, पुण्य सलिला माता गंगा, जीवन रहस्य और उसे संयमित करने का अद्वितीय प्रबन्ध ग्रंथ गीता और सत्य समर्पित जीवन जीने और सत्य के लिये सर्वस्व त्याग का विश्व में अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करने वाले प्रातः स्मरणीय गाँधी।** हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमने गंगा, गीता और गाँधी की पुण्य भूमि पर जन्म लिया है। गाँधी एक राजनेता के बनिस्पत संत की भूमिका में विश्व में अधिक याद किये जाते हैं और इसी दृष्टि से एक राजनेता के रूप में देश के सर्वोच्च राजकीय पद पर पहुँचने वाले किसी युग पुरुष का यदि ध्यान किया जाए तो सत्य की साधना को पद और प्रतिष्ठा से सदैव उच्चतर स्थान देने वाले, जवानों और किसानों के प्रिय नन्हें दिखते किन्तु हर दृष्टि से बड़ा कार्य करने वाले बड़ा सोचने वाले एक ही सत पुरुष हमारे सामने आते हैं वे हैं– शास्त्री जी, लालबहादुर।

गंगा, गीता के पश्चात् देश की पहचान व्यक्ति के माध्यम से गाँधी शास्त्री से होने से गौरवान्वित अनुभव करने के पीछे भाव है, शाश्वत नैतिक मूल्यों को स्वयं के जीवन में अवधारण का और उन मूल्यों के संरक्षण में अपने जीवन को न्यौछावर कर देने का।

मानवीय मूल्यों की बात करते हैं तो जो सर्वोच्च जीवन मूल्य सामने आता है वह है सत्य। पतंजलि अष्टांगयोग के प्रथम अंग यम के प्रथम तत्व अथवा जैन दर्शन प्रथम महाव्रत के रूप में सत्य और केवल सत्य ही वह नैतिक मूल्य है जिससे किसी न किसी तरह अन्य समस्त शाश्वत मूल्य प्रस्फुटित होते हैं और समाहित भी।

भारतीय मनीषियों ने इसे विभिन्न तरह से परिभाषित किया और जीया है– महर्षि वाल्मीकि ने वाल्मीकि रामायण के अयोध्या कांड में स्वयं पुरुषोत्तम राम के मुख से इसे ईश्वर रूप वर्णित किया है– **इस जगत में सत्य ही ईश्वर है सत्य से ही धर्म स्थित रहता है, सत्य धर्म की जड़ है, सत्य से बड़ा कोई परम पद नहीं है।**

सत्यमेश्वरो लोके सत्ये धर्म सदाश्रितः
सत्य मूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परम पदः

इस जगत में निराकार अगम अगोचर ईश्वर की साकार अनुभूति 'सत्य' है। ईश्वर दृष्टिगोचर नहीं हो रहा तो किसे मानें ? महर्षि वाल्मीकि ने स्वयं अगम, अगोचर 'राम', जो पृथ्वी पर पुरुषोत्तम राम थे, उसने कहलवाया, 'सत्य की आज्ञा माने मेरी आज्ञा रूप में।'

महात्मा गाँधी का जो राम के प्रति समर्पण था वह भी सत्य के कारण ही था। उन्होंने अत्यन्त स्पष्ट लिखा– 'मैं, मेरे मन और मस्तिष्क से सत्य को मेरे राम का सहज प्रतीक मानता हूँ। उनका सम्पूर्ण जीवन सत्य की साधना में बीता और **सत्य के प्रयोग** किये उन्होंने। प्रयोगों में आई बाधाओं के पश्चात् भी प्रयोग परिणामदायक एवं सफल रहे। उनकी स्पष्ट धारणा थी 'यदि हमारा कार्य वाणी सत्य है तो वह ईश्वर रूप में ही है उसके लिए किसी अन्य के सहारे, अन्य से पुष्टि की आवश्यकता नहीं। कहा भी है, **जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप।**

शास्त्री जी ने भी अपने जीवन काल में बचपन में मित्रों के भाग जाने के पश्चात् आमों के बाग में अकेले पकड़े जाने पर, असहयोग आंदोलन के दौरान जेल में सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हुए जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट से सत्य के लिए जोरदार आग्रह करते हुए, 1952 में रेल दुर्घटना की जिम्मेदारी स्वयं पर लेते हुए केबिनेट से इस्तीफा देते समय और अंततः ताशकंद में माँ भारती के गौरव और सैनिकों के बलिदान का सम्मान करते हुए इसी **सत्य** को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाए रखा।

सत्य साधन गाँधीजी और शास्त्री जी के जीवन की एक प्रमुख समानता है एक राम और सत्य

को एकाकार कर देखते हैं दूसरे सत्य के अतिरिक्त अन्य किसी की परवाह करना आवश्यक नहीं समझते और यही हमारे जीवन का सत्य है। जीवन से सत्य निकल गया तो **सत** (शक्ति हिम्मत) निकल गया। दोनों रूप में सत मत छोड़े सूरमा सत्य है। निश्चय ही सत्य की यह साधना सरल नहीं, सर्वोत्तम कार्य कोई सरल होता भी नहीं किन्तु यदि इसके प्रति लौ लग गई तो निश्चय ही ईश्वर कृपा हो गई 'उसकी' परम कृपा से ही यह लौ लग सकती है क्योंकि यह उसी के प्रति तो समर्पण हैं। उसी के अनुग्रह से सत्य जीवन शैली का अंग बनता है, ऐसा होना ही इस नश्वर संसार में जीते प्राणियों के लिए **कॉल ऑफ डिवाइन** हैं।

मुंडकोपनिषद का शाश्वत ध्येय वाक्य– **सत्यमेव जयते नानृतम्** मानव सभ्यता का सर्वोच्च जीवन मूल्य रहा है और रहेगा।

सत्य और अहिंसा के बल पर जो ज्ञान प्राप्त होता है, वस्तुतः वही आत्मज्ञान है। आत्मज्ञान की पुरातन परम्परा हमारे यहाँ रही है। वैज्ञानिक विकास के संदर्भ में आचार्य विनोबा कहा करते थे कि आत्मज्ञान में विज्ञान मिला देने से जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह गाँधी ज्ञान है। गाँधी ज्ञान का ज्ञाता कभी असत्यवादी व अहिंसक नहीं हो सकता। विनोबा जी ने इसे सूत्र रूप में आत्म ज्ञान + विज्ञान = गाँधी ज्ञान घोषित करते हुए कहा है, 'गाँधी ज्ञान क्या चीज है, जरा समझने की जरूरत है। अपने देश में आत्मज्ञान का उदय प्राचीन काल में हुआ था और उसकी परम्परा यहाँ आज तक अखण्डित चली आ रही है। विज्ञान का भी उदय अपने यहाँ हुआ था, पर उसकी परम्परा अखण्डित नहीं चली और आधुनिक जमाने में विज्ञान का विकास पश्चिम में हुआ। आत्मज्ञान और विज्ञान के संयोग से सामूहिक अहिंसा का जन्म हुआ था। उसे ही गाँधीज्ञान कहते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि उसी से दुनिया का भला होने वाला है। इतना ही नहीं, उससे हम इस दुनिया में स्वर्ग ला सकते हैं जैसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन मिलकर पानी बनता है, वैसे आत्मज्ञान और विज्ञान मिलकर सर्वोदय, साम्यवाद या साम्ययोग बनता है।'

–कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, नागौर

नई तालीम

"इस नई तालीम का काम मेरे जीवन का आखिरी काम है। यदि इसे भगवान ने पूरा करने दिया तो हिन्दुस्तान का नक्शा ही बदल जाएगा। आज की तालीम तो निकम्मी है। जो लड़के स्कूल और कालेजों में शिक्षा पाते जाता हो, लेकिन जीवन के लिए तो कुछ है। यदि यह अक्षरज्ञान दे तो मैं कहूँगा कि मुझे तुम्हारा है कि सब प्रकार के शरीरश्रम साथ-साथ अक्षरज्ञान भी सबको के पास ही हो वह मेरे काम का को यह ज्ञान कैसे मिले? इस हैं उनको अक्षरज्ञान भले ही हो अक्षरज्ञान के अतिरिक्त और भी हमारे अन्य अंगों को निकम्मा बना ज्ञान नहीं चाहिए..... सारांश यह करने वाले चाहिए और उसके चाहिए। जो ज्ञान मुट्ठीभर लोगों नहीं है। अब प्रश्न यह है कि सब विचार में से नई तालीम का जन्म हुआ है। मैं तो कहता हूँ कि नई तालीम सात साल के बच्चे से नहीं, माँ के गर्भ से आरम्भ होनी चाहिए। इसका रहस्य तुम समझ लो। यदि माँ परिश्रमी होगी, व्यवस्थित होगी, संयमी होगी, तो बच्चे पर इसका संस्कार माँ के गर्भ से ही पड़ेगा।"

–महात्मा गाँधी

सत्याग्रह का हिस्सा है अनशन

❑ भारत दोसी

यह बात स्वयं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में लिखी है कि उन्होंने सत्याग्रह अपनी पत्नी कस्तूरबा से सीखा है, जो मतभेद होने पर अनशन करती थी अपनी बात भूखे रहकर मनवाती थी। यही सत्याग्रह देश की आजादी का मार्ग रहा है।

उन्होंने 20 अक्टूबर 1927 को यंग इण्डिया में लिखा है– 'चूँकि सत्याग्रह सीधी कार्यवाई के अत्यन्त बलशाली उपायों में से एक है इसलिए सत्याग्रही सत्याग्रह का आश्रय लेने के पहले और सब उपाय आजमा कर देख लेता है। ...और वह सत्याग्रह छेड़ देता है तब वह अपना सब कुछ दाँव पर लगा देता है और पीछे कदम नहीं हटाता।' वर्तमान में अनशन करने वाले गाँधी जी के इस विचार से सीख ले सकते हैं परन्तु दबाव बनाकर स्वहित साधने वालों के लिए यह विचार ज्यादा विवेचन योग्य नहीं होगा।

इसी प्रकार 15 अप्रैल 1933 को 'हरिजन' में महात्मा जी ने सत्याग्रह को पूरी तरह स्पष्ट किया है 'सत्याग्रह एक सौम्य वस्तु है वह कभी चोट नहीं पहुँचाता। उसके पीछे क्रोध या द्वेष नहीं होना चाहिए। उसमें शोरगुल प्रदर्शन या उतावली नहीं होती।'

हमारे देश में उपवास, अनशन आदि का अपनी माँगों के लिए उपयोग आम बात है। हरिजन सेवक के 18 मार्च 1939 के अंक में बापू ने लिखा है 'उपवास सत्याग्रह के शस्त्रागार का एक अत्यन्त शक्तिशाली अस्त्र है उसे हर कोई नहीं करता।' हमारे यहाँ अनेक लोग ऐसा करते हैं और फिर डरकर भाग निकलते हैं।

अनशन के दुरुपयोग, दबाव पर भी बापू ने स्पष्टता से ध्यान खींचा है। उन्होंने 6 मई 1933 को हरिजन में लिखा है 'जो आदमी किसी उपवास के उद्देश्य को स्वार्थपूर्ण या अन्यथा निंदनीय मानता है उसे उस उपवास के सामने झुकने से दृढ़तापूर्वक इन्कार कर देना चाहिए चाहे इस कारण उपवास करने वाले की मृत्यु ही क्यों न हो जाय।'

ऐसे में प्रत्येक अनशनकर्ता को चाहिए कि वह इस विषय पर बापू के विचारों को पढ़े ताकि हमारे इस सामाजिक मूल्य का हरण न हो।

–58, मोहन कॉलोनी, बांसवाड़ा (राज.)

गाँधी एवं गीता

❑ डॉ. के.डी. शर्मा

'अपनी बाल्यावस्था में ही मुझे ऐसे शास्त्रीय ग्रंथ की आवश्यकता प्रतीत हुई जो जीवितावस्था के मोह तथा कसौटी के समय मेरा अचूक मार्गदर्शन करे। मैंने कहीं पढ़ा था कि केवल सात सौ श्लोकों में गीता ने सारे शास्त्रों और उपनिषदों का सार 'गागर में सागर' भर दिया है। मेरे मन का निश्चय हुआ। गीता पठन के उद्देश्य से मैंने संस्कृत का अध्ययन किया। गीता मेरी बाइबल या कुरान ही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष माता ही है। अपनी लौकिक माता से तो कई दिनों से मैं बिछुड़ा हूँ, किन्तु तभी से गीता मैया ने मेरे जीवन में माता का स्थान ग्रहण कर लिया है। आपातकाल में वही मेरा सहारा है।' —महात्मा गाँधी

गाँधीजी को भगवद्गीता का प्रथम परिचय 19-20 वर्ष की आयु में एडविन आर्नल्ड के पद्य अनुवाद से सन् 1888-89 में प्राप्त हुआ। उस समय उन्हें ऐसा लगा कि यह ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं है, वरन् इसमें भौतिक युद्ध के वर्णन के बहाने प्रत्येक मनुष्य के हृदय के भीतर निरन्तर होते रहने वाले द्वंद्व युद्ध का ही वर्णन है तथा धर्म और गीता का विशेष विचार करने पर यह प्राथमिक स्फुरण पक्का हो गया और महाभारत पढ़ने के बाद यह विचार और भी दृढ़ हो गया। गाँधीजी के विचार से गीता के उपदेश का परिचय सबको बचपन से ही हो जाना चाहिए।

साबरमती आश्रम में गाँधीजी ने गीता पाठ शुरू करवाकर शाम की प्रार्थना के साथ गीता के श्लोकों की व्याख्या करनी आरम्भ कर दी। गाँधीजी की प्रेरणा से सारे आश्रमवासी गीता के श्लोकों को कण्ठस्थ करने लगे तथा शुद्ध उच्चारण से और अच्छे स्वर में अध्याय के बाद अध्याय बोलने लगे। इस प्रकार दो सप्ताह में सारी गीता पूरी होने लगी। परन्तु गाँधीजी ने निश्चय किया कि गीता पाठ एक सप्ताह में ही पूरा हो। इस हेतु अध्यायों के विभाग श्री विनोबा ने तैयार किये। तब से आश्रम में गीता पाठ अबाधित चलता रहा। गाँधीजी ने शाम की प्रार्थना में गीता के द्वितीय अध्याय के स्थितप्रज्ञ के लक्षण सम्बन्धी अठारह श्लोकों को समावेश किया। स्थितप्रज्ञ के लक्षणों को अपने आचरण तथा व्यवहार में प्रयोग कर गाँधी जी साबरमती के संत कहलाये– *'दे दी आजादी बिना खड्ग बिना ढाल,/ साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।'*

साबरमती आश्रम की 'आश्रम-भजनावली' के अनुसार काका कालेलकर ने गाँधीजी को सुझाव दिया था कि प्रार्थना का प्रारम्भ वेदवाणी से होना चाहिए। इस हेतु यजुर्वेद (शुक्ल) के चालीसवें अध्याय (ईशावास्योपनिषद्) के प्रथम मंत्र का चयन किया गया– *'ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥*

इस मंत्र का अर्थ इस प्रकार है– जगत् में जो कुछ स्थावर-जङ्गम संसार है, वह सब ईश्वर के द्वारा आच्छादनीय है। (अर्थात् संसार को भगवत्स्वरूप अनुभव करना चाहिए) अतः त्यागपूर्वक भोग करो। किसी के धन में आसक्ति मत रखो।

इस मंत्र में सम्पूर्ण गीता का सार समाहित है। गाँधीजी को यह मंत्र इतना पसन्द आया कि इस मंत्र के आधार पर उन्होंने अनेक सभाओं में प्रवचन किये तथा सुबह व शाम दोनों वक्त की प्रार्थना के प्रारम्भ में इस मंत्र को स्थान दिया।

गाँधीजी अपने पूरे जीवनकाल में गीता के उपासक रहे। उन्होंने गीता को माता की संज्ञा दी। गीता का उपदेश जन-जन तक पहुँचे, इस हेतु उन्होंने अनेक लेखों में गीता का महत्व विस्तार से दिया, गीता के श्लोकों का अनुवाद किया, सम्पूर्ण गीता के सार-रूप कुछ श्लोकों का चयन किया तथा उनका शब्दकोश तैयार किया गीता से सम्बन्धित उनकी अनेक पुस्तकें आज भी उपलब्ध हैं। सन् 1930 में यरवदा जेल में गाँधीजी ने 'गीता बोध' नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा– 'मैं तो अपनी सारी कठिनाइयों में गीता-माता के पास दौड़ा आता हूँ और अब तक आश्वासन पाता आया हूँ। गीता को मैंने जैसा समझा है उसी तरह उसका आचरण करने का मेरा बराबर प्रयास रहा है।' 'गीता बोध' में गाँधीजी ने प्रत्येक अध्याय की विस्तार से प्रभावकारी, व्यवहारिक एवं प्रेरणादायक व्याख्या की है तथा गीता के मर्म को स्पष्ट करते हुए प्रत्येक अध्याय के मूल भाव पर प्रकाश डाला है और 'गीता बोध' पाठक को उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

गाँधीजी मानते थे कि मनुष्य के जीवन में चारों ओर संकट आ जाने तथा निराशा आने पर जब कोई रास्ता उसे दिखाई नहीं दे तब गीता के श्लोकों से न केवल उसे रास्ता मिल जाता है बल्कि उसमें नया पुरुषार्थ भी उत्पन्न हो जाता है। उनके अनुसार गीता के प्रति आस्था रखने वाला मनुष्य कभी निराश अथवा निष्क्रिय हो ही नहीं सकता।

गणित के निष्णात प्रोफेसर डॉ. के.डी. शर्मा महाविद्यालय शिक्षा में प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। आप सतत अध्यवसायी एवं कुशल लेखक हैं। आप गणित के आधिकारिक विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित हैं। राज्य सेवा से निवृत्ति के उपरान्त वरिष्ठ नागरिकों के माध्यम से समाज सेवा एवं नागरिक चेतना का संचरण करने हेतु सतत् प्रयत्नशील डॉ. शर्मा शिक्षा, विशेषकर बालिका शिक्षा में गहरी रुचि रखते हैं। धर्म और अध्यात्म में वैज्ञानिकता के समन्वय पर सदैव बल देने वाले डॉ. शर्मा श्री हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन संस्थान, क्षेत्रीय कार्यालय, बीकानेर में विजिटिंग प्रोफेसर रहे हैं।

गाँधीजी के अनुसार गीता पढ़ते समय हमें यह समझना चाहिए कि श्रीकृष्ण भगवान हमारे हृदय में विराजमान हैं तथा उनके प्रति समर्पण करने पर वे निश्चित हमें परमशान्ति प्रदान करते हैं। गाँधीजी ने महसूस किया कि गीता का नित्य मनन करने से श्लोकों के नित्य नये अर्थ मिलते हैं। इसके अनुसार आचरण करने से निष्फलता नित्य आती है तथा इस निष्फलता से हमें सफलता की किरणों की झलक दिखाई देती है। गीता के कृष्ण मूर्तिमान शुद्ध सम्पूर्ण ज्ञान हैं। कृष्णावतार के सम्बन्ध में गाँधीजी का विचार था कि 'आदम खुदा तो नहीं, परन्तु खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं।' अर्थात् जिस मनुष्य में धर्म की जागृति अपने युग में सबसे अधिक है वह विशेषावतार है। इस विचार से श्रीकृष्ण सम्पूर्ण अवतार हैं। गाँधीजी के अनुसार ईश्वर रूप हुए बिना मनुष्य को परम शान्ति नहीं मिल सकती। ईश्वर रूप होने का प्रयत्न ही सच्चा और एकमात्र पुरुषार्थ है और यही आत्मदर्शन है। आत्मदर्शन का एक अद्वितीय उपाय गीता में बताया है– कर्मफल का त्याग अर्थात् निष्कामता जो हृदय मंथन से ही उत्पन्न होती है। इस हेतु गीताकार ने ज्ञान के साथ भक्ति को मिलाकर उसे प्रथम स्थान दिया है। गाँधीजी गीता की भक्ति को अंध श्रद्धा नहीं मानते। गाँधीजी ने गीता के बारहवें अध्याय 'भक्ति योग' में वर्णित भक्तों के लक्षणों को अपने जीवन का आदर्श माना। भक्त वह है जो किसी से द्वेष नहीं करता, जो करुणा का भण्डार है, निरहंकार है, आसक्ति रहित है, क्षमाशील है, दुःख-सुख में सम है, संतोषी है, मान-अपमान, स्तुति-निंदा में सम है, जिसकी बुद्धि स्थिर है, जो किसी को उद्विग्न नहीं करे तथा स्वयं भी उद्विग्न न हो तथा जो हर्ष-शोक, भयादि से मुक्त हो। इस प्रकार भक्त होना, ज्ञान प्राप्त करना ही आत्मदर्शन है। गीता के मोक्ष का अर्थ है– परमशान्ति।

गाँधीजी के अनुसार ज्ञान और भक्ति को कर्मफल त्याग की कसौटी पर परखना आवश्यक है। उनके अनुसार गीता का उपदेश– 'फलासक्ति छोड़ो और कर्म करो।' जो कर्म छोड़ता है वह गिरता है तथा जो कर्म करते हुए फल में आसक्ति नहीं रखता वह परम शांति को प्राप्त होता है। फलत्याग के सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रत्येक कर्म का फल तो मिलता ही है। फलत्याग का अर्थ है– कर्म के फल में आसक्ति का अभाव। गाँधीजी के अनुसार जो मनुष्य परिणाम की बात सोचता रहता है, वह बहुत बार कर्त्तव्य-कर्म-भ्रष्ट हो जाता है, अधीर हो जाता है, क्रोध के वशीभूत हो जाता है और फिर वह न करने योग्य कर्म करने लग जाता है। परिणाम की चिंता करने वाले की स्थिति विषयांध की सी हो जाती है। फलासक्ति के ऐसे कटु परिणाम में से गीताकार ने अनासक्ति अर्थात् कर्मफलत्याग का सिद्धान्त सम्पूर्ण मानव समाज के सामने अत्यन्त सरल, प्रभावकारी तथा आकर्षक भाषा में गीता में समाहित किया।

अन्त में 'यंग इण्डिया (1925) में गाँधीजी ने गीता के सम्बन्ध में लिखा उसे उद्धृत कर लेखनी को विराम देते हैं– 'मुझे भगवद्गीता में एक ऐसी सान्त्वना मिलती है, जो मुझे सर्मन ऑन दि माउण्ट (बाइबल का एक प्रसंग) तक में नहीं मिलती। जब निराशा मेरे सामने आ खड़ी होती है और जब बिल्कुल एकाकी मुझको प्रकाश की कोई किरण दिखाई नहीं पड़ती, तब मैं गीता की शरण लेता हूँ। जहाँ-तहाँ कोई न कोई श्लोक मुझे ऐसा दिखाई पड़ जाता है कि मैं विषम परिस्थिति में भी तुरन्त मुसकराने लगता हूँ– और मेरा जीवन बाह्य विपत्तियों से भरा रहा है और यदि वे मुझ पर अपना कोई दृश्यमान, अमिट चिह्न नहीं छोड़ सकीं, तो इसका सारा श्रेय भगवद्गीता की शिक्षाओं को ही है।'

–IV D-86 ज.ना. व्यास कॉलोनी
बीकानेर-334001 (राज.)

महात्मा गाँधी और शिक्षा

❑ आत्म प्रकाश मिश्र

महात्मा गाँधी भारतीय गुरुजनों की उस परम्परा में थे, जिन्होंने ''स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः'' सिद्धान्त पर आचरण किया। वह कृष्ण, बुद्ध तथा ईसा के पदचिह्नों पर चले और उन्होंने उपदेश से अधिक अपने उदाहरण द्वारा शिक्षा दी। अर्द्ध शताब्दी पर्यन्त वे एक बड़े महाद्वीप की जनता को आत्मसंयम एवं स्वशासन करने की शिक्षा देते रहे। वे शिक्षा को सम्पूर्ण जीवन का अंग मानते थे और उसकी प्रत्येक बात को शाश्वत मूल्यों से जोड़ते थे। शिक्षा द्वारा वे सामाजिक व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन की कल्पना संजोये हुए थे।

गांधीजी की शिक्षा योजना देश-काल के अनुरूप थी और उसमें उच्च कोटि के शिक्षात्मक तत्वों का समावेश था। यह संभव इसलिए बना कि उनके शिक्षा-विचारों का आधार परिस्थितियों की वास्तविकता, मूल्यों की शाश्वतता और जीवन से सम्बद्धता थी। उनके विचारों को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख तत्व थे। एक था, उनका आधुनिक शिक्षा प्रणाली का कटु अनुभव, जिसने उनके मन में बचपन से ही धारणाएं बनाना आरम्भ कर दिया था। दूसरा, उनके शिक्षा सम्बन्धी प्रयोग, जिन्होंने उनके शिक्षा विचारों को शिक्षा दी। और तीसरे, उनका भारतीय समाज का अंतरंग ज्ञान, जिसने उनकी शिक्षा योजना को सामाजिक उपादेयता की कसौटी पर कसा।

दो या तीन भाषाएं पढ़ाने के सम्बन्ध में वर्तमान में जो विवाद उठ खड़ा हुआ है, उसके संदर्भ में गांधी जी का विचार उल्लेखनीय है– ''आज मैं यह मानता हूँ कि भारतवर्ष में उच्च शिक्षण क्रम में अपनी मातृभाषा के सिवा राष्ट्रभाषा हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी को स्थान मिलना चाहिए। भाषाओं की इतनी लम्बी सूची से किसी को डरना नहीं चाहिए। यदि भाषाएं ढंग से सिखाई जाएं और सब विषय अंग्रेजी द्वारा ही पढ़ने-समझने का बोझ हम पर न हो तो उपर्युक्त भाषाओं की शिक्षा भारस्वरूप नहीं होगी, बल्कि उसमें बहुत रस मिलेगा। उसके अतिरिक्त एक भाषा शास्त्रीय पद्धति से सीख लेने वाले के लिए दूसरी भाषा का ज्ञान सुलभ हो जाता है। सच पूछिये तो हिन्दी, गुजराती और संस्कृत की एक भाषा में गणना की जा सकती है। उसी प्रकार फारसी और अरबी को एक माना जा सकता है। उर्दू को मैं अलग भाषा नहीं मानता, क्योंकि उसके व्याकरण का समावेश हिन्दी में जो जाता है। उसके शब्द तो फारसी और अरबी के ही हैं। अच्छी उर्दू जानने वाले के लिए अरबी और फारसी जानना जरूरी है, वैसे ही जैसी अच्छी गुजराती, हिन्दी, बंगला, मराठी जानने वाले के लिए संस्कृत जानना।'' यह अनुभवजन्य व्यक्तव्य एक ऐसे

व्यक्ति का है, जिसने स्वयं कई भाषाओं का सफल अध्ययन किया था।

धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में भी बड़ा मतान्तर व्यक्त किया जाता है। इस सम्बन्ध में गांधीजी की धारणा बहुत पहिले ही पुष्ट हो चुकी थी। वे कहते हैं ''छठे सातवें से शुरू करके सोलह वर्ष का होने तक पढ़ता रहा। पाठशाला में सब तरह की बातें सीखीं, पर कहीं भी धर्म शिक्षा न मिली। कहना चाहिए कि जो वस्तु शिक्षकों से अनायास ही मिलनी चाहिए थी वह न मिली।'' किन्तु घर और समाज से उनके जो संस्कार बने उनसे ''एक बात ने मेरे मन में जड़ जमा ली– यह संसार नीति पर टिका हुआ है, और सारी नैतिकता का तत्व पदार्थ सत्य है। अतएव सत्य प्राप्ति मेरा प्रमुख उद्देश्य बन गया। दिन प्रतिदिन सत्य की महत्ता मेरी दृष्टि से बढ़ती गई, विस्तार पाती गई।'' गांधीजी धर्म को बड़े व्यापक रूप से लेते थे उसे किसी सम्प्रदाय विशेष के धर्म तक सीमित नहीं समझते थे। इस व्यापक अर्थ में वे धर्म को आत्मबोध एवं आत्मज्ञान मानते थे।

शिक्षा विचारों का विकास : महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन चालीस वर्ष के व्यक्तिगत अनुभवों और प्रयोगों के आधार पर बना है। इनकी पृष्ठभूमि थी स्वदेश तथा दक्षिण अफ्रीका के स्वदेशवासियों का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन। गांधीजी के इन अनुभवों और प्रयोगों में यथार्थता, सूक्ष्म विवरण, तथा दूरदर्शिता का गुण रहा है। उन्होंने एक वैज्ञानिक की भाँति निष्कर्षों को खुले दिमाग से स्वीकार और अस्वीकार किया है। उन्होंने इनके सत्य की खोज की है, गहरा अन्तरदर्शन किया है और सच्चे मनोवैज्ञानिक की भाँति बाल प्रकृति की कसौटी पर कसा है। जो उन्हें तर्क और हृदय से ठीक जान पड़े, उन पर पुनः प्रयोग किया गया है और फिर जिन निष्कर्षों की सत्यता शाश्वत जान पड़ी है, उन्हीं को अपनाया है। यद्यपि गांधीजी आदर्शवादी थे, किन्तु बड़े क्रियात्मक भी। अतएव अपने सिद्धान्तों को कर्म की शिला पर ठोक पीटकर सँवारते थे। इससे उनके विचार आत्मनिष्ठ न होकर वस्तुनिष्ठ होते थे, परिकल्पित न होकर प्रयोगात्मक होते थे। वे प्रयोगों द्वारा व्यवहृत और क्रियान्विति द्वारा परीक्षित होते थे। छोटे स्तर पर किये गये ये प्रयोग आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों का मार्गदर्शन करेंगे कि शिक्षा जगत में उपयोगी शोध कैसे की जा सकती है।

गांधीजी के शिक्षा विचारों का सूत्रपात तत्कालीन शिक्षा के दोषों से हुआ। उस समय की शिक्षा बालक के प्राकृतिक एवं सामाजिक परिवेश की अवहेलना करके निरी साहित्यिक (लिटरेरी) होती थी, जिसमें हृदय के संस्कार (कल्चर) की कोई गुंजाइश नहीं थी। यह भारतीय प्रतिभा के प्रतिकूल बड़ी अपव्ययी तथा निष्प्रभावी थी और सार्वजनिक शिक्षा देने में सर्वथा असमर्थ थी। इस दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली को हटाना तो सरल था, किन्तु इसके स्थान पर उचित प्रणाली निर्धारित करना कठिन कार्य था।

उपयुक्त शिक्षा प्रणाली के निर्माण के लिए गांधीजी स्वयम शिक्षक बने और शिक्षा प्रयोगों का श्रीगणेश अपने घर से किया। अपने बच्चों, अशिक्षित पत्नी तथा नौकरों को पढ़ाना शुरू किया। इनसे प्राप्त निष्कर्षों की पुष्टि के लिए उन्होंने इन्हें बड़े पैमाने पर फीनिक्स तथा टालस्टाय-फार्म पर चलाया। दूसरे चरण में यह प्रयोग साबरमती आश्रम और चंपारण में किए गए, जिसमें वयस्क शिक्षा पर भी बल था। तीसरे चरण में गांधीजी ने सन् 1939 में अपेन शिक्षा सिद्धान्तों को शिक्षा शास्त्रियों के सम्मुख रखा और नई तालीम, अथवा वर्धा योजना को जन्म दिया।

अपने शिक्षा-दर्शन के विकास में गांधीजी को तीन व्यक्तियों के विचारों ने बहुत प्रभावित किया। एक थे, रायचंद भाई जो दक्षिण अफ्रीका में एक व्यापारी थे, किन्तु थे बड़े शतावधानी, गम्भीर शास्त्रज्ञ, उच्च चरित्रवान तथा उत्कृष्ट आत्मदर्शी। अपने आध्यात्मिक संकट में गांधीजी उनका आश्रय लिया करते थे। दूसरे थे टॉलस्टाय, जिनकी पुस्तक ''द किंगडम ऑफ गॉड इज़ विदिन यू'' (बैकुण्ठ तेरे हृदय में है) के प्रेम संदेश ने ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना जागृत की, और यह विचार दिया कि बिना हाथ-पैर चलाये शिक्षा मस्तिष्क का क्षय कर देती है। तीसरे व्यक्ति थे रस्किन, जिनकी पुस्तक ''अनटू दिस लास्ट'' ने गांधीजी के मन में सुप्त विचारों को स्पष्ट प्रतिबिम्बित किया और उनके जीवन में तत्काल महत्व का रचनात्मक परिवर्तन किया। उससे उन्हें सर्वोदय के तीन सिद्धान्त मिले। पहिला सबके भले में अपना भला समाया हुआ है, दूसरा सबके काम का मूल्य एकसा होना चाहिए और तीसरे सादा, मेहनत-मशक्कतवाला किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है। इन महान् व्यक्तियों के विचारों में अपनी धारणाओं की पुष्टि पाकर गांधीजी ने अपने शिक्षा-दर्शन को परिपक्व किया और इसे एक संगठित रूप से प्रस्तुत करने का साहस किया।

गांधीजी ने अपने शिक्षा-दर्शन को तत्कालीन भारतीय समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में जमाया। अंग्रेजी शिक्षा प्रायः बौद्धिक थी, जिसने शिक्षित एवं श्रमिक के बीच भारी खाई पैदा कर दी। उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने पर भी जीविकोपार्जन दुर्लभ था। बुद्धिजीवी गरीब श्रमजीवियों का लाभ उठाकर शोषण कर अपने व्यक्तिक उन्नयन में लगे हुए थे। विदेश में निर्मित सामग्री से देश इतना आक्रान्त था कि गांवों में भी बेकारी और गरीबी बढ़ी हुई थी और ग्रामीण जीवन पूरा अस्त-व्यस्त हो गया था। अतएव गांवों के आर्थिक जीवन को सुधारने का एक ही तरीका गांधीजी को समझ में आया कि शिक्षा का उससे निकट सम्बन्ध स्थापित किया जावे। उन्होंने किसी लघु ग्रामीण उत्पादन को आर्थिक जीवन का आधार बनाने की सोची। इससे व्यक्ति की शक्तियों को विकास करने का अवसर मिलेगा और प्राप्य सामग्री का उपयोग स्वातंत्र्य प्रेम और अहिंसात्मक भावना से सम्बन्धित होगा। अतएव उन्होंने शिक्षा को किसी मूलोद्योग पर आधारित करने का निश्चय किया। इस मूलोद्योग से न केवल हाथ का प्रशिक्षण होगा वरन् मानस और हृदय का भी प्रशिक्षण होता चलेगा। यह केवल श्रम के सम्मान को प्रतिष्ठित न करेगा वरन् ईमानदारी से जीविकोपार्जन करने का साधन भी जुटायेगा। अर्थाभाव से शिक्षा को सार्वजनिक बनाने में जो कठिनाई थी, उसका भी किसी सीमा तक इससे निराकरण हो सकेगा।

बुनियादी शिक्षा योजना : अपने चालीस वर्ष के शिक्षा अनुभवों तथा प्रयोगात्मक निष्कर्षों को गांधीजी ने देश-काल की पृष्ठभूमि में रखकर अक्टूबर 1937 में वर्धा सम्मेलन में शिक्षाविदों के सम्मुख रखा, जो बाद में वर्धा योजना के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसे प्रायः बुनियादी शिक्षा अथवा बेसिक शिक्षा भी कहते हैं, क्योंकि इस योजना में आधारभूत, बुनियादी एवं न्यूनतम किन्तु अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई है, और इस शिक्षा का आधार एक बेसिक क्राफ्ट, एक मूलोद्योग रखा गया है। इस शिक्षा का उद्देश्य हाथ और ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा से प्रारम्भ कर मस्तिष्क तथा हृदय का उन्नयन करना तथा छात्र को शाला से समाज तथा ईश्वर की ओर

अग्रसर करना है। बेसिक शिक्षा योजना के पाँच मूल सिद्धान्त हैं– (1) सात से चौदह वर्ष तक के बालक और बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जावे। निःशुल्क होने से सभी अमीर-गरीब समान रूप से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और अनिवार्य बनाकर सार्वभौमिक रूप से न्यूनतम आधारभूत (फण्डामेण्टल) शिक्षा सभी को देने की व्यवस्था की गई है। (2) शिक्षा किसी हस्तकौशल या उत्पादन कार्य के माध्यम से दी जावे, जो पाठशाला में दी जाने वाली सम्पूर्ण शिक्षा का केन्द्र बिन्दु माना जाएगा। हस्तकौशल से तात्पर्य हाथ से किये जाने वाले ऐसे कौशलपूर्ण कार्य से है जो लाभप्रद और सुन्दर हो। वह बौद्धिक शिक्षा का एक साधन मात्र न होगा, बल्कि वह तो साधन और साध्य दोनों ही होगा। हस्तकौशल को शिक्षा का माध्यम बनाने के फलस्वरूप शैक्षिक दृष्टि से ज्ञान अधिक ठोस एवं यथार्थ होगा तथा जीवन से सम्बद्ध होकर शिक्षण के समन्वय सिद्धान्त को अधिक व्यावहारिक बनायेगा। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह छात्रों की विशुद्ध बौद्धिक एवं सैद्धान्तिक शिक्षण की निरंकुशता से सुरक्षा करेगा, जिसके प्रतिकूल उनका क्रियाशील स्वभाव सदा स्वस्थ विरोध व्यक्त किया करता है। सामाजिक दृष्टि से हस्त का माध्यम श्रम एवं बुद्धिजीवियों के बीच के वर्तमान पूर्वाग्रहों की खाई को पाट देगा, जो दोनों के ही लिये सर्वथा हानिप्रद है। यदि यह समझदारी और निपुणता से किया गया तो आर्थिक पार्श्व में इससे कामगारों की उत्पादन क्षमता बढ़ेगी और वे अपने अवकाश का समुचित उपयोग कर सकेंगे। (3) तीसरा सिद्धान्त स्वावलम्बन का है। उसके अनुसार शिक्षा अपने को चलाने का बहुत कुछ खर्च हस्तकौशल द्वारा बनाये सामान को बेचकर स्वयं ही निकाल ले। छात्रों द्वारा बने सामान से कम से कम शिक्षक का वेतन निकल आयेगा। इस आर्थिक पक्ष के आ जाने से बालकों का काम खेल-तमाशा न होकर वास्तविक उत्पादन कार्य होगा और सीखने-सिखाने के कार्य को आंकने का एक बाहरी मापदण्ड भी रहेगा। यह सिद्धान्त शिक्षा को वास्तविक जीवन से सम्बद्ध करता है। समाज के कार्यों में योगदान और क्रय-विक्रय तथा उत्पादन खपत की प्रक्रियाओं का यह ज्ञान कराता है। इसका दूसरा मन्तव्य जीविकोपार्जन की समस्या को हल करना है। बेरोजगारी के चक्कर में आने की अपेक्षा छात्र शाला के सीखे उद्योग-धंधे से अपनी रोटी कमा सकते हैं।

इस सिद्धान्त को गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा की कसौटी कहा था। किन्तु वे हठपूर्वक इसे बाध्य करने के पक्ष में न थे। उन्होंने कहा है, ''शिक्षा की सफलता की जाँच स्वावलम्बन से न होगी, वरन् इस बात से होगी कि वैज्ञानिक विधि से हस्तकौशल सीखने में छात्र की सम्पूर्ण योग्यताएँ विकसित हुई हैं अथवा नहीं।'' (4) शिक्षा मातृभाषा द्वारा दी जाय। इस सिद्धान्त को अपनाकर शिक्षण के स्वाभाविक मार्ग को स्वीकार किया गया है, और विदेशी भाषा के माध्यम से जो शक्ति क्षय, अपव्यय और हानियाँ होती हैं उन्हें दूर किया गया है। इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी के विचारों को डॉ. जाकिर हुसैन ने अपनी रिपोर्ट में इस प्रकार व्यक्त किया है ''सब तरह की बुनियाद मातृभाषा की माकूल शिक्षा है। जब तक आदमी पुरअसर ढंग से बातचीत करना और सही-सही और साफ-साफ लिखना-पढ़ना नहीं जानता, उसमें ख्यालों की सेहत और सफाई नहीं आती। इसके लिए भाषा वह जरिया है जिसके जरिये बच्चों को अपने देश के विचारों, भावनाओं और हौंसलों की बहुत बड़ी विरासत हासिल होती है। दूसरे, भाषा वह कुदरती जरिया है, जिसके द्वारा बच्चा सुन्दर चीजों को सराहने के भावों को जाहिर करता है। और भाषा तथा उसका अदब साहित्य आनन्द का साधन बन जाता है। (5) बेसिक शिक्षा योजना का आदर्श ऐसे नागरिक निर्माण करना है, जो देश में उत्पादन कार्य करने वाले हों, प्रत्येक लाभदायक कार्य को आदर दें, इज्जत के काबिल समझें और स्वयं अपने पैरों पर खड़े हो सकें। शिक्षा भावी नागरिकों में वैयक्तिक महत्ता, गरिमा एवं दक्षता की भावना जागृत करे, जिससे उनमें अपने को स्वतः सुधारने की इच्छा उत्पन्न हो और मिलजुलकर काम करके समाज सेवा करना आवे। वे अपनी समस्याओं को समझ सकें, अपने अधिकारों और कर्तव्यों को भली-भाँति जान लें। वे अपने शिक्षाकाल में ऐसा सहकारितापूर्ण जीवनयापन करें, जिसके समस्त कार्यों में समाज सेवा भावना सर्वोपरि हो, जिससे वे ऐसा अनुभव कर सकें कि राष्ट्रीय शिक्षा के पुनर्निर्माण में वह सीधे व्यक्तिगत रूप से भाग ले रहे हैं।

इन सिद्धान्तों के अनुकूल शिक्षा संगठन और पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त हुई, जिसकी रिपोर्ट बेसिक नेशनल एजूकेशन के नाम से प्रकाशित हुई। सन् 1938 में जब प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारें बनी तो इस योजना में कुछ संशोधन किए गए। विशेषकर समवाय और स्वावलंबन के सिद्धान्तों में। अध्यापन में उत्तम समवाय स्थापित करने की कठिनाइयों को देखते हुए दो और समवाय केन्द्र स्वीकार किए गए– एक प्रकृति, और दूसरा समाज। शैक्षिक सामग्री अब प्रकृति, उद्योग और समाज में किसी एक केन्द्र से समवायित की जा सकती थी। स्वावलम्बन सिद्धान्त में शिक्षक वेतन के माप दण्ड को घटाकर प्रयुक्त सामग्री की लागत मात्र प्राप्त कर लेना मान लिया गया।

किन्तु गांधी जी बराबर अपनी शिक्षा योजना पर चिन्तन करते रहे। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के बाद जब वे जेल से निकले तो उन्होंने नई तालीम पर परिवर्द्धित विचार व्यक्त किए, जिनके आधार पर सन् 1945 में सेवाग्राम के शिक्षा सम्मेलन द्वारा समग्र शिक्षा की योजना प्रस्तुत की गई। नई तालीम से उनका अभिप्राय था जीवन की शिक्षा से, जिसका क्षेत्र गर्भ में आने के क्षण से कब्र में जाने तक का है। शिक्षा जीवन के समग्र क्षेत्र का स्पर्श करती है। जीवन की कोई छोटी से छोटी बात भी ऐसी नहीं है, जिनका शिक्षा से सम्बन्ध न हो। स्वच्छता तथा स्वास्थ्य, नागरिकता, कार्य और आराधना, खेल और मनोरंजन, यह सब पाठ्यक्रम से विलग विषय नहीं है, वरन् समरस एवं संतुलित जीवन विकास की अंतर्सम्बन्धित प्रक्रियायें हैं। शिक्षा की ऐसी कल्पना जीवन के साथ व्यापक हो जाती है।, ऐसी शिक्षा से गांधीजी का अंतिम लक्ष्य एक संतुलित संतुष्ट समाज की स्थापना थी, जिसमें साधारण व्यक्ति अपनी अंतर्निहित शक्तियों को विकसित कर शांतिमय, संतुष्ट एवं प्रसन्न जीवन व्यतीत करे। भारतीय जनता के उद्धार का साधन ऐसी शिक्षा ही बन सकती थी।

नई तालीम की चार अवस्थाएं की गईं। पहिली अवस्था में सम्पूर्ण समुदाय की शिक्षा का कार्यक्रम था, जिससे उसका प्रत्येक सदस्य प्रसन्न, स्वस्थ, स्वच्छ एवं आत्मनिर्भर जीवन व्यतीत कर सके। दूसरी अवस्था में सात वर्ष से कम आयु वाले शिशुओं की पूर्व बेसिक (प्री-बेसिक) शिक्षा आती है, जिसमें शिक्षक तथा अभिभावक और घर तथा समाज को शिशुओं

की शक्तियों को विकसित कराने में हाथ बटाना पड़ेगा। तीसरी अवस्था, बेसिक शिक्षा की सात से पन्द्रह वर्ष आयु पर्यन्त कार्यक्रम की है, जो वर्धा योजना के अन्तर्गत आ गई है। चौथी अवस्था उत्तर-बेसिक (पोस्ट-बेसिक) की है, जो बेसिक शिक्षा पूर्ण होने पर आरम्भ होगी और जिसमें किशोरों की पंद्रह से अठारह वर्ष तक की ऐसी शिक्षा व्यवस्था की जावेगी कि वे वयस्क जीवन के कौटुम्बिक भार को वहन करने योग्य बन सकें। इसमें 'शाला ग्राम' में रहकर विभिन्न प्रकार की उत्पादन क्रियाओं को सीखने का अवसर मिलेगा, जिनसे व्यवस्थित ज्ञान की प्राप्ति तो होगी ही, समाज का संपालन भी होगा। जिनकी योग्यता एवं रुचि प्रखर हुई, वे विश्वविद्यालयों में उच्च व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सकेंगे।

बेसिक शिक्षा में गत्यात्मकता है, जिसका परम्परावादी शिक्षा में सर्वथा अभाव है। इसकी लघु उद्योगों द्वारा उत्पादन की विकेन्द्रित विधि समाजवादी अर्थव्यवस्था के मूल में है। प्रत्येक स्थान के उपयुक्त उद्योग चयन करने में सावधानी परम आवश्यक है। जो उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपयुक्त होंगे, वे नागरिक क्षेत्रों के लिए नहीं। आवश्यकतानुसार शहरी क्षेत्रों में तकनीकी ज्ञान से संबद्ध उद्योग चलाने पर ध्यान देना चाहिए था। किन्तु ग्रामीण उद्योगों पर ही बल होने के कारण लोगों ने शिक्षा-योजना को ग्रामीण क्षेत्रों के उपयुक्त ठहराया। स्वावलंबन सिद्धान्त पर अधिक जोर न देने के कारण बेसिक पाठशालाओं का व्यय परम्परागत शालाओं की अपेक्षा कहीं अधिक हो गया। इन कारणों से नई तालीम और पुरानी शिक्षा में भेद बढ़ता गया और बेसिक शिक्षा वांछित प्रगति न कर सकी।

स्वतंत्रता प्राप्त होने पर भारत सरकार ने बेसिक शिक्षा-प्रणाली को स्वीकार कर समस्त देश में चलाया, किन्तु अधिकारियों और कर्मचारियों की बेसिक शिक्षा में संदिग्ध आस्था तथा उदासीनता, उपयुक्त प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, और कुछ कथित विशेषज्ञों का महात्मा जी के नैकट्य की दुहाई देकर इसकी ऊटपटांग व्याख्या करना इसकी मंद प्रगति के कारण बताये जाते हैं। ''थोड़ी कही कबीर, बहुत कही संतन'' की लोकोक्ति बेसिक शिक्षा के सम्बन्ध में चरितार्थ होती है। इसकी ऐसी दशा देखकर उसके एक प्रवर्तक ने कहा, ''बुनियादी तालीम जैसी कुछ वह आज चल रही है, एक धोखा मात्र है।'' केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने धीमी आवाज में उसकी असफलता की ओर संकेत किया। शासन के अन्य अधिकारी प्रवक्ताओं ने इस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता निरूपित की। सब मिलाकर आज बेसिक शिक्षा एक गुड़ भरा हंसिया बन गई है, जो न निगला जा सकता है, न उगला जा सकता है। यदि महात्मा गांधी आज जीवित होते तो वे अवश्य इस सम्बन्ध में कोई क्रान्तिकारी घोषणा करते, जैसी उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर कांग्रेस संस्था के सम्बन्ध में की थी।

गांधीजी के शिक्षा सम्बन्धी अन्य विचार : स्वस्थ शैक्षिक सिद्धान्तों पर भारतीय-जनमानस के उपयुक्त शिक्षा योजना प्रस्तुत करने के अतिरिक्त गांधीजी शिक्षा की प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर अपने विचार समय-समय पर व्यक्त करते रहे हैं। उनमें से कुछ प्रमुख विचारों की चर्चा करना यहाँ हमारा अभीष्ट होगा।

शिक्षा का माध्यम और अंग्रेजी : पहली समस्या जिस पर आज बड़ा विवाद फैला है, अंग्रेजी पढ़ने की है। इस पर गांधीजी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा था, 'अंग्रेजी भाषा को उसके अपने स्थान में रखना मुझे प्रिय है, किन्तु यदि वह ऐसा स्थान हड़प लेती है जो उसका नहीं है, तो मैं उसका कट्टर विरोधी हूँ। मैं उसे दूसरी वैकल्पिक भाषा का स्थान दे सकता हूँ, वह भी स्कूल की पढ़ाई में नहीं विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में। यह हमारी मानसिक दासता है कि हम समझते हैं कि अंग्रेजी बिना हमारा काम नहीं चल सकता।'' अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की भाषा है, कूटनीति की भाषा है, उसमें अनेक बढ़िया साहित्यरत्न भरे हैं, और उसके द्वारा हमें पाश्चात्य विचार और संस्कृति का परिचय होता है। इसलिए हममें से कुछ लोगों के लिए अंग्रेजी जानना जरूरी है। वे राष्ट्रीय व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति के विभाग चला सकते हैं और राष्ट्र को पश्चिम का उत्तम साहित्य, विचार और विज्ञान दे सकते हैं यह अंग्रेजी का उचित उपयोग होता है।'' इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा ''भारत को अपनी जलवायु, अपने ही प्राकृतिक सौन्दर्य और अपने ही साहित्य में फलना-फूलना होगा, फिर चाहे इंगलैण्ड के मुकाबले में कितना भी घटिया क्यों न हो।''

गांधीजी मातृभाषा को शिक्षा-माध्यम बनाने पर बड़ा जोर देते थे, और अंग्रेजी माध्यम से होने वाले आपराधिक अपव्यय को समाप्त करने के लिए अविलम्ब माध्यम परिवर्तन कराना चाहते थे, चाहे उससे उच्च शिक्षा में किंचित काल तक अस्तव्यस्ता ही क्यों न हो जाये। उनका विश्वास था कि ऐसा करने से पाठ्यपुस्तकों का अभाव तुरन्त दूर होगा, जिसकी दुहाई देकर लोग माध्यम नहीं बदलने देते।

राष्ट्र-भाषा : राष्ट्र भाषा के निर्णयार्थ गांधीजी ने पाँच निष्कर्ष बनाए थे और उन पर हिन्दी को पूरा उतरता पाया। जो लोग हिन्दी के राष्ट्र भाषा होने से अन्य प्रान्तीय भाषाओं को धक्का लगने की बात करते थे, उनका भय वे अज्ञानता से उत्पन्न मानते थे। वे राष्ट्र भाषा हिन्दी के भवन की आधार शिला प्रान्तीय भाषाएं बताते थे और एक भाषा को दूसरे की पूरक कहते थे। लिपि के सम्बन्ध में उनका कहना था कि– ''यदि मेरी चले तो मैं देवनागरी और उर्दू लिपि का सीखना अनिवार्य कर दूँ। रोमन लिपि उन्हें अस्वीकार थी।

उनका मत था कि प्रत्येक सुसंस्कृत भारतीय को अपनी प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त यदि वह हिन्दू है तो संस्कृत जानना चाहिए, यदि मुसलमान है तो अरबी, यदि पारसी है तो फारसी और इन सबको हिन्दी जानना चाहिए। उनका अनुभव था कि एक भाषा को अच्छी तरह सीख लेने पर अन्य भाषाएं सीखना कठिन न होगा। अतएव वे उच्च शिक्षा में प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था चाहते थे।

धर्म-शिक्षा : गांधीजी का कहना था कि ''मेरे लिए धर्म का अर्थ सत्य और अहिंसा है या यों कहिए केवल सत्य है, क्योंकि अहिंसा सत्य की खोज के लिए आवश्यक एवं एक अनिवार्य साधन होने के कारण वह सत्य में समाई हुई है। धर्म की शिक्षा के पाठ्यक्रम में अपने धर्म को छोड़कर अन्य सभी धर्मों के सिद्धान्त होने चाहिए, जिन्हें विद्यार्थी श्रद्धा भावना और उदार सहिष्णुता से समझें और सराहें। उन्हें किसी विरोधी आलोचक के भाषान्तर से न पढ़ा जाय, वरन् किसी भक्त की रचना के अध्ययन द्वारा समझा जावे।'' गांधीजी नीति को धर्म की सार वस्तु मानते थे और उसी की शिक्षा पर बल देते थे। सब धर्मों के इन समान तत्वों की शिक्षा वे शिक्षक के दैनिक जीवन एवं आचरण से प्राप्त करना चाहते थे। भारतवर्ष

में अनेक धर्म और अनेक सम्प्रदाय होने के कारण एकता के बजाए झगड़ा खड़ा होने का डर था। अतएव उन्होंने अपनी वर्धा शिक्षा योजना में धर्म शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं रखी थी, 'कौन कहता है कि इस शिक्षा में धार्मिक शिक्षा का अभाव है। मैंने इस योजना के द्वारा स्वावलम्बन के महान धर्म को पढ़ाने का प्रबंध किया है।

स्त्री शिक्षा : स्त्रियों के लिए महात्मा गांधी के मन में बड़ा आदर था और वे उनकी शिक्षा के हामी थे। उनका मत था कि स्त्रियों का प्रमुख कार्य क्षेत्र घर का जीवन होता है, अतएव उन्हें एक सफल गृहिणी और संतति के पोषण एवं प्रशिक्षण की पूरी शिक्षा दी जानी चाहिए।

आरम्भ में उनके और बालकों के विषय उभयनिष्ठ हो सकते हैं किन्तु आगे चलकर स्त्रियों के उपयुक्त विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। सह-शिक्षा के प्रश्न पर वे उदार दृष्टि रखते थे और आठ वर्ष तक उसे उचित मानते थे, उसके उपरान्त यदि बालक और बालिकाएं चाहें तो सोलह वर्ष तक साथ-साथ पढ़ सकते हैं। वे इसकी कठिनाइयों से अवगत थे कि बालिकाओं को आत्म-सुरक्षा का प्रशिक्षण अनिवार्य चाहते थे कि बालिकाओं को आत्म-सुरक्षा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाए, जिससे वे दुष्टों की छेड़-छाड़ से अपनी रक्षा कर सकें तथा दहेज के भूखे नव-युवकों को अच्छा सबक सिखा सकें। छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिए वे पुरुषों की अपेक्षा माताओं को अधिक उपयुक्त समझते थे।

सेक्स शिक्षा : सेक्स शिक्षा पर गांधीजी के विचार आधुनिकतम थे। वे किशोरों को प्रजनन अंगों तक का ज्ञान कराने के पक्ष में थे, किन्तु वे इस शिक्षा का उद्देश्य सेक्स भावना का शोधन, उसका पूर्ण नियंत्रण तथा उस पर विजय प्राप्त करना मानते थे। इस विषय के अध्यापन के लिए ऐसे ही शिक्षकों को उपयुक्त समझते थे, जिन्होंने आत्म संयम और अपने भावावेगों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया हो।

शारीरिक शिक्षा : वह शरीर को स्वस्थ रखना परम आवश्यक समझते थे और उनका यह विश्वास था कि उद्योग करने में बालकों को पर्याप्त शारीरिक परिश्रम करने का अवसर मिलेगा। वे अर्थ-साध्य खेलों के पक्ष में न थे, वरन् भारतीय खेलों को जो बिना खर्च के खेले जा सकते हैं उचित समझते थे। वे स्त्रियों के लिए टहलने जाना और वाहन प्रयोग की अपेक्षा पैदल चलना लाभप्रद मानते थे। इसमें वे सरलता और आत्मनिर्भरता पर विशेष बल देते थे।

वयस्क शिक्षा : वयस्कों की निरक्षरता दूर करने पर गांधीजी इतना बल नहीं देते थे, जितना उसकी अज्ञानता दूर करने पर। अतएव ग्रामीणों के मस्तिष्क को शिक्षित करने के लिए वे ऐसी शिक्षा की व्यवस्था चाहते थे, जो उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी जीवन से सम्बद्ध हो। वह उन्हें बुरे आचार-व्यवहार जैसे बाल विवाह, मद्यपान, छुआछूत, अंधविश्वास आदि को त्यागने की प्रेरणा दे। वह उनके दैनिक कार्य-कलापों को आधार मानकर दी जावे, जिससे उनके मन में और अधिक ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा बढ़े और साक्षरता को स्थायी बना सके। उनकी दो प्रमुख समस्यायें भोजन और कपड़े की होती है। उनके हल के लिए गांधी जी बेसिक शिक्षा की भाँति किसी जीवन सम्बन्धी उद्योग द्वारा उन्हें शिक्षा देने के पक्ष में थे। इस शिक्षा से वे उनमें परिवर्तन और सुधार की भावना उत्पन्न करना चाहते थे, जिससे वे स्वस्थ नैतिक जीवन सहकारिता पूर्वक व्यतीत कर सकें।

उच्च शिक्षा : गांधीजी शिक्षा का भार शासन पर न डालना चाहते थे वरन् उसे जनता तथा निजी संस्थाओं का उत्तरदायित्व मानते थे। वे जनता के करों से विश्वविद्यालय चलाने के पक्ष में न थे। विश्वविद्यालयों को केवल परीक्षण संस्थायें होना चाहिए जो अपने प्राप्त शुल्क पर स्वावलंबी बनें। उनका पक्का विश्वास था कि कला विषयों को पढ़ाना नितांत अपव्यय है, क्योंकि इससे शिक्षित वर्ग में बेकारी बढ़ती है और यह छात्रों के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को भी नष्ट करते हैं। ''समस्त व्यावसायिक शिक्षा को वे राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप करना चाहते थे और उसका उत्तरदायित्व औद्योगिक संस्थानों पर डालना चाहते थे, जो अपनी आवश्यकताओं के अनुसार व्यक्तियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करें। टाटा को अपने लिए यांत्रिकों का प्रशिक्षण करना चाहिए, बिरला को अपने कामगारों को प्रशिक्षित बनाना चाहिए। अस्पतालों को अनुदान प्राप्त कर डॉक्टरों की शिक्षा देनी होगी और बड़े-बड़े फार्मों को कृषि शिक्षा का भार लेना होगा। सैद्धान्तिक परीक्षा उत्तीर्ण हो जाने के बाद क्षेत्रीय अनुभव देने की वर्तमान पद्धति उन्हें मान्य न थी। वे अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करने पर बल देते थे। उच्च शिक्षा के लिए विदेशों में पढ़ाना उन्हें पसंद न था, क्योंकि विदेशी शिक्षा प्राप्त कर लेने पर नवयुवक देशीय आवश्यकताओं के काबिल नहीं रहते।

गांधीजी के ऐसे विचारों के कारण कभी-कभी लोग उन्हें वैज्ञानिक शिक्षा का विरोधी कह बैठते हैं। किन्तु यह असत्य है, क्योंकि उन्होंने कहा कि ''मैं विभिन्न विज्ञानों की शिक्षा की महत्ता को मानता हूँ। मगर हमारे बच्चों को भौतिकी और रसायन के ज्ञान की अति नहीं करना चाहिए। हम खर्चीली प्रयोगशालाएं और ऊँचे भव्य भवन बनवाने की हैसियत में नहीं हैं। हमें सुगमता से देश में प्राप्य यंत्रों और औजारों से ही काम चलाना होगा। मेरी योजना के अन्तर्गत अधिक अच्छे पुस्तकालय, उत्तम प्रयोगशालाएं तथा उच्च अनुसंधानालय होंगे। इनमें ऐसे वैज्ञानिक, यांत्रिक और विशेषज्ञ काम करेंगे जो दूसरों की नकल न करके वास्तविक सच्ची शोध करेंगे जिसका राष्ट्रीय आवश्यकताओं से सीधा सम्बन्ध होगा।

उनका स्पष्ट मत था कि ''विश्वविद्यालयों को शानदार इमारतों और सोने चांदी के भण्डारों की कभी आवध्यकता नहीं है। उसे तो सुबुद्ध जनता की सद्भावना और सजग अध्यापकों की कार्यशीलता चाहिए, जो सत्य की खोज में निरन्तर लगे रहें। उनका उद्देश्य भारत की विभिन्न संस्कृतियों का सामंजस्यीकरण और संश्लेषण करके राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाता है।

–संदर्भ : गांधी शताब्दी स्मारक ग्रंथ

(बुनियादी शिक्षा : एक कोशिश से साभार)

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2011

शिक्षा के शिल्पियों का सम्मान

❑ मुकेश व्यास

शिक्षक समाज व राष्ट्र को नई दिशा दिखाने वाले दीपक एवं उच्च मानवीय गुणों तथा संस्कारों की स्थापना करने वाले महापुरुष होते हैं। शिक्षकों की इसी विशिष्ट स्थिति को मान्यता प्रदान करने के लिए उनको सम्मानित करने की उज्ज्वल परम्परा सदियों से रही है। भारत के द्वितीय राष्ट्रपति एवं उद्भट विद्वान, मनीषी व चिन्तक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने अपने जन्मदिन 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में अर्पित कर शिक्षक समाज को जो गरिमा प्रदान की, वह स्वयंमेव एक मिसाल है। प्रतिवर्ष 5 सितम्बर, शिक्षक दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली एवं विभिन्न राज्यों में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित कर आदर्श शिक्षकों को पुरस्कृत किया जाता है।

शिक्षक सम्मान की इसी विमल परम्परा के अन्तर्गत 5 सितम्बर 2011 को राजधानी जयपुर स्थित बिड़ला सभागार में भव्य शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। शिक्षक सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री शिवराज पाटील थे और अध्यक्षता की माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने। प्रदेश के माननीय शिक्षामंत्री मास्टर भँवरलाल मेघवाल, संस्कृत शिक्षामंत्री श्री बृजकिशोर शर्मा एवं शिक्षा राज्य मंत्री श्री मांगीलाल गरासिया विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह में उपस्थित थे।

शिक्षकों के सम्मान में प्रकृति भी जैसे मेहरबान हो रही थी। आसमान में उमड़ते बादलों ने रिमझिम-रिमझिम वर्षा कर अतिथि व शिक्षक महानुभावों का स्वागत किया तो वहीं प्रफुल्लित अधिकारी, शिक्षक, शिक्षार्थी सब पलकें बिछाए आतुर खड़े थे। सभागार के बाहर जैसे ही मुख्य अतिथि जी पधारे- सलामी देकर उनका भावभीना स्वागत किया गया। प्रवेश द्वार पर बालिकाओं द्वारा रोली, मोली, अक्षत व पुष्पों द्वारा अभिनन्दन किया गया। सब अद्भुत व प्रसन्नताप्रदायक। बिड़ला ऑडिटोरियम के बाहर परिसर में वर्षा की रिमझिम, तो भीतर संगीत की मधुर स्वर लहरियाँ, आयोजकों के चेहरों पर आतिथ्य भाव और काम में चुस्ती; अतिथि महानुभावों द्वारा शिक्षकों को सम्मानित करने का भाव, फोटोग्राफरों व मीडिया की चुस्ती-फुर्ती सबमें होड़ लगी हुई थी अपने आदर्श शिक्षकों के सम्मान में सहयोग देने की।

ठीक ग्यारह बजे अतिथि महानुभावों का सभागार में पदार्पण हुआ। राजस्थान की अतिथि देवो भवः परम्परा के अनुरूप सबने खड़े होकर अतिथियों का अभिनन्दन किया तो मंच से अतिथि महानुभावों ने हाथ जोड़कर अपनी विनम्रता प्रकट की। माँ सरस्वती की प्रतिमा एवं डॉ. राधाकृष्णन् के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ ही इस भव्य समारोह का आगाज हुआ। शिक्षक कलाकारों द्वारा सरस्वती वन्दना वर दे ! वर दे ! वीणावादिनी वर दे ! की भावमय प्रस्तुति के बाद माननीय अतिथि वृन्द का फूलमालाओं एवं पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। स्वागत गीत की समवेत प्रस्तुति के पश्चात् स्वागत भाषण देने पधारे प्रमुख शासन सचिव श्री अशोक सम्पतराम।

अतिथि महानुभावों एवं सम्मानित हो रहे शिक्षकों का स्वागत करते हुए **श्री अशोक सम्पतराम** ने कहा कि माता-पिता के पश्चात् शिक्षक का अहम् स्थान होता है। देश व प्रदेश में समर्पण एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने वाले अनगिनत शिक्षक हैं जो भावी पीढ़ी को अक्षर-अंक का ज्ञान देने के साथ ही उनमें संस्कारों का बीजारोपण कर रहे हैं। समारोह में महामहिम राज्यपाल एवं माननीय मुख्यमंत्री दोनों की उपस्थिति पर हर्ष प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि अनिवार्य शिक्षा अधिनियम की पालना करने में राजस्थान पीछे नहीं रहेगा। राजस्थान के शिक्षक मेहनती और अनुशासनप्रिय हैं और वे अपने कार्यों से प्रदेश का सिर ऊँचा

रखेंगे। आपने सम्मान हेतु चुने गए शिक्षकों को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

स्वागत भाषण के पश्चात् शिक्षकों के सम्मान में लिखी गई, प्रशस्ति पुस्तिका-2011 एवं शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के अन्तर्गत पाँच विधाओं में प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं अतिथि महानुभावों ने किया। यह उल्लेखनीय है कि प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक साहित्यकारों की कलम से प्रसूत रचनाओं से हिन्दी कविता, हिन्दी विविधा, राजस्थानी विविधा, शिक्षा साहित्य एवं बाल साहित्य की कुल पाँच पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। सन् 1967 में शुरू हुई इस प्रकाशन योजना के अन्तर्गत अब तक 226 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। अतिथि महानुभावों ने इन प्रकाशनों का अवलोकन कर इनकी तारीफ की।

इस अवसर पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष **डॉ. सुभाष गर्ग** ने शिक्षकों के सामाजिक सरोकारों एवं दायित्वों को रेखांकित करते हुए कहा कि संसार में आने वाला हर बच्चा कुछ स्वप्न लेकर आता है, जिन्हें हकीकत में बदलने का कार्य शिक्षक करते हैं। अतः शिक्षकों को संकल्पी एवं दृढ़ निश्चयी होना चाहिए। राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख करते हुए डॉ. गर्ग ने कहा कि शिक्षक जनहितैषी योजनाओं की जानकारी बच्चों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का कार्य भी करें।

शिक्षा राज्य मंत्री **श्री मांगीलाल गरासिया** ने शिक्षकों को बधाई एवं शुभकामनाएँ अर्पित करते हुए कहा कि शिक्षकों के विद्यादान एवं संस्कार प्रदान करने के कार्यों से ही समाज आगे बढ़ता है। आपने कहा कि शिक्षक न केवल कक्षागत शिक्षण में निहित पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से पाठ्यक्रम का ही अध्ययन करवाते हैं, वरन वे अनेक पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियों के माध्यम से अपने शिष्यों के व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास भी करते हैं। आपने शिक्षकों से अपील की कि वे अपनी साधना एवं श्रम के बल पर प्रतिभावान वैज्ञानिकों, चिकित्सकों, इंजीनियरों आदि की शृंखला तैयार करें। आदर्श नागरिकों के निर्माण का कार्य शिक्षक ही कर सकते हैं।

समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्कृत शिक्षामंत्री **श्री बृजकिशोर शर्मा** ने कहा कि शिक्षकों का सम्मान दरअसल ज्ञान का सम्मान है; यह उनके द्वारा समाज को दिए गए ज्ञान सहयोग का एक रूप है। गुरु को गोविन्द से बड़ा बताते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षकों को सम्मानित करते हुए वे स्वयं गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। संस्कृत शिक्षा विभाग के अन्तर्गत पिछले वर्षों में खोले गए विद्यालयों का उल्लेख करते हुए आपने कहा कि वर्तमान समय में संस्कृत शिक्षा के लिए स्वर्णिमकाल है।

शिक्षकों के सम्मान में रचा यह अनुष्ठान दर्शकों को हर्षित व रोमांचित करता, उनकी तालियों की गड़गड़ाहट के साथ आगे बढ़ रहा था। संकल्पों के भाव हृदय में हिलोरे ले रहे थे। सम्पूर्ण साक्षरता व सर्व शिक्षा के लक्ष्य हासिल कर लेने के लिए सब उतावले हो रहे थे। इन्हीं उमंगों के बीच अपना उद्बोधन देने पधारे माननीय शिक्षामंत्री **मास्टर भँवरलाल मेघवाल**। करतल ध्वनि के बीच शिक्षामंत्री महोदय ने विभाग के लिए गर्व का विषय बताया कि आज वर्षों बाद शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए प्रदेश के दोनों सिरमौर, महामहिम राज्यपाल एवं माननीय मुख्यमंत्री हमारे बीच पधारे हैं। आपने कहा कि राजनीति में आने से पहले वे 10 वर्ष शिक्षक रहे हैं और आज भी स्वयं को मंत्री से पहले शिक्षक पाते हैं। उन्हें शिक्षक कहलाने में गर्व होता है, डॉ. राधाकृष्णन् की तरह।

शिक्षा को जीवनदायी और संस्कार-प्रदायनी बताते हुए शिक्षामंत्री महोदय ने फरमाया कि शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है। बुलन्दियों तक वे ही लोग पहुँचे और स्थापित हुए हैं जिन्होंने शिक्षा को गले लगाया है। शिक्षित व्यक्ति का कार्य एवं व्यवहार विलक्षण होता है। परिस्थितियों को समझने एवं उनसे निपटने का शिक्षित व्यक्ति का कौशल अशिक्षित की तुलना में वैज्ञानिक एवं सुनियोजित होता है। आपने आह्वान किया कि शिक्षक सम्पूर्ण निष्ठा एवं लगन से अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के प्रावधानों को लागू करने के लिए काम करें।

विभाग की प्रगति का लेखाजोखा बताते हुए आपने बताया कि प्रदेश के 4500 विद्यालयों में आई.सी.टी. योजना के अन्तर्गत कम्प्यूटर शिक्षा दी जा रही है। तीसरे चरण में 2000 अतिरिक्त विद्यालयों को इससे जोड़ा जा रहा है। हम ऐसे प्रयास में हैं कि प्रदेश में कम्प्यूटर शिक्षाविहीन एक भी विद्यालय न रहे। प्रदेश में प्राथमिक स्तर से ही अंग्रेजी शिक्षण करवाया जा रहा है। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा दी जा रही है। प्रदेश में अध्यापकों के 41,000 वरिष्ठ अध्यापकों के 30,000 तथा माध्यमिक विद्यालयों के 2100 प्रधानाध्यापक पदों पर भर्ती की जा रही है। इसी प्रकार 1000 प्रयोगशाला सहायक तथा 1500 शारीरिक शिक्षकों के पदों पर भी भर्ती की जा रही है। हमारा प्रयास है कि हमारे शिक्षकों एवं शिक्षा अधिकारियों को समय पर प्रमोशन मिले। इस उद्देश्य से हमने जिला शिक्षा अधिकारियों के सभी पदों को पदोन्नति करके भर दिया। उच्च स्तर पर सभी शिक्षा अधिकारियों के पद भरे रहने से पर्यवेक्षण एवं निर्देशन कार्य को गति मिलती है जो अन्ततः गुणवत्ता विकास में सहायक होती है। शिक्षामंत्री महोदय ने शिक्षकों को बधाई देते हुए राज्य के कोने-कोने में शिक्षा की ज्योति जलाने की अपील की।

समारोह को सम्बोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री **श्री अशोक गहलोत** ने प्रसन्नता व्यक्त की कि आज आदर्श शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए महामहिम राज्यपाल महोदय हमारे मध्य पधारे हैं। डॉ. राधाकृष्णन् का स्मरण करते हुए उन्होंने शिक्षकों से कहा कि वे उनकी विरासत के अनुरूप स्वयं को प्रस्तुत करें। शिक्षक का पद बड़ा महत्वपूर्ण है। बच्चे के लिए माता-पिता के बाद सबसे बड़ा स्थान गुरु का ही है। यही कारण है कि शिक्षक का सम्मान सदा-सदा से रहा है। शिक्षकों के चरित्र से ही समाज एवं राष्ट्र का चरित्र बनता है। अतः शिक्षक को अपने आदर्श स्वरूप को बनाए रखना चाहिए। किसी भी मुल्क की पहचान वहाँ के शिक्षक होते हैं। इसी तथ्य को समझकर हमने शिक्षकों को यथोचित मान सम्मान देने का संकल्प लिया है। राजीव गाँधी का देश को 21वीं सदी में ले जाने का स्वप्न कोई और नहीं, शिक्षक ही साकार कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री महोदय ने कहा कि हमारा संकल्प सभी बच्चों को स्कूलों में दाखिल करवाने तथा उन्हें गुणवत्तायुक्त शिक्षा दिलाने का है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम हमारे इस संकल्प को पूरा करने में निश्चय ही मील का पत्थर बनकर सामने आएगा। केरल का उदाहरण देते हुए मुख्यमंत्री जी ने कहा कि जो प्रदेश शिक्षा में आगे हैं, वे शिक्षा में भी उतने ही अग्रणी हैं। आपने शिक्षा के विकास में दानदाताओं का सहयोग लेने पर भी बल दिया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री महोदय ने घोषणा की कि पुरस्कृत शिक्षकों के सम्मान में दी जा रही 11000 रुपये की राशि को बढ़ाकर वर्ष 2004 से 21,000 रुपये किया जा रहा है। इसका उपस्थितजन ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। इसी प्रकार अजमेर में एकेडमिक कॉलेज खोला जाएगा जिसमें शिक्षकों को प्रशिक्षण दिलाया जाएगा।

शिक्षा के बिना जीवन में अंधेरा बताते हुए मुख्यमंत्री महोदय ने अपील की कि शिक्षक व अधिकारी अपनी-अपनी भूमिका का स्वयं निर्धारण करके शिक्षा प्रसार का कार्य करेंगे और उनकी इस समवेत शक्ति से राजस्थान शीघ्र ही अग्रणी प्रदेश के रूप में अपनी पहचान बना सकेगा। ...और अब आये सम्मान के क्षण, समाज के सपूत शिक्षकों को अभिनन्दन करने के गौरवशाली क्षण। कैमरामेनों की चकाचौंध, आयोजकों की चुस्ती-फुर्ती, दर्शकों की करतल ध्वनि। मंच से नाम पुकारे जाने पर शिक्षक का मंच की ओर बढ़ना और दर्शकों की करतल ध्वनि में जैसे कोई संगीत बज रहा प्रतीत होता था। एक-एक कर साठ शिक्षकों का सम्मान एक इतिहास रच गया। सम्मान में शिक्षकों को माल्यार्पण, श्रीफल, शॉल, प्रमाण-पत्र, स्मृति चिह्न, ग्यारह हजार रुपये का चैक, शिविरा प्रकाशन की पुस्तकें व प्रशस्ति-पुस्तिका भेंट किए गए। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच माननीय अतिथि महानुभावों ने शिक्षकों को यह सम्मान अर्पित किया।

सम्मान परिक्रमा पूर्ण होने के पश्चात् उद्बोधन देने पधारे मुख्य अतिथि राजस्थान के महामहिम राज्यपाल **श्री शिवराज पाटील।** शिक्षक सम्मान समारोह में स्वयं की उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए महामहिम ने कहा कि महान् मनीषी डॉ. राधाकृष्णन् वस्तुतः भारतीय संस्कृति के प्रबल पक्षधर एवं ज्ञाता थे। उनका शिक्षक से राष्ट्रपति बनना शिक्षकों के लिए अत्यन्त गौरव का विषय है।

गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, शंकराचार्य, कबीर, विवेकानंद एवं ईसा मसीह को शिक्षक के रूप में परिभाषित करते हुए आपने गुरु शब्द की व्याख्या की। शिवाजी महाराज की शिक्षा उनकी माँ जीजाबाई ने की थी। इस प्रकार माँ भी बच्चे की गुरु है, गुरु ही नहीं बल्कि प्रथम गुरु। गुरु वे होते हैं जो दिशा दिखाते हैं और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। गुरुजन को चाहिए कि वे शिष्यों के जीवन में अच्छाइयाँ भरें तथा बुराइयों को दूर करें।

शिक्षण व्यवसाय को अन्य किसी भी व्यवसाय से उत्तम, सर्वोत्तम बताते हुए महामहिम राज्यपाल महोदय ने फरमाया कि वे सिर्फ नौकरी के लिए नहीं वरन् सेवाभावना से शिक्षण कार्य करवाएँ। शिक्षा से अच्छे नागरिक बनें और उनके चरित्र में सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की स्थापना हो। बच्चों में कौशल अभिवृद्धि हो ताकि वे आजीविका कमा सके। अपरिग्रह की चर्चा करते हुए महामहिम ने कहा कि हमें ऐसी शिक्षा मिले जो लालसा को खत्म करें। अंधकार की ओर से प्रकाश एवं अज्ञान की ओर से ज्ञान मार्ग ही शिक्षा मार्ग है जिसका हमें पथिक बनना चाहिए। कम्प्यूटर एवं अन्य प्रौद्योगिकी साधनों के संदर्भ में राज्यपाल महोदय ने कहा कि ये शिक्षक की जगह नहीं ले सकते। शिक्षा वह है जो अन्दर से आती है, अतः कभी भीतर भी देखने का प्रयास करें। राज्यपाल महोदय के चिंतन प्रधान उद्बोधन के दौरान स्वप्रेरित एकाग्र मौन तो स्वतः स्फूर्त तालियों की गुंजन का अद्भुत माहौल रहा।

सम्मान समारोह में महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री, माननीय शिक्षामंत्री, अतिथि महानुभावों, दर्शकों, मीडिया, सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए शिक्षा सचिव **श्रीमती वीनू गुप्ता** ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय की भावना के अनुरूप एक-एक बच्चे को स्कूल में प्रवेश दिलाकर उनके ठहराव को सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाएगा आपने सम्मानित हुए शिक्षकों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि वे भविष्य में और अधिक उत्साह से अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। राष्ट्रगान जन गण मन की समवेत प्रस्तुति के साथ यह गरिमामय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा 'हंस' एवं ज्योति जोशी ने संयुक्त रूप से किया।

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर दिनांक 4 सितम्बर 2011 को पुरस्कार हेतु चयनित शिक्षकों के सम्मान में भव्य सांस्कृतिक संध्या का आयोजन बिड़ला सभागार में किया गया जिसके मुख्य अतिथि निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान श्री आलोक गुप्ता थे। दीप प्रज्वलन के पश्चात मंगलाचरण, गणेश वन्दना से प्रारम्भ हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम में राज्य के विभिन्न जिलों से आए शिक्षक कलाकारों ने भव्य प्रस्तुतियाँ देकर दर्शकों की वाहवाही लूटी। इस अवसर पर प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक डॉ. वीना प्रधान सहित गणमान्य नागरिक एवं शिक्षा अधिकारी उपस्थित थे।

—वरिष्ठ प्रकाशन सहायक, शिविरा पत्रिका

राज्य स्तर पर सम्मानित शिक्षकों की नामावली, 2011

1. **श्री भूरा राम चौहान,** व्याख्याता (हिन्दी), रा.उ.मा.वि., जान्दवा (चूरू)
2. **श्री कुलदीप कुमार व्यास,** प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., लोहा, जिला चूरू
3. **श्रीमती डी. कविता,** व्याख्याता (अंग्रेजी), रा.बा.उ.मा.वि., निम्बाहेड़ा जिला चित्तौड़गढ़
4. **श्री महेश बाबू शर्मा,** व.अ., राज. सिन्धी मा.वि., जवाहर नगर, जयपुर
5. **श्री राजेश कुमार मुखीजा,** व.अ., रा.उ.मा.वि., चांदोली जिला अलवर
6. **श्री महेन्द्र सिंह शेखावत,** व्याख्याता (राज. विज्ञान), रा.उ.मा.वि., मलकेड़ा (सीकर)
7. **श्री दयाकान्त सक्सेना,** प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., मानिया जिला धौलपुर
8. **श्रीमती पार्वती देवी कोटिया,** प्र.अ., रा.बा.मा.वि., गरीबनगर, उदयपुर
9. **श्री राजेश कटारा,** व.अ., रा.मा.वि., सैंत, पं.स. कुम्हेर जिला भरतपुर
10. **श्रीमती रेखा त्रिपाठी,** व.अ., रा.मा.वि., अरड़का जिला अजमेर
11. **श्री बाबूलाल गुर्जर,** प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., जारोड़ा (नागौर)
12. **श्री विमल कुमार चौबीसा,** व्याख्याता (जीव विज्ञान), राज. नूतन उ.मा.वि., बांसवाड़ा
13. **श्री रामेश्वर प्रसाद जीनगर,** प्र.अ., रा.मा.वि., पालड़ी जिला भीलवाड़ा
14. **श्री रोशन लाल देवपुरा,** शा.शि., रा.उ.मा.वि., गाडरमाला (भीलवाड़ा)
15. **श्री भंवर सिंह उदावत,** प्र.अ. (पावे) राज. मा.वि., मोहराई (पाली)
16. **श्री सीताराम शर्मा,** व.अ., रा.मा.वि., दौलतपुरा (कोटड़ा) जयपुर-II
17. **श्री फूलशंकर मीणा,** प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., आसपुर (डूंगरपुर)
18. **श्रीमती अन्जू शर्मा,** व.अ., रा.बा.उ.मा.वि., श्रीपुरा, कोटा
19. **श्रीमती कैलाशी देवी गुर्जर,** प्र.अ. (पावे), रा.मा.वि., बून्दी सिटी (बून्दी)
20. **श्रीमती रामेश्वरी,** वशाशि., रा.बा.उ. मा.वि., रींगस (सीकर)
21. **श्री गजेन्द्र सिंह राणावत,** व्याख्याता (कृषि), राज. उ.मा.वि., सुमेरपुर (पाली)
22. **श्री महावीर प्रसाद जाट,** व.अ., रा.मा.वि., हुकमपुरा (भीलवाड़ा)
23. **श्री कैलाश चन्द्र कुमावत,** व.अ., सेठ आनन्दीलाल पोद्दार रा.उ.मा.वि., मूक बधिर विद्यालय, जयपुर
24. **श्री गणपत सिंह जैतावत,** शा.शि. राज. उ.प्रा.वि., शक्ति नगर, जोधपुर
25. **श्री सीताराम जांगिड़,** प्र.अ., राज. रतनलाल मोहता, उ.प्रा.वि., राजगढ़ (चूरू)
26. **श्रीमती मृदुला शर्मा,** अध्या. राज. प्रावि. नानकपुरा बीलवा पं.स. सांगानेर जिला जयपुर
27. **श्री कैलाश चन्द शर्मा,** राज. उ.प्रा.वि., टीबाश्योपुर पं.स. सांगानेर (जयपुर)
28. **श्रीमती वर्षारानी,** अध्यापिका, रा.उ.प्रा.वि., मोरसराय, अलवर
29. **श्री बलदेव प्रसाद यादव,** अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि., खिजूरिया पं.स. सांभर जिला जयपुर
30. **श्री लक्ष्मण सिंह,** अध्यापक, रा.मा.वि., अरोदा, तहसील नदबई, भरतपुर
31. **श्री बनवारी लाल राड,** अध्या., रा.मा.वि., बलोद छोटी पं.स. फतेहपुर (सीकर)
32. **श्रीमती पूनम चतुर्वेदी,** अध्या. रा.उ.प्रा.वि., खेड़ियाजगा पं.स. नदबई (भरतपुर)
33. **श्री भरत भावसार,** अध्या. रा.प्रा.वि., कलासुवा मोहल्ला, जौहरिया पाड़ा गढ़ी (बांसवाड़ा)
34. **श्री पंकज शाह,** अध्यापक, रा.प्रा.वि., गोठमहुड़ी पं.स. आसपुर (डूंगरपुर)
35. **श्री श्रवण कुमार चौहान,** प्र.अ., रा.उ.प्रा.वि., तालकिया, पं.स. जैतारण जिला पाली
36. **श्री अचल कुमार मालोत,** शा.शि., रा.उ.प्रा.वि., खान्दू कॉलोनी, बांसवाड़ा
37. **श्रीमती निर्मला शर्मा,** अध्या. रा.उ.प्रा.वि., सांगानेर टाउन, जयपुर
38. **श्री सुभाष कुमार,** अ., रा.उ.प्रा.वि., अलमदीका, प.स. किसनगढ़ (अलवर)
39. **श्री उमेश कुमार शर्मा,** प्र.अ., राउप्रावि, नं. 1 गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर
40. **श्री उमेश चन्द्र शर्मा,** उपाचार्य (व्याख्याता) डाईट भरतपुर
41. **श्रीमती शर्मिन्द कौर,** अध्या., रा.उ.प्रा.वि., 12 क्यू. (श्रीगंगानगर)
42. **श्रीमती राजभारती शर्मा,** अध्या., रा.मा.वि. जोधासर तह. श्रीडूंगरगढ़, जिला बीकानेर
43. **श्री कान्तिलाल मालवीय,** प्र.अ., रा.प्रा.वि.,बेड़ा, पं.स. बाली (पाली)
44. **श्री जितेन्द्र सिंह चौहान,** शा.शि., रा.उ.प्रा.वि., माण्डवा, जिला सिरोही
45. **श्री अशोक कुमार यादव,** शा.शि., रा.मा.वि., बाडोलिया (चित्तौड़गढ़)
46. **डॉ. अनिल कुमार,** व.अ. ग्रेड-I (उप निरीक्षक), कार्यालय निदेशक, संस्कृत शिक्षा, राज. जयपुर
47. **श्रीमती गायत्री पाठक,** व.अ. ग्रेड-I, राजकीय वरि. उपा. संस्कृत विद्यालय, बगरू (जयपुर)
48. **श्री सोहनलाल कुमावत,** व.अ. ग्रेड-I, राजकीय वरि. उपा. संस्कृत विद्यालय, दातारामगढ़ जिला सीकर
49. **श्री संजय कुमार शाह,** व.अ. ग्रेड-I, राज.वरि. उपा. संस्कृत विद्या. पीठ (डूंगरपुर)
50. **श्री सांवरमल जाट,** व.अ. ग्रेड-II, राज. उच्च प्रा. संस्कृत विद्या. सुन्दरपुर (जयपुर)
51. **श्री मुकेश कुमार त्रिवेदी,** व.अ., ग्रेड-II, राज. उच्च प्रा. संस्कृत विद्या. लाडी की ढाणी, जयपुर
52. **श्रीमती आशादेवी नेगी,** व.अ., ग्रेड-II, राज. वरि. उपा. संस्कृत विद्या. जयपुर
53. **श्री गोविन्द सिंह राठौड़,** व.अ., ग्रेड-II, राज. उ.प्रा. संस्कृत विद्यालय, सुखदेव की ढाणी (जयपुर)
54. **श्री महेन्द्र कुमार शर्मा,** अ. ग्रेड-III, कार्यालय संभागीय संस्कृत शिक्षा, जयपुर
55. **श्री मुन्नालाल जाट,** अ. ग्रेड-III, राजकीय व. उपा. संस्कृत विद्या. कालच्या, जिला जयपुर
56. **श्री रमेश चन्द्र शर्मा,** अ. ग्रेड-III, राज. प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय, चौमूं, जिला जयपुर
57. **श्रीमती बिन्दु शर्मा,** अध्या. ग्रेड-III, राज. उ.प्रा. संस्कृत विद्यालय, हाथोज, जयपुर
58. **श्री अशोक कुमार दीक्षित,** अ. ग्रेड-III राज. उ.प्रा. संस्कृत विद्यालय नाथीवाली पं.स. मूण्डोता (जयपुर)
59. **श्री सतीश कुमार पाराशर,** अ. ग्रेड-III, राज. उ.प्रा. संस्कृत विद्यालय, महुआ, दौसा
60. **श्री इन्द्रलाल शर्मा,** अध्या. ग्रेड-III, राज. प्रवे. संस्कृत विद्यालय, बल्लूवाली ढाणी जिला सीकर

□ 1. कक्षा 12 की अंक विभाजन योजना। □ 2. प्रतिदिन विद्यालय बन्द होने पर सभी कक्षा-कक्षों की जाँच बाबत। □ 3. गैर सरकारी विद्यालयों द्वारा नियम विरुद्ध कक्षा 6 के साथ कक्षा 7 व 8 संचालन बाबत। □ 4. बेशी/अनुपयोगी सामान एवं अभिलेख निस्तारण बाबत। □ 5. नियमित परीक्षार्थियों के परीक्षा आवेदन पत्र ऑन लाइन भरने का व्यय छात्रनिधि से करने बाबत। □ 6. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण शिविरों का आयोजन। □ 7. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण व्यवस्था।

1. कक्षा 12 की अंक विभाजन योजना

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • परिपत्र • समसंख्यक परिपत्र दिनांक 25.07.2011 के द्वारा कक्षा 10 एवं 12 में विषयवार मूल्यांकन के लिए अंक विभाजन योजना जारी की गई थी। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा सत्रांक योजना जारी की गई है। सत्रांक योजना को ध्यान में रखते हुए कक्षा 12 में विषयवार मूल्यांकन की अंक विभाजन योजना आंशिक संशोधन कर जारी की जा रही है। सभी विद्यालय इसी अनुरूप विषयवार मूल्यांकन करेंगे। यह अंक विभाजन शैक्षिक सत्र 2011-12 से लागू माना जावेगा। • ह. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22497/कक्षोन्नति/2011-12/ दिनांक 30.8.2011

परिशिष्ट-2

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
विषयवार अंक विभाजन (कक्षा 12 के लिए सत्र 2011-12 से लागू)

क्र. सं.	विषय	सामयिक परख				अर्द्धवार्षिक परीक्षा			कुल योग
		प्रथम परख	द्वितीय परख	तृतीय परख	योग	प्रश्नपत्र	प्रायोगिक	योग	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
अ- अनिवार्य विषय									
1.	हिन्दी	10	10	10	30	70		70	100
2.	अंग्रेजी	10	10	10	30	70		70	100
3.	राजस्थान अध्ययन (स्थानीय स्तर पर मूल्यांकन)	10	10	10	30	70		70	100
ब- वैकल्पिक विषय									
	(कला वर्ग)								
1.	मनो.विज्ञा./भूगोल/ गृह विज्ञान	10	10	10	30	40	30	70	100
2.	संगीत/चित्रकला	10	10	10	30	30	40	70	100
3.	कम्प्यूटर विज्ञान/इन्फोरमेटिक्स प्रेक्टिस/मल्टिमिडिया वेबटेक	10	10	10	30	40	30	70	100
4.	अन्य सभी विषय (बोर्ड द्वारा संचालित)	10	10	10	30	70		70	100
	(विज्ञान वर्ग)								
1.	भौतिक/रसायन/जीव विज्ञान/भू. विज्ञान	10	10	10	30	40	30	70	100
2.	गणित	10	10	10	30	70		70	100
3.	कम्प्यूटर विज्ञान/ इन्फोरमेटिक्स प्रेक्टिस/ मल्टिमिडिया वेबटेक	10	10	10	30	40	30	70	100

	(कृषि विज्ञान के लिए विषय)								
1.	कृषि विज्ञान	10	10	10	30	40	30	70	100
2.	जीव विज्ञान	10	10	10	30	40	30	70	100
3.	रसायन विज्ञान/ भौतिक विज्ञान	10	10	10	30	40	30	70	100
4.	गणित	10	10	10	30	70		70	100
5.	कम्प्यूटर विज्ञान/ इन्फॉरमेटिक्स प्रेक्टिस/ मल्टिमिडिया वेबटेक	10	10	10	30	40	30	70	100
	(वाणिज्य वर्ग)								
1.	व्यवसाय अध्ययन	10	10	10	30	70		70	100
2.	हिन्दी व अंग्रेजी टंकण	5+5	5+5	5+5	15+15	35+35		35+35	50+50
3.	हिन्दी शीघ्र लिपि एवं टंकण लिपि	5+5	5+5	5+5	15+15	35+35		35+35	50+50
4.	अंग्रेजी शीघ्र लिपि एवं टंकण लिपि	5+5	5+5	5+5	15+15	35+35		35+35	50+50
5.	लेखाशास्त्र	10	10	10	30	70		70	100
6.	अर्थशास्त्र	10	10	10	30	70		70	100
7.	गणित	10	10	10	30	70		70	100
8.	कम्प्यूटर विज्ञान/ इन्फॉरमेटिक्स प्रेक्टिस/ मल्टिमिडिया वेबटेक	10	10	10	30	40	30	70	100

नोट :

1. अर्द्ध वार्षिक परीक्षा में प्रत्येक प्रश्न पत्र 3.15 घन्टे समयावधि का होगा। इसमें 15 मिनट का समय विद्यार्थियों को प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए दिया गया है। यदि विद्यार्थी प्रश्न पत्र जल्दी पढ़ लेता है तो शेष समय का उपयोग प्रश्न पत्र हल करने में भी कर सकता है।
2. अर्द्ध वार्षिक परीक्षा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर के नियमानुसार एवं योजनानुसार ही आयोजित करें।
3. अर्द्ध वार्षिक परीक्षा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा निर्धारित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम सम्मिलित किया जायेगा।
4. प्रायोगिक परीक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित नियमों एवं समयावधि में ली जायेगी।
5. विद्यार्थी को विषय चयन माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर के दिशा-निर्देशानुसार करने होंगे।

2. प्रतिदिन विद्यालय बन्द होने पर सभी कक्षा-कक्षों की जाँच बाबत

• कार्यालय आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22444/2011-12 दिनांक 25.8.11 • विषय : प्रतिदिन विद्यालय बन्द होने पर सभी कक्षा-कक्षों की जाँच बाबत। • प्रसंग : राज्य सरकार के पत्रांक : पीएस/पीएसई/2010/281 दिनांक 03.08.2011 • राज्य सरकार के निर्देशानुसार विद्यालय भवन की साफ-सफाई, प्रत्येक उपकरण/उपस्थर, फर्नीचर आदि को व्यवस्थित रूप से रखना विद्यालय स्टाफ की नैतिक व विधिसम्मत जिम्मेवारी बनती है। इस क्रम में निर्देशानुसार निम्नलिखित निर्देश दिये जाते हैं– 1. प्रतिदिन विद्यालय भवन की पर्याप्त सफाई करवाई जावे। 2. फर्नीचर व अन्य सामान व्यवस्थित रूप से रखा जाय। 3. प्रतिदिन विद्यालय की छुट्टी होने के पश्चात् प्रत्येक कक्ष को अच्छी तरह से देखकर यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी कक्षा-कक्ष छोड़ चुके हैं तत्पश्चात् ही कक्षा को बन्द किया जाय। 4. इस व्यवस्था को नियमित रूप से चलाने के लिए एक अध्यापक को प्रभारी नियुक्त किया जाय। 5. संस्था प्रधान नियमित रूप से इस व्यवस्था का प्रबोधन करें। अनियमितता की स्थिति में सम्बन्धित प्रभारी/दोषी कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही आरम्भ की जाय। अपने अधीनस्थ सभी राजकीय विद्यालयों को उपरोक्त निर्देश जारी कर पालना सुनिश्चित करें। • ह. उपनिदेशक (माध्यमिक), माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

3. गैर सरकारी विद्यालयों द्वारा नियम विरुद्ध कक्षा 6 के साथ कक्षा 7 व 8 संचालन बाबत।

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी/मान्यता/11-12 दिनांक 29.8.11 • विषय : गैर सरकारी विद्यालयों द्वारा नियम विरुद्ध कक्षा 6 के साथ कक्षा 7 व 8 संचालन बाबत। • विषयान्तर्गत लेख है कि प्रायः इस प्रकार की शिकायतें समाचार पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं, कि गैर सरकारी विद्यालय को जिस सत्र हेतु क्रमोन्नति आदेश जारी किये जाते हैं उस सत्र में उनके द्वारा मात्र कक्षा 6 का ही संचालन किया जा सकता है परन्तु उसी वर्ष कक्षा 6 के साथ-साथ कक्षा 7 व 8 भी

संचालित कर लेते हैं जो कि नियम विरुद्ध है। यह विभाग को धोखे में रखकर बच्चों एवं अभिभावकों के साथ धोखाधड़ी की श्रेणी में आता है।

आप तत्काल टीम बनाकर अपने जिले में सर्वे करवायें तथा ऐसे विद्यालयों को चिह्नित करें जो नियम विरुद्ध कक्षा 6 के साथ कक्षा 7 व 8 भी संचालित कर रहे हैं ऐसे विद्यालयों के संचालकों के विरुद्ध बच्चों एवं अभिभावकों के साथ धोखाधड़ी करने के जुर्म में सम्बन्धित पुलिस थाने में एफआईआर दर्ज करावें। इस सम्बन्ध में विभाग द्वारा समय-समय पर आपको पूर्व में भी निर्देशित किया जा चुका है। पुनः निर्देशित किया जाता है कि आप दोषी गैर-सरकारी शिक्षण संस्थाओं के विरुद्ध राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था अधिनियम, 1989 के नियम 1993 के अन्तर्गत नियमानुसार कार्यवाही कर इस कार्यालय को अवगत करावें। • ह. निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान एवं अभिलेख निस्तारण बाबत।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/मा/लेखा/डी-2/28001/11/55 दिनांक 13.9.11 • विषय : बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान एवं अभिलेख निस्तारण बाबत। • प्रसंग : इस कार्यालय का समसंख्यक आदेश दिनांक 21.04.11, 27.06.11, 28.06.11, 20.07.11, 29.08.11 व 08.09.11 • उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक आदेशों द्वारा बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान एवं अभिलेख निस्तारित कर निम्न प्रपत्र में सूचना भिजवाने के निर्देश दिये गये थे–

क्र. सं.	नाम संस्था	पुस्तक मूल्य	नीलामी से प्राप्त आय	टैक्स/वेट	चालान नं. व दिनांक
1	2	3	4	5	6

प्रगति कुछ जिलों से प्राप्त हुई जो संतोषजनक नहीं है। अभियान को गति देने की दृष्टि से समस्त अधीनस्थ संस्थाओं को निम्न चरणबद्ध कार्य करने हेतु निर्देशित करें–

1. संस्था के मुख्य भण्डार, बोर्ड/स्थानीय परीक्षा प्रभारी भण्डार, खेलकूद, एस.यू.पी.डब्ल्यू., एन.एस.एस., विज्ञान, कला, उद्योग आदि भण्डारों का भौतिक सत्यापन भण्डार प्रभारी के साथ संस्था के अन्य राजपत्रित अधिकारी यथा संस्था प्रधान/व्याख्याता की समिति से करायें। **2.** भौतिक सत्यापन के पश्चात् भण्डार के उपयोगी सामान के अतिरिक्त बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान की अलग-अलग सूची तैयार करें। **3.** बेशी सामान जो अन्य संस्था में उपयोगी है स्पष्ट प्रस्ताव जिला शिक्षा अधिकारी को प्रस्तुत कर अनुमति प्राप्त कर अन्य संस्था को स्थानान्तरित करें। **4.** अप्रचलित/अनुपयोगी सामानों की सूची जिला शिक्षा अधिकारी को भिजवावें। **5.** शिक्षा विभागीय नियमावली 1997 के अध्याय 8 पृष्ठ 116-122 में निर्धारित अवधि पूर्ण करने के पश्चात् अनुपयोगी अभिलेख को सूचीबद्ध कर सक्षम स्वीकृति पश्चात् निस्तारित करावें। **6.** जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के सहायक लेखाधिकारी/कनिष्ठ लेखाकार सामान्य वित्तीय एवं लेखा नियमों में राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.6(1)वित्त/साविलेनि/2005 दिनांक 24.06.11 परिपत्र संख्या 11/2011 द्वारा प्रदत्त शिथिलन के अन्तर्गत संस्था प्रधान द्वारा प्रस्तुत सूची की जाँच कर सामान को सक्षम अधिकारी से अप्रचलित/अनुपयोगी घोषित करा नियमानुसार नीलामी की कार्यवाही करें। **7.** नीलामी से प्राप्त आय में टैक्स व विभाग की आय चालान द्वारा तत्काल जमा करावें। विभाग की आय निम्न मद में जमा कराई जावे– 0202–शिक्षा, खेलकूद, कला एवं संस्कृति; 01–सामान्य शिक्षा; 800–अन्य प्राप्तियाँ; (50)–अनुपयोगी सामान/वाहनों के निस्तारण से प्राप्तियाँ; (01)–अनुपयोगी वाहनों के निस्तारण से प्राप्तियाँ; (02)–अन्य अनुपयोगी सामान के निस्तारण से प्राप्तियाँ। टैक्स की आय वाणिज्य कर विभाग से चालान प्राप्त कर उनके मद में जमा करावें। **8.** पूरे माह में जमा राशि की सूचना जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा निम्नहस्ताक्षरकर्त्ता को प्रस्तुत की जावे।

राज्य सरकार द्वारा बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान निस्तारण का राज्य स्तरीय अभियान चल रहा है। निम्नहस्ताक्षरकर्त्ता के सान्निध्य में दिनांक 25 अप्रैल से 28 अप्रैल 11 तक सम्पन्न मण्डलवार बैठकों में सभी संस्थाओं के शत-प्रतिशत भौतिक सत्यापन व भौतिक सत्यापन के पश्चात् बेशी/अप्रचलित/अनुपयोगी सामान एवं अभिलेख निस्तारण के निर्देश दिये गये थे। पुनः निर्देश दिये जाते हैं कि राज्य स्तरीय अभियान को पूर्ण निष्ठा व संकल्प से सफल बनावें। अभियान में कोई कठिनाई हो तो तत्काल उच्च अधिकारी से सम्पर्क कर निस्तारित करावें। निर्देशों के बावजूद अभियान के प्रति उदासीनता को गम्भीरता से लिया जावेगा। • ह. मुख्य लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

5. नियमित परीक्षार्थियों के परीक्षा आवेदन पत्र ऑन लाइन भरने का व्यय छात्रनिधि से करने बाबत।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/मा/लेखा/डी-2/28012/11/23 दिनांक 13.9.11 • विषय : नियमित परीक्षार्थियों के परीक्षा आवेदन पत्र ऑन लाइन भरने का व्यय छात्रनिधि से करने बाबत। • प्रसंग : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर के पत्रांक माशिबो/2011/1212 दिनांक 30.08.11 • उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक पत्र द्वारा सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने अवगत कराया है नियमित परीक्षार्थियों के परीक्षा आवेदन पत्र ऑन लाइन भरने एवं आवेदन पत्र भरने का व्यय सम्बन्धित शाला द्वारा वहन करने का निर्णय लिया गया है। राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प.19(45)शिक्षा-6/96 दिनांक 17.01.02 के अन्तर्गत परीक्षा का व्यय छात्रनिधि से करने का प्रावधान है। अतः नियमित परीक्षार्थियों के परीक्षा आवेदन पत्र ऑन लाइन भरने का व्यय सम्बन्धित शाला की छात्रनिधि मद से करने के निर्देश सभी संस्था प्रधानों को जारी करें। • ह. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण शिविरों का आयोजन

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा-माध्य/निप्र/डी-1/21901/पपउन्न/2010-11 दिनांक 29.8.11 • विषय : प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण व जिला स्तरीय शिविर की कार्ययोजना (सत्र 2011-12) • प्रतिवर्ष की तरह विभाग द्वारा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण की जिला स्तरीय कार्य योजना तैयार की गई। इस कार्य योजना की प्रति संलग्न कर आपको भिजवाई जा रही है। कार्य योजना कक्षा 9 व 11 में 70 प्रतिशत व अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए चलाई जायेगी, जो वर्तमान सत्र में कक्षा 10 व 12 में अध्ययनरत हैं। सत्र 2011-12 की माध्यमिक शिक्षा बोर्ड परीक्षा के संदर्भ में इस योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करने की दृष्टि से इसे तत्काल सभी राजकीय माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों को भिजवाकर क्रियान्विति करने के निर्देश देवें। **1.** विद्यालय स्तर पर विशेष शिक्षण की योजना 15 सितम्बर से 1 दिसम्बर, 2011 तक संचालित की जायेगी। **2.** प्रत्येक विद्यालय से चयनित छात्र/छात्राओं

के लिए जिला स्तरीय शिविर 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 2011 तक लगाया जायेगा।

शीतकालीन अवकाश के समय जिला स्तरीय शिविर में नियुक्त संस्था प्रधान व विषयाध्यापक को राजस्थान सेवा नियम के प्रावधानों के अंतर्गत 3 कार्य दिवस पर एक दिवस का उपार्जित अवकाश देय होगा। संलग्न कार्य योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करें तथा निर्धारित समय पर निश्चित प्रारूप में प्रगति व अन्य सूचनाएं भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके लिए अलग से कोई बजट आवंटित नहीं किया जावेगा। • ह. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

7. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण व्यवस्था

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • कार्य-योजना • विषय : प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण व्यवस्था (बोर्ड परीक्षा सत्र 2011-12 के लिए) • आवश्यता : राज्य स्तर पर सार्वजनिक रूप से शिक्षण की उपलब्धि का आधार सार्वजनिक परीक्षाओं (बोर्ड की माध्यमिक व उच्च माध्यमिक परीक्षा) का परीक्षा परिणाम रहता है। सार्वजनिक परीक्षा का परिणाम उन्नत रखने के लिए प्रयास आवश्यक हैं ताकि राज्य में शिक्षण की उपलब्धि बेहतर रहे। इस दृष्टि से बोर्ड परीक्षा में सम्मिलित होने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षण की व्यवस्था इस प्रकार की जाय कि राजकीय विद्यालयों के परीक्षार्थी अपनी मानसिक योग्यता के अनुरूप वरीयता सूची में स्थान प्राप्त कर सके। परीक्षा परिणाम उन्नयन की प्रस्तुति योजना इसी संदर्भ पर आधारित है। गत सत्रों में भी इसी प्रकार का कार्यक्रम चलाया गया था। जिससे राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थी बोर्ड की वरीयता सूची में स्थान प्राप्त कर सके हैं। ऐसा प्रयास चालू सत्र 2011-12 में भी किया जाना है।

उद्देश्य : माध्यमिक व उच्च माध्यमिक परीक्षा के बोर्ड परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक व गुणात्मक वृद्धि करना।

लक्ष्य : (1) बोर्ड की वरीयता सूची में राजकीय विद्यालयों के परीक्षार्थियों को अधिक स्थान प्राप्त करने के प्रयास करना। (2) गुणात्मक अभिवृद्धि हेतु उच्च माध्यमिक व माध्यमिक परीक्षा के गत वर्षों की अपेक्षा अधिक परीक्षार्थियों द्वारा प्रथम श्रेणी प्राप्त करना। क्रियान्विति के चरण इस प्रकार हैं–

कार्यक्रम	अवधि
संस्था स्तर पर–	
1. छात्र/छात्राओं की पहचान करना जिन्होंने सत्र 10-11 की कक्षा 9 व 11 में (वर्तमान में कक्षा 10 व 12 में अध्ययनरत) 70% या अधिक अंक प्राप्त किए हैं।	06/09/11
2. चयनित छात्रों की सूची जिला शिक्षा अधिकारी को भेजना।	09/09/11
3. चयनित छात्रों की शिक्षण हेतु विषयाध्यापकों का चयन।	10/09/11
4. छात्र के शैक्षिक व मानसिक स्तर का पता लगाकर विषयवार स्थिति का परीक्षण करना व इसके लिए विशेष सुविधाओं की व्यवस्था करना, गृह कार्य, कक्षा कार्य की जाँच, मानसिक दक्षता के विकास हेतु शिक्षण के साथ-साथ मूल्यांकन के लिए क्यूज़/प्रतियोगिता व परख का आयोजन कर उपलब्धि ज्ञात करना। परीक्षा उपयोगी प्रश्न-पत्रों का हल करवाना, शिक्षण हेतु शून्य कालांश की व्यवस्था।	15 सित. से 1 दिस. 2011
5. संस्था प्रधान द्वारा छात्र/छात्राओं से व्यक्तिगत सम्पर्क कर कठिनाई निवारण, मार्गदर्शन के लिए कालांश लेना।	प्रति सप्ताह 2 कालांश
6. विषयाध्यापक द्वारा संस्था प्रधान को कार्य की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करना।	प्रति सप्ताह
7. संस्था प्रधान द्वारा समेकित विषयवार व कक्षावार प्रगति रिपोर्ट जिला शिक्षा अधिकारी को भेजना।	प्रथम 1.10.11 द्वितीय 31.10.11 तृतीय 5.12.11
8. प्रति माह अध्ययन के उपरान्त छात्रों की मूल्यांकन परीक्षा का आयोजन करना व मूल्यांकन के उपरांत स्वयं के विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त (प्रत्येक कक्षा में) छात्रों के नाम जिला स्तरीय शिविर के लिए जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को भेजना।	10.12.11
जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर कार्यक्रम–	
1. विद्यालयों का परिवीक्षण कर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए चल रहे कार्यक्रमों का अवलोकन कर मार्गदर्शन देना।	15 सितम्बर से 1 दिसम्बर, 2011 तक
2. चयनित छात्रों की विद्यालयवार संख्या निदेशालय व मंडल अधिकारियों को प्रपत्र 'अ' में भेजना।	1 अक्टूबर, 2011
3. जिला स्तरीय शिविरों के लिए उपयुक्त विद्यालय, विषय अध्यापक, शिविर प्रभारी के लिए संस्था प्रधान का चयन।	15 दिसम्बर, 2011
4. जिला स्तरीय शिविर आयोजन (शीतकालीन अवकाश के समय)	25.12.11 से 31.12.11
5. शिविर की प्रगति रिपोर्ट मंडल व निदेशालय को प्रपत्र 'ब' में भेजना।	15 जनवरी, 2012

'प्रपत्र-अ'

प्रतिभावान विद्यार्थियों के शैक्षिक मार्गदर्शन की सूचना जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा निदेशालय को 10 अक्टूबर, 2011 तक भेजने बाबत।

जिले के कुल चयनित प्रतिभावान विद्यार्थी			मार्गदर्शन हेतु चयनित अध्यापकों की संख्या		
कक्षा-10	कक्षा-12	कुल योग	कक्षा-10	कक्षा-12	कुल योग
1	2	3	4	5	6

'प्रपत्र-ब'

जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा शीतकालीन अवकाश शिविर की प्रगति रिपोर्ट निदेशालय को 15 जनवरी, 2012 तक भिजवाना।

शिविर स्थल पर शिविर प्रभारी का नाम	शिविर में प्रतिनियुक्त विषयाध्यापक का नाम पद व पदस्थापन स्थान	शिविर अवधि	शिविर में उपस्थिति कक्षावार छात्र संख्या
1	2	3	4

शिविर में प्रगति-दिन संपादित कार्य का विवरण विषयवार (शिक्षण कार्य)	शिविर में शिक्षण कार्य के अतिरिक्त संपादित अन्य कार्य यथा मूल्यांकन, क्विज़ प्रतियोगिता, समस्या समाधान, सामग्री वितरण, संदर्भ साहित्य की जानकारी का पूर्ण विवरण अंकित करें।	विशेष विवरण
5	6	7

बापू की सीख-5

अहिंसा

□ मो. क. गाँधी

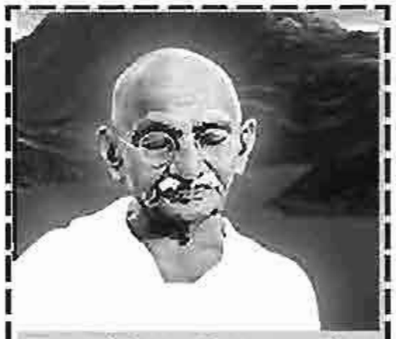

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति एवं शिक्षा सभी क्षेत्रों में उनके विचार बहुत उपयोगी हैं। वस्तुतः वे एक मनोवैज्ञानिक शिक्षक थे। उनकी शिक्षा सम्बन्धी 21 रचनाएं 'बापू की सीख' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए उन्हें शृंखलाबद्ध प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया है। आशा है पाठक इन विचारों को पठन, मनन के साथ आचरण में लाने का प्रयास करेंगे। —वरिष्ठ सम्पादक

'सत्य का, अहिंसा का मार्ग जितना सीधा है, उतना ही तंग भी, खांडे की धार पर चलने के समान है। नट जिस डोर पर सावधानी से नजर रखकर चल सकता है, सत्य और अहिंसा की डोर उससे भी पतली है। जरा चूके कि नीचे गिरे। पल-पल की साधना से ही उसके दर्शन होते हैं।

लेकिन सत्य के सम्पूर्ण दर्शन तो इस देह से असंभव है। उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। क्षणिक देह द्वारा शाश्वत धर्म का साक्षात्कार संभव नहीं होता। अतः अंत में श्रद्धा के उपयोग की आवश्यकता तो रह ही जाती है।

इसी से अहिंसा जिज्ञासु के पल्ले पड़ी। जिज्ञासु के सामने यह सवाल पैदा हुआ कि अपने मार्ग में आने वाले संकटों को सहे या उसके निमित्त जो नाश करना पड़े वह करता जाय और आगे बढ़े ? उसने देखा कि नाश करते चलने पर वह आगे नहीं बढ़ता, दर-का-दर पर ही रह जाता है। संकट सहकर तो आगे बढ़ता है। पहले ही नाश में उसने देखा कि जिस सत्य की उसे तलाश है वह बाहर नहीं है, बल्कि भीतर है। इसलिए जैसे-जैसे नाश करता जाता है, वैसे-वैसे वह पीछे रहता जाता है, सत्य दूर हटता जाता है।

चोर हमें सताता है, उससे बचने को हमने उसे दंड दिया। उस वक्त के लिए तो वह भाग गया जरूर लेकिन उसने दूसरी जगह जाकर सेंध लगाई। पर वह दूसरी जगह भी हमारी ही है। अतः हमने अंधेरी गली में ठोकर खाई। चोर का उपद्रव बढ़ता गया, क्योंकि उसने तो चोरी को कर्त्तव्य मान रखा है। इससे अच्छा तो हम यह ही पाते हैं कि चोर का उपद्रव सह लें, इससे चोर को समझ आएगी। इस सहन से हम देखते हैं कि चोर कोई हमसे भिन्न नहीं है। हमारे लिए तो सब सगे हैं, मित्र हैं, उन्हें सजा देने की जरूरत नहीं है; लेकिन उपद्रव सहते जाना ही बस नहीं है। इससे तो कायरता पैदा होती है। अतः हमारा दूसरा विशेष धर्म सामने आया। यदि चोर अपना भाई-बिरादर है तो उसमें वह भावना पैदा करनी चाहिए। हमें उसे अपनाने का उपाय खोजने तक का कष्ट सहने को तैयार होना चाहिए। यह अहिंसा का मार्ग है। इसमें उत्तरोत्तर दुःख उठाने की ही बात आती है, अटूट धैर्य– शिक्षा की बात आती है। यदि यह हो जाय तो अंत में चोर साहूकार बन जाता है और हमें सत्य के अधिक स्पष्ट दर्शन होते हैं। ऐसा करते हुए हम जगत को मित्र बनाना सीखते हैं, ईश्वर की, सत्य की महिमा अधिक समझते हैं; संकट सहते हुए भी शांति-सुख बढ़ता है; हममें साहस, हिम्मत बढ़ती है; हम शाश्वत-अशाश्वत का भेद अधिक समझने लगते हैं; हमें कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विवेक हो जाता है, गर्व गल जाता है, नम्रता बढ़ती है, परिग्रह अपने-आप घट जाता है और देह के अंदर भरा हुआ मैल रोज-रोज कम होता जाता है।

यह अहिंसा वह स्थूल वस्तु नहीं है जो आज हमारी दृष्टि के सामने है। किसी को न मारना इतना तो है ही। कुविचारमात्र हिंसा है। उतावली हिंसा है। मिथ्या भाषण हिंसा है। द्वेष हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है उस पर कब्जा रखना भी हिंसा है। पर हम जो कुछ खाते हैं वह जगत के लिए आवश्यक है। जहाँ खड़े हैं वहाँ सैकड़ों सूक्ष्म जीव पड़े पैरों तले कुचले जाते हैं, यह जगह उनकी है। फिर क्या आत्महत्या कर लें ? तो भी निस्तार नहीं है। विचार में देह के साथ ससर्ग छोड़ दें तो अंत में देह हमें छोड़ देगी। यह मोहरहित स्वरूप सत्यनारायण है। यह दर्शन अधीरता से नहीं होते। यह समझकर कि देह हमारी नहीं है, वह हमें मिली हुई धरोहर है, इसका उपयोग करते हुए हमें आगे बढ़ना चाहिए।

इतना तो सबको समझ लेना चाहिए कि अहिंसा बिना सत्य की खोज असंभव है। अहिंसा और सत्य ऐसे ओतप्रोत हैं जैसे सिक्के के दोनों रुख, या चिकनी चकती के दो पहलू। उसमें किसे उलटा कहें, किसे सीधा ? फिर भी अहिंसा को साधन और सत्य को साध्य मानना चाहिए। साधन अपने हाथ की बात है। इससे अहिंसा परम-धर्म मानी गई। सत्य परमेश्वर हुआ। साधन की चिंता करते रहने पर साध्य के दर्शन किसी दिन कर ही लेंगे। इतना निश्चय करना, जग जीत लेना है। हमारे मार्ग में चाहे जो संकट आयें, बाह्य दृष्टि से देखने पर हमारी चाहे जितनी हार होती दिखाई दे, तो भी हमें विश्वास न छोड़कर एक ही मंत्र जपना चाहिए– सत्य है, वही है, वही एक परमेश्वर है। उसके साक्षात्कार का एक ही मार्ग है, एक ही साधन अहिंसा है, उसे कभी न छोड़ेंगे। जिस सत्यरूप परमेश्वर के नाम पर यह प्रतिज्ञा की है, वह हमें इसके पालन का बल दे।

—'मंगल-प्रभात' से

गांधीजी की शिक्षा योजना देश-काल के अनुरूप थी और उसमें उच्च कोटि के शिक्षात्मक तत्वों का समावेश था। यह संभव इसलिए बना कि उनके शिक्षा-विचारों का आधार परिस्थितियों की पारुतपिकता, मूल्यों की शाश्वतता और जीवन से सम्बद्धता थी।

अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा महात्मा गाँधी से बहुत अभिभूत हैं और गत वर्ष अपनी भारत यात्रा में वापसी के वक्त गाँधी जी का सुदर्शन यंत्र और परम प्रिय चरखा को अपने साथ ले गये थे। ओबामा जो चरखा ले गये हैं वह निःसन्देह वहाँ के राष्ट्रीय संग्रहालय में स्थान पा चुका होगा। ऐसी वस्तुएँ प्रतीकात्मक होती हैं और प्रायः राजनय चतुराई के तौर पर ही इनका आदान प्रदान करते हैं।

गाँधी-चरखा तीव्र विकास की अवधारणा का नहीं बल्कि जीवन संघर्ष का प्रतीक है। स्वाधीनता आन्दोलन के जिस दौर में बाबा गाँधी ने चरखे को अन्वेशित किया था वह करो या मरो की मनःस्थिति के दिन थे। विदेशी अवलम्बन को त्यागने का आह्वान करने से पहलें गाँधी जी ने जिस चरखा रूपी यंत्र को देशवासियों के हाथ में थमाया था वास्तव में उस वक्त किसी सुदर्शन चक्र से कम नहीं था।

गाँधी जी का मानना था कि चरखा न सिर्फ गुलामी से ही मुक्ति दिलायेगा बल्कि व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं यथा रोटी, कपड़ा और मकान की भी पूर्ति करेगा। भारतीय संस्कृति खासकर ग्रामीण परिवेश की गहरी समझ रखने वाले गाँधी जी जानते थे कि रोटी व कपड़े की आत्म निर्भरता होने पर स्वाभिमान स्वतः ही देशवासियों की मुक्ति नहीं चाहते थे बल्कि वे सोचते थे कि विदेशी दासता से मुक्ति पाये बिना देशवासी कहीं अपने ही शासन तंत्र के गुलाम होकर न रह जाएं, इसलिए वे करोड़ों गरीब भारतीयों के लिए रोटी-कपड़े की आत्म निर्भरता को जरूरी मानते थे और इसके लिए उनकी दृष्टि में चरखा ही सफल साधन था। वे ग्रामीण भारत और उसकी संरचना से भलीभाँति परिचित थे। वे जानते थे कि भारत की अधिकांश आबादी गांवों में बसती हैं और वहाँ किसी के पास भी वर्ष भर बराबर काम नहीं रहता। उनका यह सोच यथार्थ था कि लोग चाहे पूर्ण बेरोजगार हों या आंशिक लेकिन यदि वे चरखे को अपनाते हैं तो इससे न केवल उनकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी बल्कि चरखा चलाने का कार्य सामूहिक रूप से किया जायेगा तो इससे सामाजिक समरसता भी बढ़ेगी और आपसी समस्याओं का निराकरण भी कर सकेंगे। चरखे से लोग अवगत हैं वे यह भी जानते हैं कि चरखा चलाना कोई श्रम-साध्य काम नहीं बल्कि समूह में वह मनोरंजन का कारक भी है।

भारत सरीखे देश में तो हर हाथ को काम देने की प्राथमिकता होनी चाहिए। इसलिए गाँधीजी कुटीर उद्योग धंधे पर जोर देते थे। अतः उन्होंने कुटीर उद्योग आधारित पाठन प्रणाली यानि कुटीर उद्योगों में विषयवस्तु का समवाय करके बुनियादी शिक्षा नामक पाठ्यक्रम चालू किया था जो कालान्तर में फलने व विकसित होने के पूर्व ही अपना अस्तित्व खो चुकी। वे तमाम क्षेत्रों को इसी कार्य के लिए आरक्षित करने के पक्षधर थे। उनका मानना था कि बड़े कारखाने होंगे तो बड़ी मशीनें होंगी और तदनुसार बेरोजगारी भी बड़ी होगी। सैकड़ों आदमियों का काम अकेले कर सकने वाली मशीनों का प्रयोग समय की बचत और उत्पादन तो बढ़ा सकता है लेकिन उसी अनुपात में बेरोजगारी बढ़ाकर साधनों पर एकछत्रता कायम करता है। गाँधीजी चरखा व कुटीर उद्योगों के बारे में बातचीत करते थे तो उनका अभिप्राय व्यक्ति के घर के पास ही रोजगार उपलब्ध कराना होता था। कुटीर उद्योगों की अवधारणा गाँव से पलायन रोकने की होती थी। जैसे हाल ही में चल रहे महात्मा गाँधी नरेगा ने पलायन को कम किया है।

चरखे को प्रभाव में लाने की रोचक कहानी भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना उचित होगा। इसके बिना चरखे का महत्व प्रतिपादित नहीं होगा। चम्पारण (बिहार) में अंग्रेजों के शासनकाल में अत्याचारों के विरुद्ध आन्दोलन चल रहा था। गुलामी के कारण जन मानस असहाय था। शासकों के विरुद्ध आवाज उठाने की किसी में हिम्मत नहीं थी। बापू ने अहिंसा के प्रेमपूर्ण ढंग से आवाज उठाने का काम किया।

चम्पारण की समग्र स्थिति की जाँच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु एक समिति बनाई गई। समिति ने जो रिपोर्ट प्रस्तुत की उसमें गुलामी व बेचारगी के तथ्य तो रक्खे गये लेकिन बापू यह देखकर अवाक् रह गये कि उसमें स्त्री की दशा का कोई विवरण नहीं था। उन्होंने समिति से पूछा– स्त्री कहाँ गई ? सदस्यों ने कहा– स्त्री भयभीत है, शर्मीली है। समिति के सामने आने को तैयार नहीं है। बापू गम्भीर हुए। उनके लिए स्त्री की दशा का जानना जरूरी था। उन्होंने पास बैठी माँ कस्तूरबा और अवन्तिका बाई गोखले से कहा– 'जाओ मैदान में और स्त्री की दशा का पता लगाओ। क्यों हैं भयभीत हमारी माताएँ और बहनें? उनकी दशा और दिशा जाने बिना आगे का कार्यक्रम कैसे बनाया जा सकता है।'

और वे फकीर बन गये

❑ द्वारकेश भारद्वाज

माता कस्तूरबा और अवन्तिका बाई गोखले दोनों चल दी चम्पारण में। दोनों गर्मी की दोपहरी में घूम रही थी। लू के थपेड़ों एवं धूल-मिट्टी ने उनका श्रृंगार कर दिया। उन्होंने देखा कि क्षेत्र में महिलायें डरी हुई हैं। राजसत्ता का भय है। माता कस्तूरबा को प्यास लगी। पानी चाहिए, वह जिस घर जाती वह बन्द मिलता। जिस भी दरवाजे को खटखटाती वह और जोर से बंद कर दिया जाता। भटकते भटकते दोनों थक गईं। आखिर एक द्वार के सामने दोनों रुकी और कस्तूरबा ने द्वार खटखटाया व आवाज दी– 'बहन बहुत प्यास लगी है, पानी पिलाओगी?' इस आवाज में माँ का, बहन का दर्द था– पीड़ा थी थकान की तो उसने जादू सा काम किया। थोड़ी देर में द्वार खुला। दोनों ने पानी पिया कंठ में तरावत आ गयी। दोनों अन्दर घुस गई। अन्दर की महिला घबरा गई। उसने तुरन्त द्वार बंद कर दिया।

माता कस्तूरबा ने देखा वहाँ एक नहीं दो महिलाएँ हैं दोनों ही लगभग निर्वस्त्र हैं। उनका माथा चकरा गया। यह नग्नता क्यों? द्वार क्यों नहीं खुलता? वे जानने को अति उत्सुक। दोनों थकी हुई थी। थकान मिटाने को भूमि पर बैठ गईं। प्यार भरे हाथ पीठ पर रखकर उस महिला से पूछा– बहन तुम बताओ द्वार क्यों नहीं खोल रही थी? यहाँ क्या खतरा है? महिला रो पड़ी। बोली– 'आप देख रही हैं- हम लगभग निर्वस्त्र हैं, हमारे पास तन ढकने को कपड़े नहीं हैं। ऐसे द्वार कैसे खोलें व कैसे आयें द्वार के बाहर? हम बहनें तीन हैं, साड़ी एक है। माता कस्तूरबा को झटका लगा जैसे उन्हें पहाड़ पर से जमीन पर लाकर पटक दिया हो। बोली फिर घर का काम कैसे चलता है? बाहर तो निकलना पड़ता ही होगा न? महिला ने कहा– हम तीन बहनें हैं

साड़ी एक है। कोई भी एक बहन साड़ी पहन कर निकल जाती है। काम निपटाकर वापस आ जाती है। अभी एक बाहर गई है। यह कहकर दोनों बहनें रोने लगीं। माता कस्तूरबा विह्वल हो गईं। बोली यह तो गरीबी नहीं कंगाली है। गुलामी की दासता ने तो हजारों महिलाओं को लगभग नग्न कर दिया है। वे बेबस हो गई कि कैसे रोकें इन बहनों के आँसू। उनकी भी आँखों से आँसू झरने लगे।

माता कस्तूरबा और अवन्तिका बाई ने चावल का एक कण देखकर ही जान लिया कि वे पके हैं या नहीं। इस दृश्य ने चम्पारण की कंगाली की स्थिति उनके सामने स्पष्ट कर दी थी। दोनों ने क्लान्त मन से आश्रम जहाँ गाँधी जी ठहरे हुए थे आकर जो कुछ आँखों से देखा उसका वर्णन कर दिया। गाँधी जी ने जो सुना उससे सन्न रह गये व जड़वत हो गये उन्हें भी इतनी गम्भीर कंगाली की कल्पना तक नहीं थी। उन्हें लगा सारा देश कंगाली से बेबस है। गरीब के पास तन ढकने को कपड़ा नहीं है वह कैसे लाज बचाये। गाँधीजी ने थोड़ी देर सुन्न रहने के बाद आँखें खोली। उन महिलाओं के लिए वस्त्र व साड़ियों की व्यवस्था की। माता कस्तूरबा व अवन्तिका बाई जाकर उन महिलाओं को वस्त्र भेंट कर उन्हें सान्त्वना दे आईं। दोनों बहनों ने कहा गाँधीजी सचमुच बापू हैं उन्हें हमारी चिन्ता है।

इस घटना से गाँधीजी का रोम-रोम काँप उठा था। उन्होंने द्रवित हो अपनी काठियावाडी पगडी व वस्त्र उतार दिये। बोले– मेरी एक ही पगडी से दो महिलाओं की लाज बच सकती है। जब देश में हजारों करोड़ों लोग नंगे हैं तो मुझे इतने वस्त्र धारण करने का क्या अधिकार है? उन्होंने संकल्प किया– 'मैं आज से शरीर पर एक ही वस्त्र धारण करूँगा।' कस्तूरबा ने गाँधी जी के दर्द को समझकर कहा कि आपके एक वस्त्र धारण करने से हजारों नंगे भूखे लोगों को वस्त्र व रोटी तो नहीं मिल जायेंगे, उनके लिए कुछ तो करना पड़गा न। गाँधी जी का उत्तर था कि यह गरीबी और शोषण के दुष्चक्र हैं, हमें अपना कपड़ा स्वयं तैयार करना पड़ेगा? चरखे पर धागा कातकर बुनकरों से बुनवाना होगा। इस देश में कोई नंगा रहे यह तो शर्म की बात है। देश की आजादी में चरखा 'सुदर्शन' का काम करेगा। जहाँ एक ओर यह देश को स्वावलम्बन की ओर ले जायेगा वहीं दूसरी ओर देश की कंगाली दूर करने में सहायक होगा। करोड़ों हाथों की ऊर्जा कताई बुनाई में लगेगी तो लोगों को रोजगार मिलेगा। भारत में चरखा सदा से गांवों में चलन में रहा है। अब इसका विस्तार करना होगा। पहले तो बिहार में बेटी को विदाई के समय चरखा ही दिया जाता था। गाँधी जी ने अपना सोच बताते हुए कहा कि चरखे को गतिमान बनाने हेतु देश को तैयार करना होगा विदेशी वस्त्रों व वस्तुओं का बहिष्कार करना होगा। विदेशी वस्त्रों की होली जलेगी ताकि शोषण के अस्त्र भोंथरे हों। इसके लिए मैं आज से सभी अनावश्यक वस्त्र त्यागता हूँ। देश नंगा भूखा रहे और मैं दुनिया भर के कपड़े लादे रहूँ यह मुझे शोभा नहीं देता।

उसी दिन से गाँधी जी ने लंगोटी धारण कर ली व फकीर बन गये। उन्होंने दो बहनों की वस्त्र विहीनता को आजादी का अस्त्र बना दिया चरखा-करघा आजादी का प्रतीक बन गया। देश में स्वाभिमान के साथ साहस, उमंग व चेतना जागृत हो गई। उनके चरखे ने भारतीय जनमानस में जान डाल दी। गांवों व शहरों में नंगों को वस्त्र देने हेतु बुनकरों के करघे खटखटाने लगे। रोजगार सृजित हुआ और चरखा सुदर्शन चक्र बन गया। दरिद्रता की कहानी नवजागरण व स्वतंत्रता की कहानी बन गई।

विकास के इस जेट युग में भी चरखा उसी तरह उपयोगी हो सकता है जैसे साइकिल उपयोगी है। उपयोगी बनाना तो शासन तंत्र का काम है। क्योंकि बाजारवादी ताकतों का रुख अब गांवों की ओर है। बड़ा भारत गांवों में ही है, उसे अगर बाजारी चंगुल से बचाना है तो चरखे की अवधारणा को अपनाना होगा।

गुलाम भारत की एक बानगी की यह कहानी नहीं सच है जिसने बदल दी इतिहास की धारा।

–'हवेली ज्ञानद्वार', बी-68, सेठी कॉलोनी,
जयपुर-302004

माह : अक्टूबर, 2011

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.10 से 2.30 तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.10.2011	शनिवार	जोधपुर	7	सामाजिक विज्ञान	11	भारत का भौतिक स्वरूप
3.10.2011	सोमवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	7	इतिहास और खेल : क्रिकेट की कहानी
5.10.2011	बुधवार	बीकानेर	11	राजस्थान अध्ययन	5	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन
7.10.2011	शुक्रवार	जयपुर	8	संस्कृत (तृतीय भाषा)	9	सप्तभगिन्यः
8.10.2011	शनिवार	जोधपुर	11	जीवन कौशल शिक्षा	9	सामाजिक समस्याएँ : मिलकर निवारण करना
10.10.2011	सोमवार	उदयपुर	11	हिन्दी	8	जामुन का पेड़
11.10.2011	मंगलवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		प्रदूषण कैसे रोकें
12.10.2011	बुधवार	बीकानेर	9	सामाजिक विज्ञान	5	आधुनिक विश्व में चरवाहे
13.10.2011	गुरुवार	जयपुर	11	हिन्दी	1 काव्य	कबीर
14.10.2011	शुक्रवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		विश्व हाथ धुलाई दिवस
15.10.2011	शनिवार	जोधपुर	6	सामाजिक विज्ञान	12	हमारा राजस्थान
31.10.2011	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		इन्दिरा गांधी पुण्य तिथि, संकल्प दिवस

• ह. निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर

हिन्दी बाल काव्य में गाँधी जी

❑ दीनदयाल शर्मा

गाँधी जी को कौन नहीं जानता ? पूरी दुनिया जानती है और दुनिया के प्रबुद्ध लोग भारत को गाँधी जी के कारण ही जानते हैं। भारत में उन्हें बापू/महात्मा के नाम से भी जाना जाता है। दो अक्टूबर 1869 को पोरबंदर (गुजरात) में जन्मे महात्मा गाँधी एक राजनीतिज्ञ थे या संत। वे शायद राजनीतिज्ञों में संत और संतों में राजनीतिज्ञ थे। वे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। उन्होंने देशभर में गरीबी से राहत दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार करने, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण करने एवं अस्पृश्यता को खत्म करने के लिए अनेक आन्दोलन चलाए। सन् 1930 में नमक कर के विरोध में ''दांडी मार्च'' और सन् 1942 में ''अंग्रेजों भारत छोड़ो'' का नेतृत्व किया। इन आन्दोलनों के दौरान आपको कई बार जेल जाना पड़ा लेकिन सभी परिस्थितियों में आपने सत्य और अहिंसा का पालन किया। साधारण भारतीय पोशाक में रहते हुए सदा शाकाहारी रहे तथा बहुत बार लम्बे-लम्बे उपवास भी किए। शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। गाँधी जी की मृत्यु के दस वर्ष पूर्व गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा था, ''शायद वे सफल न हों, मनुष्य को उसकी दुष्टता से मुक्त कराने में शायद वे उसी तरह असफल रहे जैसे बुद्ध रहे, जैसे ईसा रहे। मगर उनको हमेशा ऐसे व्यक्ति के रूप में याद किया जाएगा, जिसने अपना जीवन आगे आने वाले सभी युगों के लिए एक प्रेरणा के समान बना दिया है।'' महात्मा गाँधी को सरकारी तौर पर राष्ट्रपिता का सम्मान दिया गया। दो अक्टूबर को उनका जन्मदिन राष्ट्रीय पर्व ''गाँधी जयंती'' के नाम पर एवं दुनियाभर में इसको अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। सबके प्रेरणास्रोत गाँधी जी के बारे में देशभर के ख्यातनाम बाल कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने मन के उद्‌गार पिरोकर अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किए हैं। ये उद्‌गार हम सभी के लिए अनुकरणीय हैं।

अपना काम स्वयं करने वाले गाँधी जी किसी भी काम को छोटा नहीं मानते थे। उनकी इसी आदत से प्रभावित होकर सन् 1969 में वरिष्ठ कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने अपनी बाल कविता 'श्रम की महिमा' के माध्यम से बालमन को प्रेरणा देने का सशक्त प्रयास किया है। कविता का एकांश दृष्टव्य हैं–

सूत कातते थे गाँधी जी कपड़ा बुनते थे/ और कपास जुलाहों के जैसा ही धुनते थे/जिल्द बांध लेना पुस्तक की उनको आता था/भंगी-काम सफाई से नित करना भाता था/ऐसे थे गाँधी जी ऐसा था आश्रम/गाँधी जी के लेखे पूजा के समान था श्रम॥

बाल कविताओं के प्रख्यात रचयिता शेरजंग गर्ग की बाल कविता ''तीनों बन्दर महाधुरन्धर'' आज के संदर्भ में गाँधी-दर्शन को रेखांकित करती हैं–

गांधीजी के तीनों बंदर पहुँचे चिड़ियाघर के अंदर/एक चढ़ाये बैठा चश्मा/देख रहा रंगीन करिश्मा/अच्छाई कम, अधिक बुराई/भले-बुरों में हाथा-पाई/खूब हुआ दुष्टों से परिचय/मन ही मन कर बैठा निश्चय/दुष्ट जनों से सदा लड़ेगा/ इस चश्मे से रोज पढ़ेगा/दूजा बैठा कान खोलकर/देखो कोई बात बोलकर/बुरा सुनेगा, सही सुनेगा/जो अच्छा है वही सुनेगा/गूँज रहा संगीत मधुर है/कोयल का हर गीत मधुर है/ भला-बुरा सुनना ही होगा/लेकिन सच सुनना ही होगा/और तीसरा मुंह खोले है/बातों में मिस्री घोले है/मीठा सुनकर ताली देता/नहीं किसी को गाली देता/मोहक गाना सीख रहा है/वह काफी खुश दीख रहा है/नेकी देख प्रशंसा करता/ लेकिन नहीं बदी से डरता/आया नया जमाना आया/नया तरीका सबको भाया/तीनों बंदर बदल गए हैं/तीनों बंदर संभल गए हैं॥

वरिष्ठ बाल कवि एवं बाल मनोविज्ञान के सशक्त रचनाकार प्रकाश मनु 'सुनो कहानी बापू की' में गाँधी जी के प्रेम, माधुर्य, जोश और पीड़ितों के प्रति मर्म की व्याख्या करते हैं। कविता का एक अंश प्रस्तुत है–

जब तक है यह चरखा खादी/हरी भरी है जब तक वादी/जब तक नीला आसमान है/ हँसता गाता यह जहान है/मिट न सकी है मिट न सकेगी/अमर निशानी बापू की/सुनो कहानी बापू की॥

दीन-दुःखी की पीड़ा को महसूस करके अहिंसा को शस्त्र के रूप में अपनाने वाले गाँधी जी के बारे में डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक' की कविता 'बापू हमको लगते प्यारे' का एकांश दृष्टव्य है–

सारी दुनिया से हैं न्यारे/बापू हमको लगते प्यारे/दीन-दुःखी को गले लगाया/शस्त्र अहिंसा को अपनाया/भारत को आजाद कराया/हिम्मत कभी नहीं थे हारे/बापू हमको लगते प्यारे॥

बाल साहित्य को समर्पित कवि रमेश तैलंग अपने निराले अंदाज की कविता 'मेरे बापू' के माध्यम से कहते हैं कि तस्वीरें और मिट्टी की मूर्तियाँ मेरे बापू नहीं हैं बल्कि मेरे बापू वो हैं जिनका जीवन सादा, विचार ताजा और निश्चयों में दृढ़ता हो। उनकी कविता का प्रथम और अंतिम अंतरा दृष्टव्य है–

तस्वीरों में वो जो दिखते हैं/वो मेरे बापू नहीं हैं/मेरे बापू तो हैं जीवन की सादगी में/मेरे बापू हैं विचारों की ताजगी में/मिट्टी की मूरत जो लगते हैं/वो मेरे बापू नहीं हैं/मेरे बापू तो हैं निश्चय की दृढ़ता में/मेरे बापू हैं शुचिता में,/ कर्मठता में॥

जीवनपर्यन्त सभी को प्रेम से मिलकर और आजादी हासिल करने की प्रेरणा देने वाले बापू गाँधी जी के बारे में रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' अपनी कविता 'बापू' के माध्यम से कहते हैं–

सबसे मिलकर रहो प्रेम से/पाठ पढ़ाया बापू ने/आजादी लेकर मानेंगे/हमें सिखाया बापू ने॥

आदमी की आदमियत के लिए पहली आवश्यकता रोटी की ओर इशारा करती शरद जायसवाल की कविता 'गाँधी जी के बन्दर मेरी छत पर' के अंतिम दो अंतरे प्रस्तुत हैं–

.....बंदरों ने एकाएक रोटियों को/ आसमान की ओर उछाला/गिद्धों ने फुर्ती से उन्हें संभाला/रोटियाँ पाकर/नजरों से ओझल हो गए/

नजर घुमाई तो/बंदर भी न जाने कहाँ खो गए/पेट की भूख/इंसान, जानवर, हैवान को/एक माला में पिरो गई/बंदरों की हरकत/स्वर्ग में बैठे/गांधी के नैनों को भिगो गई/नजरों से मिली नजर/दिल से दिल की बात हो गई/गांधी के बंदरों से/आज मुलाकात हो गई॥

सदा सरलता अपनाने वाले तथा सद्भावना और सच्चाई को धर्म मानने वाले धुन के धनी गाँधी जी पर लिखी बाल कवि घमण्डीलाल अग्रवाल की कविता 'बापू जी' के अंतिम दो अंतरे दृष्टव्य हैं–

बांधी धोती एक उम्रभर/रही भावना नेक उम्रभर/आजादी की टेक उम्रभर/राजदुलारे बापूजी/हम उनकी बातें अपनाएं/सच्चाई को धर्म बनाएं/इस दुनिया में नाम कमाएं/दें हरकारे बापू जी॥

आजाद देश के नागरिकों को शिक्षा, विज्ञान और नैतिकता के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती मनोहर सिंह आशिया 'मनमौजी' की बाल कविता 'आजादी' का एकांश दृष्टव्य है–

आजादी है उठा तिरंगा झंडा ले के चल/लहरा दे, हां लहरा दे, तू झंडा ले के चल।/बापू का भी सपना सच कर/झूठों से भी बचकर तू चल/सबके हित में अपना हित है/सन्देशा फैला तू घर-घर॥

छुआछूत और जाति-धर्म के भेदभाव को मिटाने की प्रेरणा देने वाले गाँधी जी के बारे में पैरवी करती डॉ. अजय जनमेजय की बाल कविता 'छब्बीस जनवरी' का एकांश प्रस्तुत है–

दिन स्वर्णिम छब्बीस जनवरी/आओ इसे मनाएं। गाँधी जी, टैगोर, तिलक ने/था ये सपना देखा/जात-धर्म से ऊपर उठकर/सबको अपना देखा/इसी प्रथा को, इसी प्यार को/आओ और बढ़ाएँ॥

दुबली-पतली काया के धनी गाँधी जी ने आजादी और प्रेम की ऐसी अलख जगाई कि दुनिया के सारे लोग उनका गुणगान करते हैं। इसी विचार को रेखांकित करती युवा बाल कवि शिवमोहन यादव की बाल कविता 'बड़ी अनोखी लाठी' का एकांश दृष्टव्य है–

घड़ी कमर में/चश्मा पहने/दुबली थी कद काठी/अंग्रेजों को भगा दिया/लेकर के अपनी लाठी/विश्व अहिंसा दिवस जगत में/दो अक्टूबर आया/दो अक्टूबर आया/सारे जग के सब लोगों ने/गुण बापू का गाया/कोई न था उनके जैसा/चाहे मुगल मराठी/अंग्रेजों को भगा दिया/लेकर के अपनी लाठी॥

आज अनेक लोग प्यार, प्रेम, मोहब्बत को भूलकर कैसी मारकाट मचा रहे हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य को रेखांकित करते हुए बाल कवि दीनदयाल शर्मा (आलेख लेखक) अपनी कविता 'गाँधी बाबा' के माध्यम से गाँधी जी को फिर से जन्म लेने की प्रार्थना करते हैं। कविता के प्रथम दो अंतरे दृष्टव्य हैं–

गाँधी बाबा आ जाओ तुम/सुन लो मेरी पुकार/भूल गए हैं यहाँ लोग सब/प्रेम, मोहब्बत प्यार/शांति, अमन और सत्य-अहिंसा/पाठ कौन सिखलाए/समय नहीं है पास किसी के/कौन किसे बतियाए/तुम ना जाओ गाँधी बाबा/हो सबका उद्धार/मारकाट में शर्म न शंका/कैसे हो गए लोग/कैसा संक्रामक है देखो/घर-घर फैला रोग/दवा तुम्हीं दो गाँधी बाबा/सबका मेटो खार॥

सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे में गाँधी जी का प्रतिबिम्ब महसूस करते हुए बाल कवि सुधीर सक्सेना 'सुधि' की बाल कविता 'बापू की याद' का एकांश दृष्टव्य है–

जन्मदिवस की वेला आई/फिर बापू की याद सताई/सूरज नई रोशनी लाया/बच्चा-बच्चा दौड़ा आया/अन्ना में दिखी परछाई/जन चेतना फिर से आई॥

–10/22, आर.एच.बी. कॉलोनी,
हनुमानगढ़ जं.–335512

शिविरा पंचांग माह अक्टूबर, 2011

कार्य दिवस 15 • रविवार 05 • अवकाश 11 • उत्सव 02 • 1 अक्टूबर– समय परिवर्तन, एक पारी विद्यालय 10.30 से 4.30 तक एवं दो पारी विद्यालय प्रातः 7.30 से सांय 5.30 तक (प्रत्येक पारी 5 घन्टे)। **1–5 अक्टूबर**– तृतीय समूह जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (माध्यमिक/प्रारम्भिक)। **1–15 अक्टूबर**– डाइस के प्रपत्रों का भरा जाना (प्रारम्भिक)। **2 अक्टूबर**– गांधी जयंती व शास्त्री जयंती (उत्सव), मण्डल स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, अप्रेल से सितम्बर तक की छात्रवृति का वितरण। **04 अक्टूबर**– दुर्गाष्टमी (अवकाश)। **06 अक्टूबर**– विजया दशमी (अवकाश)। **10 अक्टूबर**– राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी सम्मान समारोह (आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर)। **10–15 अक्टूबर**– तृतीय समूह राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (माध्यमिक/प्रारम्भिक), केजीबीवी राज्यस्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता। **15 अक्टूबर**– विश्व हाथ धुलाई दिवस का विद्यालयों में आयोजन। **17–19 अक्टूबर**– द्वितीय परख (सभी कक्षाओं के लिए), गृह कार्य का प्रथम मूल्यांकन, (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं हेतु)। **20 से 30 अक्टूबर**– मध्यावधि अवकाश। **24 अक्टूबर**– संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस (उत्सव)। **26 अक्टूबर**– दीपावली (अवकाश)। **27 अक्टूबर**– गोर्वधन पूजा (अवकाश)। **28 अक्टूबर**– भैया दूज (अवकाश। **31 अक्टूबर**– इन्दिरा गांधी पुण्य तिथि (संकल्प दिवस), अभिभावकों/शिक्षकों की संयुक्त बैठक आयोजित कर द्वितीय परख के प्रगति पत्र विद्यार्थियों/अभिभावकों को वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार विमर्श। समस्त प्रकार की छात्रवृत्तियों के लिए अतिरिक्त बजट की मांग के प्रस्ताव संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक/माध्यमिक) द्वारा निदेशक, प्रारम्भिक/आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को प्रेषित करना एवं संस्था प्रधान द्वारा स्टॉफ की बैठक लेकर विद्यालय के शैक्षिक एवं सहशैक्षिक भौतिक उन्नयन पर विचार–विमर्श कर निर्णय लेना। शिक्षक–अभिभावक संघ की बैठक आयोजित करना। **नोट**:– 1. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को प्रदत्त पूर्व मैट्रिक विशेष छात्रवृत्ति के लिए जिला मुख्यालय पर चयन। चयन परीक्षा हेतु आवेदन पत्र संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) से प्राप्त करना, कक्षाध्यापकों द्वारा योजना का प्रचार–प्रसार करना, विद्यार्थियों के आवेदन पत्र संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को 30 नवम्बर तक प्रस्तुत करना। 2. सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण का आयोजन। (प्रारम्भिक) 3. लिंग्वालैब प्रशिक्षण। 4. टीएलएम सामग्री से शिक्षकों द्वारा टीएलएम का निर्माण। (प्रारम्भिक) 5. प्रत्येक पाठ पढ़ाने के पश्चात कार्य पुस्तिकाओं में अभ्यास कार्य कराना। 6. कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं प्रधानाध्यापक प्रशिक्षण। 7. अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अल्पसंख्यक बालिकाओं की मध्यावधि अवकाश के दौरान एक्सपोजर विजिट।

गाँधी-जीवन के कुछ प्रसंग

□ मधु सोनी

आप कपड़े क्यों नहीं पहनते ?

बापू के शरीर पर कपड़े नहीं हैं, यह देखकर एक नन्हें विद्यार्थी ने उनसे पूछा– बापू ! आप शरीर पर कपड़े क्यों नहीं पहनते ?

बापू बोले : मेरे पास पैसे कहाँ हैं?

विद्यार्थी : मैं अपनी माँ से कहता हूँ, वह आपको कपड़े सी देगी। तब तो पहनेंगे न ?

बापू : कितने सी देगी ?

विद्यार्थी : आपको कितने चाहिए ? एक... दो... तीन ...

बापू : क्या मैं अकेला हूँ ? मुझ अकेले से कैसे पहने जाएंगे?

विद्यार्थी : नहीं, अकेले से तो नहीं पहने जाएंगे। आपको कितनों के लिए चाहिए ?

बापू : मेरे तो चालीस करोड़ भाई-बन्धु हैं। तुम्हारी माँ उन सभी के लिए सी देगी ? उनके बाद ही मेरी बारी आएगी।

विद्यार्थी गहरे सोच-विचार में पड़ गया। निर्दोष बालक प्रेम से बापू को कपड़े देने गया।

उस कोमल हृदय को बापू ने विश्व-कुटुम्ब-भावना की दीक्षा दी।

छोटी-सी पेंसिल

गाँधीजी अफ्रीका से ताजे ही हिन्दुस्तान आए थे। मुम्बई में विशाल सभा आयोजित हुई थी। काका साहेब कालेलकर गाँधीजी के उतरने के स्थान पर जाकर उनको काम में मदद देते थे।

एक बार गाँधीजी टेबल के आस-पास कुछ ढूँढ़ रहे थे। काका साहेब ने पूछा– क्या ढूँढ़ रहे हैं?'

'मेरी पेंसिल। छोटी-सी है।'

काका साहेब उनका समय और तकलीफ बचाने की मंशा से अपने जेब से निकालकर पेंसिल देने लगे।

'नहीं-नहीं, मेरी वह छोटी-सी पेंसिल ही मुझे चाहिए।'

काका साहेब ने विनती की– 'आप मेरी यह पेंसिल ले लें। आपकी पेंसिल मैं ढूँढ़ दूँगा। बेकार में आपका समय नष्ट हो रहा है।'

बापू : वह छोटी पेंसिल मुझसे खो कैसे सकती है। तुम्हें पता है, वह पेंसिल मुझे मद्रास में नटेसन के छोटे-बेटे ने दी थी। कितने प्रेम से वह पेंसिल लाया था। मैं उसे खो कैसे सकता हूँ।'

दोनों ने मिलकर ढूँढ़ी। आखिरकार मिल गई। दो इंच से भी छोटा टुकड़ा था।

पर उसके पीछे नन्हें बालक का भव्य उल्लास था। महात्मा के हृदय ने कितने आदर से उसे ग्रहण किया था।

सत्यवादी बालक

प्रवास में गाँधी जी एक आश्रम शाला में गए थे। वर्षा हो रही थी। सबेरे बालकों को आने में देरी हो गई थी। गाँधीजी को वहाँ से दूसरी जगह जाना था। बालकों के साथ उनको कुछ ही मिनटें मिली थी।

गाँधीजी ने बात शुरू की– तुम सब कताई करते हो और खादी पहनते हो? पर मुझे बताओ कि तुममें से कितने हमेशा सच बोलते हो? यानि कभी झूठ नहीं बोलते।

कुछ बालकों ने हाथ ऊपर उठाये।

गाँधीजी ने दूसरा सवाल किया– 'अच्छा, तो अब जो अक्सर झूठ बोलते हो, वे कितने हैं?

दो बालकों ने हाथ ऊपर उठाये।

फिर तीन .....

फिर चार विद्यार्थियों ने .....

फिर तो हाथ ही हाथ दिखने लगे। लगभग सभी बालकों ने हाथ ऊपर उठा लिये थे।

गाँधीजी ने उनसे कहा– 'जो खुद अक्सर झूठ बोलते हैं, ऐसा जो जानते हैं और कबूल करते हैं, उनसे हमेशा उम्मीद है। जो यह मानते हैं कि वे कभी झूठ नहीं बोलते, उनका रास्ता कठिन है। मैं दोनों ही सफलता चाहता हूँ।

और तब उन सबसे विदा ली।

अत्यंत मूल्यवान अधेला

खादी के काम के लिए धन संग्रह हेतु गाँधीजी उड़ीसा में यात्रा कर रहे थे।

एक सभा में गाँधीजी बैठे थे। वहाँ एक बुढ़िया स्त्री आई। बाल पूनी जैसे सफेद। कमर झुक गई थी। स्वयंसेवकों से झगड़ कर वह अंदर गाँधीजी के पास आ पहुँची। आपके दर्शन करने थे– कहकर उसने गाँधीजी के चरण स्पर्श किये और तब अंटी में से एक अधेला निकालकर गाँधीजी के पैरों के पास रखा। और वह शांतिपूर्वक चली गई।

महिला ने जो अधेला रखा था, उसे गाँधीजी ने फौरन उठा लिया और अपनी अंटी में खोंस लिया।

सारा हिसाब रखने वाले सेठ जमनालाल बजाज पास बैठे थे, बोले– 'यह अधेला मुझे दे दीजिए।'

गाँधीजी बोले– यह तुमको नहीं दिया जा सकता।

जमनालाल जी– चर्खा संघ के हजारों के चैक मैं लेता हूँ तो इस अधेले को लेकर आपको विश्वास नहीं आता ?

गाँधीजी ने कहा– यह अधेला तो अत्यंत मूल्यवान है। आदमी के पास लाखों हो, उसमें से हजार दे दे, यह बड़ी बात नहीं। पर इस बुढ़िया, गरीब, फटेहाल स्त्री ने अधेला दिया, इसका दिल कितना उदार होगा। उसका यह अधेला तो करोड़ों से बढ़कर है।

मातृभाषा

महात्मा गाँधी से मिलने एक विदेशी सज्जन आए। गाँधीजी से मुलाकात के समय वे हिन्दी में बोले। वार्तालाप में गाँधीजी अंग्रेजी में बोलते रहे। इस प्रकार बातचीत चलती रही। जब दोनों के मध्य बातचीत का सिलसिला पूर्ण हो गया और वे विदेशी सज्जन प्रस्थान कर गए, तब आश्चर्य के साथ उनसे पूछा – 'बापू ! आप उन सज्जन के साथ अंग्रेजी भाषा में क्यों वार्तालाप करते रहे जबकि वे तो हिन्दी में बोल रहे थे।

बापू ने मुस्करा कर कहा, 'मैं जानता था कि आप यह बात मेरे से पूछोगे लेकिन यदि कोई विदेशी हमारी मातृभाषा में बात कर उसका सम्मान करें तब मेरा कर्त्तव्य बन जाता है कि मैं उसकी मातृभाषा में बोलकर उसका सम्मान करूँ। ऐसे अद्भुत व अनमोल विचारों के मालिक थे पूज्य बापू !

– माहेश्वरी पब्लिक स्कूल
बंशीवाला मंदिर के पास, नागौर (राजस्थान)

शांति के पुजारी : लाल बहादुर शास्त्री

❑ अनिल कुमार झंवर

भारतीय इतिहास में 2 अक्टूबर का दिन विशेष महत्व रखता है। इस दिन भारत माँ की गोद में दो महान विभूतियों ने जन्म लिया। दोनों ही महामानव दुबले-पतले सरलता और नम्रता की प्रतिमूर्ति तथा सत्य-अहिंसा के पुजारी थे।

दिनांक 2 अक्टूबर 1869 को गाँधी जी का जन्म हुआ और इसी दिन 2 अक्टूबर 1904 को लाल बहादुर शास्त्री का जन्म हुआ। देश इन दोनों ही महान सपूतों की जयन्ती मनाकर गौरवान्वित होता है।

गंगापार का नन्हा-सा दुबला-पतला आदमी 'ननकू' है। 'ननकू' का जन्म 2 अक्टूबर 1904 में वाराणसी जिले के मुगलसराय नगर में एक अत्यन्त साधारण कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री शारदा प्रसाद श्रीवास्तव इलाहाबाद की कायस्थ पाठशाला में अध्यापक थे। वह धनाढ्य नहीं थे, परन्तु उत्तर प्रदेश के कायस्थ परिवारों की उच्च सांस्कृतिक परम्परा, बौद्धिक विकास तथा उच्च जीवन व्यतीत करने के आदर्श से प्रेरित थे। दुर्भाग्यवश 18 माह की अल्पायु में पिता का साया इनके ऊपर से उठ गया। असाधारण परन्तु देखने में साधारण 'लाल' ने संकटों, अभावों से जूझकर आगे बढ़ना बचपन में ही सीख लिया था। गाँव की मिट्टी में जन्म लेने वाला बचपन में नौ-नौ मील पैदल चलकर विद्यालय पहुँचने वाला 'ननकू' हिमालय पर्वत के समान ऊँचे भारत महान के उच्चतम पद 'प्रधानमन्त्री' पद पर 'लाल बहादुर शास्त्री' के रूप में पहुँचा।

बचपन में लाल बहादुर को घर में 'नन्हें' अथवा 'ननकू' के नाम से पुकारा जाता था। धर्मपरायण माता श्रीमती रामदुलारी देवी के लिए 'नन्हें' गंगा माता की देन थे। कहते हैं कि जब वे बहुत छोटे थे, तब गंगा स्नान के लिए गई हुई माता से छूट गए और पुलिस की सहायता से वापस मिले थे।

लाल बहादुर की प्रारम्भिक शिक्षा अपने नाना के घर मुगलसराय में हुई। छठी कक्षा पास करने के बाद वे वाराणसी में अपने मौसा रघुनाथ प्रसाद के पास चले गए। उन्होंने लाल बहादुर

का नाम हरिश चन्द्र हाई स्कूल में लिखवा दिया। यहीं बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गाँधी के भाषणों को सुनकर लाल बहादुर के मन में राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ।

सन् 1919 में महात्मा गाँधी द्वारा असहयोग आन्दोलन छेड़ने पर हाई स्कूल की परीक्षा के समय मित्रों, सगे-सम्बन्धियों द्वारा समझाने पर भी लाल बहादुर ने अपनी और अपने परिवार की चिन्ता न कर आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और शीघ्र ही बन्दी बना लिए गए। सन् 1922 में जेल से छूटने पर लाल बहादुर काशी विद्यापीठ में अध्ययन करने लगे। इसी विद्यापीठ से 1925 में लाल बहादुर ने 'शास्त्री' परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके बाद 'शास्त्री' शब्द उनके नाम के साथ जुड़ गया। वह संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू भाषा अच्छी तरह जानते थे।

इलाहाबाद पहुँचने पर 1927 में लाल बहादुर का विवाह मिर्जापुर निवासी गणेश प्रसाद की पुत्री ललिता देवी के साथ इस शर्त पर हुआ कि वे उनको स्वाधीनता आन्दोलनों में भाग लेने से नहीं रोकेंगी। इतिहास साक्षी है कि ललिता जी उनके देश प्रेम में कभी आड़े आई भी नहीं। विवाहोपरान्त लाल बहादुर पूर्णरूप से आजादी की जंग में कूद पड़े शायद इसके पीछे ललिता जी की भी प्रेरणा काम कर रही थी। शास्त्री जी 1930 से 1945 तक के अन्तराल में नौ वर्ष जेल में रहे। गोरी सरकार ने उनको अनेक यातनाएँ दीं, प्रलोभन दिए लेकिन वे टस से मस नहीं हुए। शास्त्री जी को पुस्तक पढ़ने में अतीव रुचि थी। जेल में भी उनका यह पुस्तक प्रेम बरकरार रहा।

आजादी से पूर्व शास्त्री जी सन् 1946 में उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य बने, 1951 में काँग्रेस ने उनको महासचिव चुन लिया। 1952 में वे राज्यसभा के सदस्य चुन लिये गये और केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में रेल व परिवहन मन्त्री बने।

सन् 1958 में नेहरू मंत्रिमण्डल में संचार परिवहन मंत्री रहे और उसके बाद उद्योग व वाणिज्य मंत्री का कार्यभार सौंपा गया। इन सभी मंत्रालयों का कार्य उन्होंने बड़ी तन्मयता, जानकारी व कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ किया। पं. गोविन्द वल्लभ पंत के देहावसान के उपरान्त शास्त्री जी को सन् 1961 में गृहमंत्रालय का कार्य सौंपा गया। सन् 1963 में कामराज योजना के अन्तर्गत काम करने के लिए उन्होंने मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया। सन् 1964 में उनको बिना विभाग का मंत्री बना लिया गया। इसी वर्ष नेहरू जी अस्वस्थ हो गए। शास्त्री जी ने एक दिन उनसे पूछा– 'आपने मुझे पुनः मंत्रिमण्डल में तो शामिल कर लिया, लेकिन बतायें भी, मुझे क्या काम करना है?'

नेहरू जी के दिवंगत हो जाने के उपरान्त शास्त्री जी को 22 मई 1964 को संसदीय दल का नेता चुन लिया गया। उन्होंने भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री के रूप में 9 जून 1964 को शपथ ग्रहण की।

जिस समय शास्त्री जी ने भारत की बागडोर सम्भाली, उस समय देश की स्थिति बड़ी नाजुक थी। विश्व की आँखें इस छोटे से प्रधानमंत्री पर टिकी हुई थीं। यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि विश्व में यही एक प्रश्न था कि नेहरू के बाद कौन ? शास्त्री जी ने इस विकट प्रश्न का उत्तर कथनी से न देकर करनी से दिया, उन्होंने विश्व को पुनः यह बता दिया कि भारत कभी भी किसी शक्ति के सामने नहीं झुकेगा।

जब पाकिस्तान ने सन् 1965 में भारत पर आक्रमण किया तब शास्त्री जी ने वज्र की तरह कठोर बनकर 15 अगस्त 1965 को लाल किले से राष्ट्र के नाम सन्देश देते हुए कहा था– 'हम रहें या न रहें, लेकिन यह झण्डा रहना चाहिए और मुझे विश्वास है कि यह झण्डा रहेगा। हम

और आप रहें या न रहें लेकिन भारत का सिर ऊँचा रहेगा। भारत दुनिया के देशों में एक बड़ा देश होगा और शायद भारत दुनिया को कुछ दे भी सके। मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मैं अपने प्राण दे सकता हूँ, पर अपने देश की एक इंच भी भूमि नहीं दे सकता हूँ। मैं ताकत का जवाब ताकत से भी देना जानता हूँ और जो लोग यह सोचते हैं कि हम ताकत से भारत को झुका सकते हैं, वे भूल रहे हैं, क्योंकि भारत का प्रधानमंत्री तन का भले ही कमजोर हो, पर वह मन से कमजोर नहीं है।' आपके ओजस्वी उद्‌बोधन ने देश की सेनाओं का हौंसला बढ़ाया और इस युद्ध में भारत को गौरवपूर्ण विजयश्री प्राप्त हुई।

एक सुखद और अद्‌भुत संयोग है कि भारत की धरती पर जिस युग में अहिंसा के पुजारी, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जन्म और मरण जिस माह में हुआ, ठीक उसी माह में शांति के सौदागर श्री लाल बहादुर शास्त्री का जन्म-मरण भी हुआ। यहाँ तक कि जन्म की तारीख तो एक ही थी– 2 अक्टूबर। गाँधी जी 30 जनवरी को शहीद हुए तो शास्त्री जी भी असमय ही 11 जनवरी 1966 को ताशकन्द में आकस्मात हृदयगति रुक जाने के कारण हमारे बीच से सदा-सदा के लिए चले गए। आपके निधन का समाचार सुनकर सम्पूर्ण विश्व शोक में डूब गया। आपने मात्र 19 महीने देश का नेतृत्व किया।

उनके कार्यकाल में देश ने जो चहुँमुखी विकास किया उसकी मिसाल क्या होगी कि जब वे स्वर्गवासी हुए तो उनका परिवार कर्जदार था। शास्त्री जी ने देश को 'जय-जवान जय-किसान' का नारा भी दिया। उनका यह नारा सदैव अमर रहेगा। मरणोपरान्त उनको भारत रत्न से सम्मानित किया गया, जिसके वे अधिकारी थे।

पं. जवाहर लाल नेहरू ने एक बार शास्त्री जी का अभिनन्दन करते हुए उन्हें– 'उच्चतम व्यक्तित्व वाला, चेतनावान तथा कठोर परिश्रमी व्यक्ति' कहा था। शास्त्री जी का जीवन अत्यन्त ही सादा था। आप त्याग और तपस्या की मूर्ति थे। उनके लिए देश ही सर्वोपरि था। शास्त्री जी का जीवन हम लोगों के लिए एक सबक है। उनकी उत्कृष्ट देश भक्ति, अवर्णनीय त्याग-सन्तोष और आदि से अन्त तक निष्काम कर्म हमें सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

–अध्यापक
रा.उ.प्रा.वि., पुरानी कचहरी, निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)

19 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस

बाल विज्ञान कांग्रेस का प्रारम्भ एक प्रयोग के रूप में ग्वालियर, मध्यप्रदेश 1990 में हुआ था। पूरे देश में यह गतिविधि 1993 से आयोजित हो रही है। इसका प्रथम सम्मेलन नई दिल्ली में आयोजित हुआ था। तब से लगातार राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस (राबाविका) हर वर्ष 27 से 31 दिसम्बर कार्यक्रम द्वारा सम्पन्न होता है। इस कार्यक्रम का गुणात्मक एवं परिणात्मक विस्तार विभिन्न देशों के बच्चों के भी आकर्षण का केन्द्र है। पिछले वर्षों में जर्मनी, बंगलादेश, कतर (बहरीन) के बच्चों ने भी भाग लिया है। विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि विकसित करने, खोज करने, पर्यावरण को समझने, जानने एवं वैज्ञानिक विधि से कार्य करने सम्बन्धी ललक अपनाने हेतु प्रवृत करने के उद्देश्य से बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन किया जाता है।

इस वर्ष राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का मुख्य विषय **'भूमि संसाधन : समृद्धि के लिए उपयोग करें, भविष्य के लिए बचाएं'** रखा गया है। राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन तीन स्तरों पर किया जाता है, खण्ड स्तर, राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर। राष्ट्रीय स्तर पर विद्यार्थियों को बाल विज्ञान कांग्रेस में भाग लेने हेतु प्रेरित करने के लिए सम्पूर्ण राज्य में शिक्षकों को संदर्भ व्यक्ति के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है। तत्पश्चात् छात्रों द्वारा संदर्भ व्यक्ति के मार्गदर्शन में अपनी-अपनी परियोजनाएं सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यालयों को प्रेषित की जाती हैं। प्राप्त परियोजनाओं को श्रोताओं के समक्ष निर्धारित समय 8 मिनट में प्रस्तुत करने हेतु क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा खण्ड स्तर पर राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन किया जाता है। इस प्रतियोगिता में चयनित परियोजनाओं को राज्य स्तर पर प्रस्तुतीकरण हेतु आमंत्रित किया जाता है। राज्य स्तर पर राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन किया जाता है। राज्य स्तर पर प्रस्तुतीकरण के आधार पर विशेषता द्वारा 30 परियोजनाओं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस जो 27-31 दिसम्बर, 2005 को जयपुर नेशनल विश्वविद्यालय, जगतपुरा, जयपुर में आयोजित की जा रही है, के लिए चयनित किया जाएगा। इन बाल वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत परियोजना प्रतिवेदनों में से राष्ट्रीय प्रविष्टियों का चयन किया जाएगा। परियोजना रिपोर्ट लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखें–

• परियोजना रिपोर्ट के लिए ए-4 आकार का सादा कागज इस्तेमाल करें। • सबसे पहले परियोजना का शीर्षक बड़े अक्षरों में लिखा जावे। • दूसरा पृष्ठ फार्म-ए (अंग्रेजी में देवें) उसके नीचे अपना नाम, कक्षा, स्कूल का पता एवं घर का पता लिखें। • **सारांश** : अपने परियोजना का सारांश अंग्रेजी में अधिकतम 500 शब्दों में लिखें। अगर रिपोर्ट की भाषा अंग्रेजी नहीं है तो उस भाषा में भी सारांश लिखकर अंग्रेजी वाले सारांश के नीचे लगा देवें।

परियोजना के पृष्ठों को निम्न क्रम दें– 1. आवरण पृष्ठ, 2. दूसरा पृष्ठ (फार्म सं.-ए), 3. (अ) विषय सूची (ब) चित्रों की सूची (स) सारणी की सूची, 4. प्रस्तावना : पूरी परियोजना का स्वरूप प्रस्तावना में लिखा जाना चाहिए। इसमें रिपोर्ट की रूपरेखा भी रहती है। 5. परियोजना क्यों : 50 से 100 शब्दों में बतलायें कि इस परियोजना को चुनने का क्या कारण है। 6. कार्य योजना : इसमें कार्य की संरचना दी जाती है तथा इसे रेखाचित्र के द्वारा भी दिखाया जाता है। 7. क्रियाविधि : परियोजना की गतिविधि के सम्बन्ध में। 8. आंकड़ों का संग्रह : प्रयोग, सर्वेक्षण से जो आंकड़े इकट्ठे किये गये हैं, इस अध्याय में दें। 9. आंकड़ों का विश्लेषण प्राप्त किये गये आंकड़ों का विश्लेषण कर लिखें। उनके बीच सम्बन्ध स्थापित कर निष्कर्ष यहाँ न डालें। 10. निष्कर्ष : विश्लेषित आंकड़ों के आधार पर अपना निष्कर्ष लिखें। 11. समस्या का हल (समाधान), अपने समाधान हेतु जिन चरणों में क्रियाशीलन किया है उसकी चर्चा करें। फोटो, मानचित्र, चिट्ठियाँ, अखबार की रिपोर्ट आदि दे सकते हैं। 12. आभार : जिनसे भी गतिविधियों में सहायता मिली है उनका आभार व्यक्त करें। 13. संदर्भ।

पोस्टर प्रस्तुतीकरण : (पोस्टर साईज 55 सेमी.×70 सेमी.) अधिकतम चार पोस्टर, आपके पोस्टर में निम्न सूचनाएं होनी चाहिए– 1. परियोजना शीर्षक 2. समूह सदस्यों के नाम 3. उद्देश्य 4. क्षेत्र का मानचित्र 5. क्रिया विधि 6. आंकड़ों का स्वरूप 7. निष्कर्ष 8. समस्या समाधान।

झोला पुस्तकालय-3

आत्मकथा एक अध्यापिका की

❑ शिवरतन थानवी

शिविरा अगस्त 2011 में आपने 'नीलबाग स्कूल' के संस्थापक शिक्षक डेविड ऑसबरो के जीवन और शिक्षा-दर्शन के विषय में कुछ जाना था और उससे पहले 'शिविरा नवम्बर 2010' में आपने एक कर्मठ शिक्षक श्री हरिनंदन मिन्डा की आत्मकथा 'शिक्षक के अनुभव' की समीक्षा भी जरूर पढ़ी होगी। आज पढ़िए राजस्थान की एक जानी-मानी आदर्श अध्यापिका श्रीमती मिथिलेश कुमारी मुखर्जी के जीवन से जुड़े कई रोचक और मार्मिक प्रसंगों से भरी रामकहानी का परिचय। *—लेखक*

हर शिक्षक का जीवन अनमोल होता है। हर शिक्षक चाहे तो अपने जीवन के खट्टे-मीठे कई अनुभव चुन-चुन कर छोटी-बड़ी एक अच्छी सी पुस्तक लिख सकता है। लेकिन लिखता नहीं है। अनुभव करता है पर व्यक्त नहीं करता है। रुचि की बात है। भाषा पर अधिकार तो प्रायः सभी का होता है किन्तु लिखने की इच्छा सबको नहीं होती।

श्रीमती मिथिलेश कुमारी मुखर्जी ने हिम्मत की और अपने अनुभवों के विशाल भण्डार से अनुभव चुन-चुन कर 307 पृष्ठों की अपनी आत्मकथा लिख दी और बड़ा रोचक नाम रखा– 'मित्थल मौसी का परिवार-पुराण।' उन्हें घर में 'मित्थल मौसी' कहते थे। उनकी तीन भांजियाँ हैं– दूर्वा, पूर्वा और अपूर्वा। पूर्वा को वे टीटू कहती थीं। पूर्वा एक कुशल लेखिका हैं। उसी के आग्रह से इस ग्रंथ की रचना हुई। इसी कारण यह पूरी रामकहानी टीटू के नाम डायरी में पत्रों के रूप में ही लिखी गई है। पत्रों पर लिखने के दिन की तारीखें पड़ी हैं। भांजी लेखिका टीटू का ही यह आग्रह था कि अपने जीवन की संध्या में वे शिक्षाप्रेमी पाठकों पर यह कृपा करें कि वे विगत जीवन पर एक नजर डालें और जीवन भर जो अनुभव किया है वह कह डालें।

कह डाला उन्होंने। भांजी की बात मान ली। फल यह हुआ कि पाठकों को एक वास्तविक जीवन के दर्शन हुए, सहज स्वतः स्फूर्त तारीखवार पत्रों के रूप में। भांजी टीटू (प्रसिद्ध शिक्षाविद् लेखिका पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा) ने इसका संपादन किया और हार्पर कॉलिंस, नई दिल्ली से इसका प्रकाशन हुआ। मूल्य है दो सौ पचास रुपए और पृष्ठ संख्या 307 है। नाम रखा 'मित्थल मौसी का परिवार पुराण।'

दि. 30.4.98 को लेखिका ने कहा है कि जब उन्होंने एम.ए. करना चाहा तो उनकी दीदी और जीजाजी का आग्रह रहा कि वह इलाहाबाद ट्रेनिंग कॉलेज में प्रवेश ले। जीजाजी ने मित्र के मार्फत डॉ. संपूर्णानंद (शिक्षा मंत्री) से सिफारिश करानी चाही। डॉ. संपूर्णानंद ने उन्हें पत्र लिखा, 'यह लड़की यदि कायस्थ न होती तो मैं मदद कर सकता था।' मित्थल मौसी ने डायरी में लिखा, 'क्या पता प्रो. कायस्थ के नाम पर कहीं टिप्पणी की गई होगी या विवाद उठा होगा। ... मैं अति प्रसन्न। मैंने यूनीवर्सिटी में स्थान पा लिया। ... हिन्दी में मुझे सर्वोच्च अंक प्राप्त हुए थे।'

एम.ए. कक्षा में प्रवेश लिए एक महीना भी नहीं हुआ था कि ट्रेनिंग कालेज में किसी प्रत्याशी के न आने पर सीट खाली रह गई और इन्हें बुलावा आ गया। इनकी खुशी काफूर हो गई और जीजाजी की खुशी का ठिकाना न रहा।

इनकी दीदी सावित्री भारतीया ने 1938 में जयपुर रियासत में इंस्पेक्ट्रेस ऑफ स्कूल्स के पद पर काम शुरू किया और 1944 में जयपुर के पहले महिला महाविद्यालय, 'महारानी कॉलेज' की संस्थापिका बनीं। उनके कहने पर मिथिलेश एल.टी. करके 1940 में जयपुर की एकमात्र कन्या विद्यालय - महाराजा गर्ल्स हाईस्कूल की अध्यापिका बनीं। इन्होंने अपनी डायरी में लिखा, 'उसमें हिन्दी अध्यापिका के पद के लिए मैं इंटरव्यू देने गई। इंटरव्यू लेने वालों में मुख्य थे जोबनेर के ठाकुर साहब श्री नरेन्द्र सिंह जी। उनका पहला प्रश्न था– राष्ट्रकवि कौन हैं? मिथिलेश ने उचित उत्तर दिया। फिर सुभद्रा कुमारी चौहान की किसी प्रसिद्ध कविता की पंक्तियाँ सुनाने का आदेश हुआ। इन्होंने सुना दी– 'बुंदेले हर बोलों के मुख, हमने सुनी कहानी थी....।'

महाराजा गर्ल्स हाईस्कूल की हैड मिस्ट्रेस थीं मिस नैन्सी मार्टिन। ताड़ जैसी लम्बी थीं। शाला भवन की ऊपरी मंजिल पर उनके निवास की व्यवस्था थी। मिथिलेश ने ट्रेनिंग में सीखा था कि कक्षा की छात्र संख्या के अनुरूप ही अपने स्वर को नियंत्रित रखना चाहिए। नवीं और दसवीं में क्रमशः 6 और 5 छात्राएँ थीं। 'इतनी नगण्य संख्या के बीच मेरा कण्ठस्वर कक्षालय के बाहर नहीं पहुँचता। मिस मार्टिन अपने राउण्ड पर मेरी कक्षा के बाहर खड़ी हो मेरी आवाज को कान लगाकर सुनने की कोशिश करतीं, अन्त में उन्होंने यही निष्कर्ष निकाला कि मैं अपनी छात्राओं को पढ़ाती नहीं हूँ– केवल बातचीत ही करती हूँ उनसे।' हैड मिस्ट्रेस ने इंस्पेक्ट्रेस से शिकायत कर दी। दीदी ने इन्हें घर पर यह जानकारी दी। फिर क्या था, ये मिस मार्टिन से जा भिड़ी। निवेदन किया कि वे इनकी कक्षा के अन्दर आकर बैठें और सुनें कि ये लड़कियों को किस तरह पढ़ाती हैं और कितनी बातें करती हैं। उनके इस अनुरोध को तत्काल मान लेना मिस मार्टिन की शान के खिलाफ था। नाक का सवाल जो था। लगभग एक सप्ताह बाद वे इनकी कक्षा में लगभग दस मिनट बैठीं और बिना कुछ भी कहे उठकर चलती बनीं।

शिक्षक रूप में सहयोगियों, विद्यार्थियों और अधिकारियों के साथ कैसे-कैसे प्रिय-अप्रिय अनुभव हुए उनसे पूरी पुस्तक भरी पड़ी है। निजी जीवन, सगे-सम्बन्धी, नाती-पोते और शिक्षा जगत के कोने-कोने की स्वानुभूत यथार्थ झाँकियाँ आपको यहाँ पढ़ने को मिलेंगी।

महाराजा गर्ल्स हाईस्कूल से विदा लेकर ये विमैन्स नॉर्मल स्कूल जयपुर की 1949-50 में प्रधानाध्यापिका बनीं। मिस मार्टिन उधर रिटायर हुईं तो श्रीमती ओटिमा जोशी महाराजा गर्ल्स हाई स्कूल की प्रधानाध्यापिका बनीं। विमैन्स नॉर्मल स्कूल में जे.टी.सी. अर्थात् जूनियर टीचर्स सर्टिफिकेट का शिक्षक-प्रशिक्षण होता था। स्कूल की बस बूढ़ी, अंजर-पंजर सब ढीले, रोज लेट होती थी। एक रोज हार कर डायरेक्टर से फरियाद करने खाली बस लेकर ये ड्राइवर के साथ चलीं तो रास्ते में ही खटारा बस का फाटक खुल गया और ये सड़क पर गिर पड़ीं। जगह-जगह चोटें आईं, उठना-चलना मुश्किल हुआ। ड्राइवर ने गोद में उठाया, वापस बस में बिठाया, अस्पताल ले गया, घर पहुँचाया और हफ्ते भर तक ये घर में शय्याग्रस्त रहीं। वहाँ हर काम के लिए गोद में उठाकर लाने-ले जाने का जिम्मा

उठाना पड़ा इनके पतिदेव को। यह भी एक लम्बी कहानी है, हिम्मत और जीवट की।

एक कहानी और है मुख्यमंत्री मोहनलाल जी सुखाड़िया की पत्नी की अपेक्षाओं के उल्लंघन की। चुनाव प्रसार में मदद करने को कुछ सीनियर छात्राओं को डेप्यूट करवाने की मंशा लेकर वे इनकी शाला 'महाराजा गर्ल्स हाई स्कूल, उदयपुर' में आईं। इन्होंने ना कर दिया। वे नाराज हो गईं। लेकिन ये अपने निर्णय पर डटी रहीं। अपनी निर्भीकता की पहली कसौटी पर ये इससे भी पहले खरी उतर चुकी थीं। शिवचरण जी माथुर (मंत्री) की पत्नी सुशीला माथुर को अपनी नवजात बच्ची नौकरानी सहित स्कूल न लाने का निर्णय सुना चुकी थीं और कई अन्य अध्यापिकाओं की भी ऐसी आदत बंद करा चुकी थीं। जनुभाई (जनार्दन राय नागर) की 'जनता रेडियो' द्वारा अधिकारियों-कर्मचारियों पर छोटी-छोटी बातों पर कीचड़ उछालने की प्रवृत्ति की भी किंवदंतियाँ सुन चुकी थीं, सामना कर चुकी थीं। वे सचमुच निर्भीक अध्यापिका थीं।

उपनिरीक्षिका पद पर आसीन हुईं तो ऊँट की सवारी कर श्रीमाधोपुर के पास बघाल गांव की स्कूल का निरीक्षण करने जाना पड़ा। कंपकंपी छूट गई। साथ बैठी स्कूल की प्रधानाध्यापिका ने इन्हें सम्हाला। जब जयपुर के महारानी कालेज में हिंदी और गृह-विज्ञान पढ़ाती थीं तो गृहविज्ञान की प्रैक्टिकल परीक्षा लेने बोर्ड की ओर से राजस्थान के कई हाई स्कूल देखे। एक सहायक अध्यापिका निलम्बित हुई तो वह इमरतियों की सौगात लेकर आई, साथ में पान का बीड़ा भी। इन्हें पान का शौक था। इमरतियाँ चपरासिन को सौंपी और पान उठाया तो उसमें सोने की मोहर ! काटो तो खून नहीं। रोष प्रकट कर मोहर लौटाई उसे और भगवान को नत-मस्तक हुईं कि उसने लाज रख ली। यों मातहतों द्वारा रिश्वत की चेष्टाओं के और भी कई प्रसंग हैं।

शिक्षा निदेशक गजराज सिंह जी के पी.ए. खान मिर्जा जोधपुर से इस पद पर आये थे, कुशल और कुशाग्र बुद्धिवाले। उनका भी शब्द-चित्र पुस्तक में अच्छा दिया है। उन्होंने टाइपराइटर की निदेशक से क्रयोपरान्त स्वीकृति दिलाने में मिथिलेश की बड़ी मदद की। एक विधवा अध्यापिका को गर्भ रह गया, लोगों ने कुलटा और दुष्चरित्रा घोषित कर उसे नौकरी से निकाल देने के लिए पत्र लिखे, डेलिगेशन आए, किन्तु निदेशक ने इन्हें मोरल सपोर्ट दिया और इन्होंने उसे सहारा दिया। आश्वस्त किया कि पहले वह प्रसव का काम पूरा करे फिर आए। विधवा होते हुए भी उसने एक पुत्र को जन्म दिया। मिथिलेश ने उसे एक नई शाला में स्थानान्तरित कर दिया। उसने लगन, मेहनत व अति कुशलता से शाला खड़ी की और ग्रामवासियों का विश्वास अर्जित किया। लेखिका ने डायरी में लिखा, 'ग्रामीण अंचल के सिंगल टीचर स्कूल्स उस समय जिस व्यवस्थित रूप से अध्यापिकाएं चलातीं, मैं उनके प्रति आज भी नतमस्तक होती हूँ।'

ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख किया है और यह भी कहती गई हैं, 'विभाग से सम्बन्धित इतनी ढेर-सी घटनाएँ हैं, किन-किन का उल्लेख करूँ?' जोधपुर एस.टी.सी. स्कूल की प्रधानाध्यापिका के पद की भी खूब लम्बी रोचक कहानी है। 'शंभू दादा' नाम से प्रसिद्ध शंभूलाल शर्मा तब जोधपुर के उपनिदेशक पद पर थे। प्रवीण प्रवक्ता थे। एक भाषण में उन्होंने छात्राध्यापिकाओं को सम्बोधित करते हुए लेखिका के गौरवमय पिता के विषय में कहा, 'आप जानती नहीं, यह किस पिता की पुत्री हैं? इनके पिता जब उदयपुर परीक्षा लेने पहुँचते, हमारे महाराणा साहब उन्हें अपना विशिष्ट अतिथि सा आदर देते और उन्हें स्टेशन से लाने के लिए चार घोड़ों की बग्घी भेजी जाती थी।' लेखिका उत्फुल्ल भी हुई और लज्जित भी कि वे तो अपनी अम्मा व पिता के पाँव की धूल भी नहीं थीं। कैसी विनम्रता थी लेखिका में।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम से जुड़ने की ललक थी। इस विभाग के डिप्टी डायरेक्टर श्री उमाशंकर गौड़ के साथ काम किया। दिल्ली में प्रशिक्षण लिया। चंडीगढ़-शिमला का स्टडी टूर किया। नीलोखेड़ी व भाखरा डैम भी गईं। स्कॉलरशिप प्राप्त कर डेनमार्क की यात्रा की, वहाँ के साल भर अध्ययन का और सामाजिक जीवन का विस्तार से वर्णन किया। जाते वक्त एयर से गईं, लौटते वक्त 20 दिन की समुद्र यात्रा जहाज पर की। उस यात्रा का भी विस्तार से रोचक वर्णन किया है। डेनमार्क प्रवास काल की नौ माह की हाफ-पे लीव स्वीकृत हुई। लौटकर असिस्टेंट डायरेक्टर ऑफ वोकेशनल एज्यूकेशन की पोस्ट पर बीकानेर रहीं। असिस्टेंट डायरेक्टर केयर फीडिंग प्रोग्राम, विकास विभाग, के अनुभव भी आप इनसे सुनिए। तब के शिक्षा निदेशक श्री अनिल बोर्दिया मा. आबू में प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश में जो एज्यूकेशनल वर्कशॉप कराया करते थे उसमें भी ये विकास विभाग की ओर से सम्मिलित हुआ करतीं। वहाँ ब्रह्मकुमारियों के आश्रम की चर्चा सुनी और उनका यह नारा भी सुना कि 'आप हमें अपनी सम्पति दें, हम आपको शान्ति देंगे।'

केरल, मध्यप्रदेश और बिहार की भी यात्रा की। बिहार यात्रा में लोकनायक जयप्रकाश नारायण से भी मुलाकात हुई जिन्होंने जयपुर के ही सिद्धराज ढड्ढा की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उनका यह कहना हुआ और ये पानी-पानी हो गईं। क्योंकि इन्हें पता था कि जयपुर के कांग्रेसी नेता भला सिद्धराज जी को क्यों घास डालते ?

नाथद्वारा के मंदिर में एक अमेरिकन दम्पति को दर्शन नहीं करने दिया गया, वे मंदिर की सीढ़ियों पर धूल-धूसरित माथा पटकते रहे। इन्होंने खुद देखा। आखिर हारकर यह कहते लौटे कि 'एक दिन आएगा जब भगवान इस मंदिर को छोड़ देंगे। भगवान पर किसी की बपौती (मोनोपली) नहीं है। हम क्यों नहीं उनके दर्शन कर सकते ?'

यों कई सुखमय और दुखमय दास्तानें लेखिका ने इस पुस्तक में दी हैं। दि. 8.4.98 से डायरी में पत्रों का लिखना प्रारम्भ हुआ और 24.1.99 का आखिरी पत्र वे पूरा नहीं कर सकीं। उन्हें पक्षाघात हो गया। सम्पादक पूर्वा (टीटू) ने अंत में सूचना दी है कि 9 फरवरी 2001 को उनका देहावसान हो गया।

इस शैली में इतने रोचक ढंग से यों इतने विस्तार से किसी अन्य शिक्षक की आत्मकथा पहले आपने नहीं पढ़ी होगी।

–मोची स्ट्रीट, फलोदी, जोधपुर (राज.)

विराट् चरण जनपथ पर अब भी गूँज रहे हैं

❑ अमर सिंह पाण्डेय

श्री अमरसिंह पाण्डेय का नाम शिविरा के पाठकों के लिए अपरिचित नहीं है। अपनी रोचक लेखन शैली के लिए विख्यात पाण्डेय जी के कदाचित शताधिक आलेख शिविरा-विरासत में सुरक्षित है। 86 वर्षीय अमरसिंह जी ने अपनी रुग्णावस्था के बावजूद शिविरा के आग्रह पर यह आलेख भेजने की कृपा की है जिसके लिए हम आभारी हैं। –व.सं.

देश का 1947 विभाजन एक त्रासदी थी। उस घटना का प्रत्यक्ष दर्शन अपने निवास स्थान पर भी दोनों ही देशों के आव्रजन प्रव्रजन के रूप में करने की करुण विवशता थी। संयोगवश लेखक भारत सरकार के मासिक प्रकाशन आजकल का पाठक सदस्य भी था। इस करुण आव्रजन-प्रव्रजन पर एक लेख 'आजकल' में इसी 'युग के विराट् चरण जन पथ पर गूँज रहे हैं' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। हृदय-स्पर्शी रूप में। शिक्षक होने की सेवा निवृत्ति के बाद लेखक को इस शीर्षक का साक्षात्कार अब भी दैनिक रूप से इस रूप में करना पड़ता है कि उसका आवास मोहल्ले की एक ऐसी सड़क के किनारे है जहाँ प्रातःकाल से सायंकाल तक देश की भावी पीढ़ी के छात्रों-छात्राओं के युग के विराट् चरण अब भी जन पथ पर गूँजते रहते हैं। एक पुराने उपन्यास के 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के कुछ अंकों में धारावाहिक उपन्यास 'भगदड़' के नाम से छपे रूप की तरह। या फिर 'टोलियाँ चलीं उड़ाती धूल अनोखा भगदड़ का इतिहास' 'युग के विराट् चरण जनपथ पर गूँज रहें हैं' का आलेखन राजस्थान शिक्षा विभाग के एक पूर्व निदेशक महोदय ने अपने 'दिशाकल्प' स्तम्भ में शिविरा पत्रिका के एक 'सौतेला पाठ' नामक शीर्षक से करते हुए बँगलोर के एक स्कूल शिक्षक का उदाहरण दिया था जो आज घर-घर की कहानी के रूप में प्रायः सर्वत्र व्यापी होता जा रहा है। जो घनीभूत पीड़ा थी कवि के अंतर में छाई। दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आई।

बँगलोर के एक स्कूल में कक्षाध्यापक कक्षा में आए, श्यामपट्ट के उन्मुख हुए, उस पर अपना नाम-पता और टेलीफोन नम्बर लिखा, कक्षोन्मुख हुए और बोले– 'जिन छात्रों को उत्तीर्ण होना है, और अच्छी तरह उत्तीर्ण होना है, वे इस पते पर रोज पढ़ने आ जाएँ।'

छात्र श्यामपट्ट लेख को पढ़कर उत्सुकता से उबरें तब तक शिक्षक जा चुके थे। संयत छात्र राजी-गैर राजी उस पते पर जाने को विवश थे, कमोबेश यह पर्यावरण, हमारे आज के स्कूलों का है क्योंकि शिक्षक कक्षा में तो सौतेला पाठ ही प्रायः पढ़ाते हैं और फिर भी परदे के पीछे 'मेरिट' की कहानी भी आम है। साथ ही 20% सत्रांक का सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों में अपना प्रभाव भिन्न-भिन्न रूप से दिखाता है। फलतः छात्रों के दो वर्ग बन गए हैं, एक वर्ग ट्यूशननिष्ठ और दूसरा वर्ग भाग्यनिष्ठ बन गया है फिर 'कोई फेल नहीं' की प्रवृत्ति भी अपना काम करती है। एक ओर कोटा-पैटर्न है जो अपना प्रभाव भरतपुर जयपुर नदबई आदि स्थानों पर दिखा रहा है फलतः मैरिट हाई जा रही है फलतः साधारण छात्र इस अभिनय को चकित होकर देख रहा है।

मूल बात यह है कि ट्यूशन की विधा शिक्षकों और छात्रों दोनों को ही चकित कर रही है और स्थिति न ययौ न तस्थौ अर्थात् नो ह्वेअर तथा नाउ हियर की कीली पर घूम रही है गोपाल सिंह नेपाली की ये पंक्तियाँ भी शिक्षा जैसे आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना रुतबा दिखा रही हैं, जग में जब भी दो जने मिले, उनमें रुपयों का नाता है। किस्मत तो जाती बैठ यहाँ पहला कागज चल जाता है। संगीत छिड़ा सिक्कों का है फिर मीठी नींद नसीब कहाँ? नींदें तो लूटी रुपयों ने, सपना झनकारों ने लूटा। मेरी दुलहिन-सी रातों को नौ लाख सितारों ने लूटा।

ट्यूशन के पीछे छात्रों और अभिभावकों की देखा-देखी की प्रवृत्ति भी काम करती है। साथ ही पासबुक कल्ट भी अपना चमत्कार दिखा रही है। कक्षा में छात्र शिक्षक की बात, कहीं दूरस्थ रखी पासबुक का सपना देखता है। और घर पर पासबुक घर की मुर्गी दाल बराबर लगती है अतः वह दोनों ओर प्रेम पलता है, सखि दीपक भी और शलभ भी जलता है। (महादेवी वर्मा) मौलिकता, अध्यवसाय, छात्रों का आत्मबल हिल गया है, परिस्थिति शैक्षिक शोध चाहती है कि एक ओर छात्र 'माधव, आप सदा के कोरे।' हैं दूसरी ओर मेरिट ऊँची जा रही है सब कुछ वैसे ही चल रहा है। समाज देख रहा है कि ये पासबुक्स प्रतिदिन महिमा मंडित और भारत सरकार से रजिस्टर्ड भी हो रही हैं। उपचार चाहिए।

प्रतिवर्ष शिक्षकों की हजारों की भर्ती की विज्ञप्तियाँ और कार्यक्रम है किन्तु क्या शिक्षक की नौकरी भी लिपिक, सिपाही, पटवारी आदि के जैसी ही है मार्क्स और परिणाम। क्या मनुष्य और राष्ट्र बनाने वालों की परीक्षा किसी महनीय तरीके से नहीं हो सकती, कई बार शिक्षकों के दुराचार के समाचार निकलते हैं। हमें क्या हो गया है। एक आध्यात्मिक प्रकार के नियोजन का तरीका निकालने की फुरसत और चिंतन राष्ट्र के पास, पश्चिमी जीवन प्रणाली की नकल के अलावा हमारे पास और नहीं है ?

जहाँ तक ट्यूशन पर आंशिक और सामयिक नियंत्रण का प्रश्न है, शिक्षक ठोक बजाकर लिए जाएँ, उनका प्रशिक्षण, टैट जैसे अलग से किया जाए, उनको अपनी गौरव-गरिमा का भी ध्यान और प्रशिक्षण है। लेखक को लगता है चारित्रिक दृष्टिकोण से कक्षाएँ काँच की बनी हुई और पारदर्शी हों और उनमें शिक्षकों का टेस्ट कुछ आध्यात्मिक भी हो। प्रधानाध्यापक शासकीय कार्य के बजाय कक्षा शिक्षण को वरीयता क्रम से निरीक्षित करें। पाठ्यक्रम का विभाजन डायरी में हो और शिक्षक उसका अनुगमन करें। शिक्षक समग्र रूप से और विषयगत रूप से सप्ताह में एक विचार विमर्श और संतुलन करें। प्रार्थना सभा को एक दर्पण की तरह से सम्पन्न बनाया जाए। आधी पढ़ाई तो प्रार्थना सभा ही है।

शिक्षकों को खासतौर से अंग्रेजी, विज्ञान के विभागों के अनुसार पाठ्यक्रम की पूर्णता का संस्था स्तर पर प्रयत्न किया जाय। आज जब हर क्षेत्र में टीवी का दखल है तो गुत्थियों वाले पाठों का दूरदर्शीकरण किया जाए। धन कमाने वाले लोगों से शिक्षा कार्य से पृथक रखा जाए और पाठ्यक्रमों का वर्गीकरण नये सिरे से करके छात्रोपयोगी बनाया जाए। यदि शिक्षा क्षेत्र में अच्छे नागरिक बनाकर समाज को दिए जा सकें तो देश का, समाज का, विश्व का कल्याण होगा– प्रसाद कह गए हैं 'हमारे संचय में धरें दान।'

–से.नि. प्रधानाध्यापक, मुसावर (भरतपुर)

2011 तक बाघ सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें विश्व बैंक द्वारा भारत सहित तेरह देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया वहाँ बाघों की संख्या दो गुना करने पर विचार बना है। एक बाघ कन्सरवेशन फाउण्डेशन बनाया गया है। जो राशि स्वीकृत कर वन्य जीव संरक्षण में मदद करेगा। उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिमी बंगाल में बाघों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

घटते आवासीय क्षेत्र के कारण बाघों को राष्ट्रीय उद्यान तथा बाघ अभ्यारण्यों से बाहर जाना पड़ रहा है। जो जन तथा पशुओं का नुकसान पहुँचा रहे हैं। इसीलिए राष्ट्रीय पार्क तथा अभ्यारण्यों के क्षेत्रों के विस्तार की योजना बनाई जा रही है। भारत में बाघों की संख्या आज भी विश्व में सबसे ज्यादा है इस वर्ष की गणना में 1806 के लगभग हैं जबकि विश्व में इनकी संख्या 3500 ही है। रणथम्भोर तथा सुन्दरवन पश्चिमी बंगाल में इनकी संख्या काफी है। आने वाले समय में शातिर शिकारियों के कारण तथा लालची व्यापारियों के लालच तथा भ्रष्ट और अक्षम वन अधिकारियों और कर्मचारियों के अपवित्र गठजोड़ के कारण तेजी से बाघों का सफाया हो रहा है। पिछले दस वर्षों में 2200 बाघ मारे गये हैं। यदि विशेष ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाले समय में बाघ शायद यादों में ही रह जाएं।

विश्व वन्य जीव कोष (डब्ल्यू. डब्ल्यू. एफ.) द्वारा फरवरी माह में टाइगरमेन फतेहसिंह राठौड़ पूर्व निदेशक रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान को फरवरी 2011 में लाइफ टाइम पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुरस्कार उन्हें रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान में बाघों की संख्या बढ़ाने तथा प्रबंधन के लिए दिया गया। उन्हें 1963 में अन्तरराष्ट्रीय बहादुरी पुरस्कार भी दिया गया था। वे कभी भी शिकारियों के सामने नहीं झुके। बाघों के संरक्षण के लिए भारत महत्वपूर्ण देश है, यहाँ 42 में से 18 ऐसे स्थान चुने गये हैं जहाँ बाघों के प्रजनन की अच्छी सम्भावनाएँ हैं। बाघों के बचाने के लिए जंगल की कटाई पर रोक, टाइगर रिजर्व की कड़ी सुरक्षा, बाघ मारने वाले को फाँसी की सजा, नये जंगल लगाना, बाघ परियोजनाओं के क्षेत्र का विस्तार करना, मनुष्य के दखल पर रोक, खुफिया तंत्र द्वारा अंगों के कारोबार को रोकना, वन विभाग के कर्मचारियों की पारदर्शिता होनी चाहिए, वनों का अच्छा प्रबंध होना चाहिए, वन प्रबंधन में स्थानीय समुदाय की भागीदारी भी होनी चाहिए, वन्य परियोजनाओं में निर्माण कार्य पर पूर्णतया रोक लगानी चाहिए। तब ही हम जंगल के राजा बाघ को बचा पाएंगे और भारत में बाघों पर मंडरा रहे खतरे के संकट से बच पाएंगे।

–रीडर (से.नि.)
114, अमरसिंहपुरा, बीकानेर

अन्धेरे से उजाले की ओर ले जाता दीपोत्सव

❑ अचलचन्द जैन

शिविरा के पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

अन्धेरे के विरुद्ध लड़ने का त्यौहार है– दीपावली। अन्धेरा चाहे अन्दर का हो या बाहर का, इसके खिलाफ उठ खड़े होने और सतत लड़ते रहने की प्रेरणा देते हैं– दीप। दीपावली दीपों का उत्सव है। इसलिए इसे दीपोत्सव भी कहते हैं। दीप अपने प्रकाश से अन्धकार का नाश करते हैं और स्वयं जलकर लोगों के जीवन में प्रकाश फैलाते हैं। इसलिए शादी-विवाह, क्रिसमस डे, नव वर्ष आदि उत्सवों पर विभिन्न प्रकार के दीप जलाकर रोशनी की जाती है। अन्धेरे में तो कोई भी भटक सकता है। अतः दीपों का प्रकाश हमें सही रास्ता दिखाता है। दीपक हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू से जुड़ा हुआ है। प्रत्येक शुभ कार्य यथा– पूजा-पाठ, नया कार्य, आरती, वन्दना आदि हम दीप प्रज्ज्वलित कर प्रारम्भ करते हैं। आरती के दीप को आरती दीप कहा जाता है। जो सन्तान कुल को रोशन करे उसे कुल दीपक कहते हैं। ज्ञान के दीपक को ज्ञान-दीप कहा गया है, सूर्य को आकाश दीप की संज्ञा दी गयी है, शास्त्रों में भगवान को आत्मदीप कहा है। भगवान बुद्ध ने दीपक का महत्व समझाते हुए कहा था– 'अप्प दीपो भव।' अर्थात अपने दीपक खुद बनो। अन्धकार में दीप ही विश्व को प्रकाशित करता है। दीपक ज्ञान रूपी प्रकाश फैलाता है, जो हमें ज्ञानवान बनाता है। इसलिए ज्ञानरूपी प्रकाश की पूजा इस पर्व पर की जाती है। ज्ञान हमें सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

दीपक प्रकाश का पुंज है। उसकी लौ सदैव ऊपर की ओर रहती है। ऊँचाई की ओर जाने का लक्ष्य ही हमारी प्रगति का आधार है। ऊपर जाती हुई दीपक की लौ धुआँ निकालती है, अर्थात कालिमा का परित्याग करती है, जो यह दर्शाती है कि प्रगति की ओर अग्रसर होने पर अज्ञानता और कालिमा स्वयं भागने लगती है। दीपक का आधार है– बाती। बाती को तेल का सहयोग मिलता है। तेल को आश्रय प्राप्त होता है, मिट्टी के उस छोटे पात्र का जिसे दीपक कहते हैं। बाती रुई की बनती है। रुई का रंग सफेद होता है। सफेद रंग निर्मल और स्वच्छ होता है, जो सतोगुण का प्रतीक है।

बाती के बिना प्रकाश की कल्पना नहीं की जा सकती। बाती का अपना अस्तित्व होते हुए भी वह तेल को अपना अग्रज मानती है। तेल ही तो है, जो बाती के प्रकाश को सदैव प्रज्ज्वलित रखता है। तेल स्नेह का परिचायक है। स्नेह में ही वह अद्भुत शक्ति होती है जिसके सहारे शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। स्नेह हमारे जीवन का आधार स्तम्भ है। मिट्टी का पात्र, तेल तथा बाती ये तीनों का त्रिवेणी संगम है जो दीप को निरन्तर प्रज्ज्वलित रखता है। कोमलता, स्नेह तथा सदाचार की त्रिवेणी में ही ज्ञान के सरोज विकसित होते हैं। आवश्यकता है कि हम अपने अन्तरमन की कालिमा का त्याग कर अपने को निर्मल बनाएँ।

–गाँधी मुहल्लों का बास, सायला, जालोर

पुस्तक परिचय

रास्ता यह भी है (उपन्यास) : *राजेन्द्रमोहन भटनागर; अरु पब्लिकेशन्स प्रा.लि., नई दिल्ली; वर्ष : 2009; मूल्य : 200 रुपये।*

श्री राजेन्द्र मोहन भटनागर का उपन्यास शैक्षिक चिन्तन को कहानी के माध्यम से व्यक्त करने का अनूठा प्रयास है। लेखक का सुदीर्घ शैक्षिक अनुभव और शिक्षा को बच्चों के पहलु से सोचने का आग्रह इस उपन्यास की पृष्ठभूमि बना होगा। पुस्तक की भूमिका में अपने अनुभव के आधार पर वे बताते हैं कि "बच्चे क्या सोचते हैं और क्या करना चाहते हैं, इस तरफ गहराई से कोई खास कार्य सामने नहीं आया। हर बार हमारी ऊँचाइयों ने उसके मन की गहराइयों में बैठकर कार्य करने से इनकार कर दिया।" वास्तव में भी तमाम शैक्षिक प्रयोगों, अनुप्रयोगों में बच्चे को केन्द्र में रखने की बात तो कही जाती है। पर बच्चे क्या चाहते हैं। इस पर सभी मौन रहते हैं। प्रस्तुत उपन्यास भी इसी ओर इशारा करता है।

उपन्यास गद्य विधा का सशक्त साधन है। जिसमें कथाओं और उपकथाओं के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाकर एक विस्तृत ताने-बाने में कहानी को बुना जाता है। समीक्ष्य उपन्यास भी जीवन के इसी ताने-बाने को सशक्त ढंग से व्यक्त करता है। इसमें जीवन की तमाम विद्रुपताओं को दिखाते हुए एक आदर्श की कल्पना और उसको स्थापित करने का आग्रह दिखायी देता है।

उपन्यास के कथानक में सोहा केन्द्रिय पात्र है जो जीवन के कड़वे मीठे अनुभवों से गुजरती है। एक ओर उसे फ्रेन्ड लड़के लौरिया का प्यार मिलता है जो अलौकिक सा प्रतीत होता है, तो दूसरी ओर भारतीय राजमणिराय से प्यार के रूप में छल। दर्द, टूटन, घुटन और छटपटाहट से मुक्ति तलाशती सोहा महाविद्यालय की नौकरी छोड़कर जाँच इन्टरनेशनल विद्यालय में नौकरी करती है। यहाँ बच्चों के बीच अपने जीवन की सार्थकता तलाश करती सोहा के हाउस में एक समस्या ग्रस्त बालक कपिन्द्र है। उसकी समस्या विद्रोह है। उन परिस्थितियों के प्रति जिनके कारण वो अकेला और बेसहारा महसूस करता है। उसका उग्र व्यवहार पूरे विद्यालय के लिये समस्या है। ऐसे में संवेदनशील सोहा उसे अपने तरीके से नियंत्रित करती है। उसके भीतर का भ्रातृत्व उसे देखकर तड़प उठता है। वह उसे अपना लेती है। उपन्यास की कथा में प्रारम्भ में ही पर्यावरण के प्रति हमारी असंवेदनशीलता और पचड़े में नहीं पड़ने की हर व्यक्ति की सोच को घायल अजगर का प्रतीक बखूबी उभारता है। सोहा की साक्षर गाँव 'सांगला' की यात्रा में 'बालो' लड़की का असाक्षर मिलने के बहाने से इस तरह के अभियानों लेखक खबर लेते नज़र आते हैं। बच्चों को प्रकृति के नजदीक ले जाकर स्वतंत्रता देने से सृजनक्षमता विकसित होती है। ज्ञान चिन्तन को बसन्त मनाने के बहाने से लेखक व्यक्त करते हैं।

उपन्यास शिक्षा की समस्याओं पर शैक्षिक चिन्तन प्रस्तुत करता है। इसके लिए जिस प्रकार के विद्यालय की कल्पना की गई है। क्या सचमुच हर विद्यालय ऐसा हो सकता है? कहानी में प्रिन्सिपल कॉन्ट और सोहा के रूप में जो आदर्श स्थापित किये गये हैं उन्हें पढ़कर यही कहा जा सकता है "काश ! ऐसा यथार्थ में भी होता।"

समीक्ष्य उपन्यास की भाषा शैली उच्चकोटि की है। इसलिए बच्चों की समझ से बाहर हो सकती है, पर अभिभावकों और शिक्षकों को इसे पढ़ना चाहिए। उपन्यास से कपिन्द्र के उग्र व्यवहार के कारण आने वाले दुहराव को छोड़ दिया जाय तो उपन्यास शिक्षादर्शन और मनोविज्ञान पर आधारित होने से कुछ अलग तो जरूर है। कृति पठनीय है संग्रहणीय है।

–जगदीश कुमार चमोली
तथा स्वामी सत्संग भवन के सामने
गली नं.2, पुरानी शिवबाड़ी रोड़, बीकानेर

चींटी की धरोहर : *ज्ञानदेव मुकेश; पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी प्रा.लि., नई दिल्ली-5; संस्करण : 2010; मूल्य : 35 रुपये।*

कहानी समझने-समझाने की सरलतम विधा है। यह 20वीं शताब्दी की सबसे अधिक चर्चित विधा भी है। बचपन में बच्चों की जिज्ञासा को अक्षुण्ण बनाये रखने में कहानियों का अपना महत्व है। बालमन को तृप्त करने में छोटी-छोटी कहानियों का अपना महत्व है। छोटी-छोटी कहानियाँ दादा-दादी, नाना-नानी द्वारा गढ़ते रहने की परम्परा रही है, इसी परम्परा को अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रस्तुति देने में ज्ञानदेव मुकेश माहिर हैं। बालकों के मानसिक/आवश्यक स्तर तक पहुँचना कोई आसान कार्य नहीं है, छोटे-छोटे पात्रों, घटनाओं, कार्यकलापों, संवादों, काल्पनिक विचारों चारों ओर के पर्यावरण आदि को सूझबूझ के साथ समेटते हुए कहानी का सृजन कर बचपन की सोच को दिशा प्रदान करने में 'चींटी की धरोहर' सक्षम नजर आती है।

चींटी की धरोहर की छःओं कहानियाँ बाल ज्ञानेन्द्रियों को संस्कारित व सबल बनाने की दृष्टि से खूबसूरत रचनाओं में शुमार की जा सकती है। पुस्तक में समसामयिक चित्रावली को समाविष्ट करने से कहानियों में पूर्ण जीवटता दिखाई पड़ती है।

माँ की पतंग शीर्षक में तन्मय एवम् उसके मित्रों की मैत्रिक सोच एवम् हमदर्द पूर्ण सेवा/सेवा भावना से बीमार माँ का ठीक होने का संदेश अनुपम है। 'बेटा पतंग पर मैं थी मगर डोर तो तेरे हाथ में थी यह पंक्ति वर्तमान पीढ़ी को दिशा प्रदान करने के लिए बहुत है। 'चंचल पर्वत' कहानी में बाल चंचलता को कायम रखते हुए बच्चों में देखादेखी पूर्ण व्यवहार को परिमार्जित करने की प्रेरणा प्रदान करती है।

'चींटी की धरोहर' बच्चों के साथ-साथ उनके अभिभावकों को भी प्रेरित करने के लिए तैयार है, मेहनत की आदत को जीवित रखना जरूरी है, सुस्पष्ट सन्देश प्रदान कर रही है। वर्तमान में शिक्षक एवं विद्यार्थियों में एक दूसरे के प्रति विश्वास की आवश्यकता को विश्वास की दवा कहानी का निचोड़ सहजता के साथ प्रस्तुत करना अच्छी मिसाल है। बराल की त्याग कल्पना पुस्तक में समाहित कहानियों के क्रम में चरम की ओर ले जाती हुई दिखती है। 'गोल्डी का चाँद' कहानी अंतिम पड़ाव है जिसने बच्चों को अनुभव मार्ग में ले जाने के लिए अभिभावकों को अभिप्रेरित किया है।

'चींटी की धरोहर' में कहानियों की ऐसी बानगी है जिसमें बालमन और हृदय को बहुत ही सरलता व सहजता से छूने का अच्छा प्रयास किया है। कहानियों के कथन, लेखन एवम् चित्रावली में समन्वय स्पष्ट झलकता है।

'चींटी की धरोहर' सर्जनात्मक कृति की श्रेणी का संग्रह है, क्योंकि इसमें विचारों की अपेक्षा भावों के प्रकाशन पर बल दिया गया है।

शोध परिप्रेक्ष्य में इसे श्रेष्ठ कहानियों का स्तर प्रदान किया जा सकता है। 'अज्ञेय' जी का मत है कि अनुभूति ही लेखन की रचना का क्षेत्र हो, इसकी पालना मुकेश ने की है। लेखक महोदय ने यशपाल जी की उस मान्यता को भी स्वीकार किया है। जिन भावनाओं को सुन्दर व कल्याणकारी/समाजोपयोगी समझ हेतु उनको रचना में अभिव्यक्त कर देना चाहिए। यह मुकेश ने बखूबी किया है।

–ओम प्रकाश झँवर, प्रधानाचार्य
'आक्सीजन वर्ल्ड', 4 एफ 8, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा

आंख भर चितराम : *ओम पुरोहित 'कागद'; बोधि प्रकाशन, जयपुर; प्रथम संस्करण : अक्टूबर, 2009; मूल्य : 100 रुपये।*

'आंख भर चितराम' वरिष्ठ कवि ओम पुरोहित 'कागद' की राजस्थानी कविताओं का ताजा संग्रह है जिसमें कवि ने वर्णन व विवरण से आगे बढ़कर कविता को नूतन भाव-भूमि सौंपी है। इन कविताओं की विषय-वस्तु हमारे आस-पास के परिवेश की है मगर कविताओं की बुणगट कवि की सूक्ष्म व पैनी दृष्टि का परिचय देती है। शब्दों से चाक्षुष बिम्बों की मार्फत दृश्य रूप में उतरती इन कविताओं में राजस्थानी कविता के बदलते मिजाज को रेखांकित किया जा सकता है। कवि की कल्पना व मौलिक दृष्टि से ये शब्द-चित्र पाठक को मंत्रमुग्ध करने की क्षमता रखते हैं।

आठ खंडों में बँटे इस कविता संग्रह में प्रकृति के साथ कवि का घरोपा स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संग्रह की थार, बादळ, अड़वो, खेजड़ी एवं काळीबंगा शृंखला की कविताओं में राजस्थानी धरा की विविधरूपा अभिव्यक्ति हुई है। इन कविताओं में कहीं चिड़िया अड़वे की बाजू में घुसने-निकलने का खेल खेलती नजर आती है तो कहीं उजाड़ मरुस्थल में बिना लूंग खड़ी बूढ़ी खेजड़ी हाथों में रावणहत्था लिए कलावती जैसी लगती है। इन चित्रों में कहीं हरियल खेजड़ी की चूंदड़ी में चन्द्रमा 'त्या' करता है तो कहीं पक्षी अड़वे की बाजू-जेब में अंडे देते हैं। यहाँ कवि थार को विधना की 'सोनळ-सेज' के रूप में चित्रित करता है तो मरुधर की रेत उसे पानी व बादलों की तलाश में भटकती मिलती है। खेजड़ी को 'लूंठी सराय' बताता हुआ कवि पूछता है– 'बसै कठै/कीड़ी-कांटा/मोर-पखेरू/छोड़ खेजड़ी।' (पृ. 35) राजस्थानी लोक जीवन का इतना सहज-स्वाभाविक रूप इन कविताओं में प्रकट हुआ है कि पाठकीय चेतना मरुभौम की महक से आप्लावित हो जाती है। 'कागद' की कविताओं में 'लोक' महज नॉस्टेल्जिया की नहीं, बल्कि रचाव की भूमि के रूप में आया है। इन कविताओं में उत्तर-पश्चिमी राजस्थान बोलता-बतियाता है। मरुधरा का भौगोलिक परिवेश, सांस्कृतिक परम्पराएँ, अकाल आदि प्राकृतिक आपदाएँ, जीवन संघर्ष इन कविताओं में सहज रूप से उजागर हुआ है।

'काळीबंगा' शीर्षक खंड की इक्कीस कविताओं की लड़ी इस किताब को खास बना देती है। हनुमानगढ़ जिले के कालीबंगा गांव में तीन हजार वर्षों से भी अधिक पुरानी सभ्यता के अवशेषों का अवलोकन करती कवि की दृष्टि इन कविताओं में एक भरी-पूरी दुनिया के उजड़ने की त्रासदी को सामुदायिक नजरिए से देखती है। 'काळीबंगा रो मून/बतावै/अेक जात/आदमजात/जकी भेळी जागी/भेळी ई सोई/भेळप निभाई/ढिगळी होवण ताईं।' (पृ. 71) कवि कालीबंगा के थेहड़ में जीवन के चिह्नों की पड़ताल करते हुए स्वर्णिम अतीत से मिट्टी में मिलने की करुण यात्रा को प्रत्यक्ष कर देता है। मानवीय दृष्टि से इस तरह इतिहास की जनपक्षीय पड़ताल राजस्थानी कविता में पहली बार पढ़ने को मिली है।

प्रकृति के विभिन्न रंगों से साक्षात् करवाती इस काव्यकृति की झूठ और मन खण्ड की कविताओं का स्वर अन्य रचनाओं से किंचित अलहदा लगता है वहीं नवीन जैन की फोटोग्राफी देखकर रचित 'जातरा' सीरीज की कविताओं में पाठक को उनकी प्रेरक फोटो की कमी अखरती है।

यद्यपि कम से कम शब्दों में बात कहने का हुनर व लय पर कवि की पकड़ से इन कविताओं का शिल्प सशक्त नजर आता है। ये चितराम पाठक को न केवल एक एलबम देखने के आनंद का अहसास करवाते हैं बल्कि इनकी गूँज उसके मन-मस्तिष्क को चिन्तन-मनन के लिए भी प्रेरित करती है। राजस्थानी कविता के नए तेवर से रूबरू होने के लिए इस संग्रह का तन्मयतापूर्ण पाठ जरूरी है।

–मदनगोपाल लढ़ा, प्राध्यापक हिन्दी
144, लढ़ा निवास, महाजन (बीकानेर)-334604

कुमारी प्रियंका जाखड़ मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट अठवास द्वारा छात्रवृत्ति का वितरण

सीकर जिले में प्रतिवर्ष माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10 में सीकर जिले में प्रथम स्थान, फतेहपुर तहसील में प्रथम स्थान तथा रा.उ.मा.वि. अठवास में प्रथम स्थान पर आने वाली बालिका को नियमित छात्रवृत्ति के रूप में नकद राशि का वितरण कुमारी प्रियंका जाखड़ मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट अठवास (सीकर) द्वारा किया जायेगा।

इस घोषणा की क्रियान्विति के क्रम में इस वर्ष सीकर जिले में बालिका वर्ग में प्रथम स्थान एवं राज्य वरीयता सूची में पन्द्रहवाँ स्थान प्राप्त करने वाली बालिका कु. अमिता खीचड़ को 15 अगस्त, 2011 को जिला स्टेडियम के स्वाधीनता समारोह में 3100 रुपये की नकद राशि तथा जिला कलेक्टर एवं जिला शिक्षा अधिकारी के हस्ताक्षरयुक्त प्रशस्ति पत्र से माननीय उद्योग मंत्री श्री राजेन्द्र पारीक एवं जिला कलेक्टर श्री धर्मेन्द्र भटनागर के सान्निध्य में ट्रस्ट के द्वारा सम्मानित किया गया। फतेहपुर तहसील में बालिका वर्ग में कु. अंतिम सोनी को 2100 रुपये नकद तथा प्रशस्ति पत्र एवं कु. उषा पुत्री श्री शिव कुमार अठवास को रा.उ.मा.वि. अठवास में प्रथम स्थान पर आने के फलस्वरूप 1100 रुपये नकद राशि तथा प्रशस्ति पत्र ट्रस्ट द्वारा प्रदान किये गए।

कुमारी प्रियंका जाखड़ की स्मृति में इस ट्रस्ट द्वारा यह छात्रवृत्ति प्रतिवर्ष दी जाएगी। ट्रस्ट द्वारा इस तरह का कार्य बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने का एक अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय कार्य है। अभी हाल ही में स्वाधीनता दिवस पर जनहित के कार्यों एवं सामाजिक सेवा कार्यों के फलस्वरूप इस ट्रस्ट को जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित भी किया गया है।

डीआरडीओ ने खोजी सफेद दाग की दवा

नई दिल्ली। यूं तो सफेद दाग मिटाने के लिए बाजार में कई तरह की दवाएं उपलब्ध हैं और स्किन सर्जरी के जरिए भी इन्हें हटाने के प्रयास किए जाते हैं, लेकिन मर्ज को जड़ से खत्म करने लायक कोई इलाज नहीं है। अब रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने दावा किया है कि उसकी प्रयोगशाला ने सफेद दाग से निजात पाने की रामबाण दवा खोज निकाली है।

डीआरडीओ की उत्तराखंड में हल्द्वानी स्थित प्रयोगशाला रक्षा जैव ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डीआईबीईआर) ने सफेद दाग की समस्या से निपटने के लिए एक रामबाण दवा खोज निकाली है। जड़ी-बूटियों से बनी इस दवा को एक क्रांतिकारी खोज बताया गया है।

इस खोज से विशेष रूप से विवाह योग्य उन युवक-युवतियों को लाभ होगा जो ल्यूकोडर्मा यानी सफेद दाग से पीड़ित होने के कारण कुंठित और अवसाद में रहते हैं। डीआईबीईआर के निदेशक डा. जकवान अहमद ने 'हिन्दुस्तान' को बताया कि ल्यूकोस्किन नामक इस दवा को तैयार करने के प्रयास 1994 से किए जा रहे थे। यह रक्षा प्रयोगों के लिए किए जा रहे अनुसंधानों का ऑफ स्पिन प्रोडक्ट है और अब तमाम सफल प्रयोगों के बाद इसे बाजार में उतारा जा रहा है।

डॉ. अहमद ने बताया कि प्रयोगशाला ने दवा को बाजार में उतारने के लिए अपना फार्मूला ऐमिल फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड को उपलब्ध कराया है। दवा तैयार करने के लिए जिन जड़ी-बूटियों का उपयोग किया गया है, उनमें विषनाग, बाकुची, कौंच, मंडूकपर्णी अर्क और एलोवेरा (घृतकुमारी) शामिल हैं।

डीएनए बदला और चूजा बना घड़ियाल

लंदन। वैज्ञानिकों ने कुदरत के करिश्मे को मानो बेमानी कर दिया है। उन्होंने चूजे के डीएनए में बदलाव करके ऐसे भ्रूण बनाने में सफलता हासिल की, जिनमें चोंच की बजाय घड़ियाल जैसे थूथन विकसित हुए। जीवों के विकास की कुदरती प्रक्रिया में बदलाव करने में मिली यह सफलता मानव शिशुओं में जन्मजात विकृतियों को दूर करने की दिशा में मददगार साबित हो सकती है।

विशेषज्ञों ने चूजे के कुछ भ्रूणों के डीएनए में, उनके विकास के शुरुआती चरण में, बदलाव किए। इससे उन भ्रूणों में विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया रुक गई और उनमें थूथन विकसित होने लगे। दरअसल वैज्ञानिकों का यह काम कुदरत की लाखों साल पहले समाप्त हो चुकी प्रक्रिया को दोबारा जीवित करने जैसा था। चूजों में थूथन विकसित होने की प्रक्रिया 'क्रिटैशस काल' में ही खत्म हो गई थी और उनमें थूथन की बजाय चोंच विकसित होने लगे। क्रिटैशस काल आज से 13.5 करोड़ साल पहले की अवधि को कहा जाता है, जिस दौरान सरीसृपों का युग खत्म हुआ और नए कीड़ों और फूलदार वनस्पतियों की उत्पत्ति हुई।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के जीव-विज्ञानी अरखत अब्ज्ञानोव ने चूजे के अंडों में एक वर्गाकार छेद किया और उसमें भ्रूण विकसित होने के पहले जिलेटिन जैसे प्रोटीन का एक छोटा सा दाना डाला।

बिना मिट्टी के लगेगा आम का पेड़, उगेंगी सब्जियां

नोएडा। जिले के सभी स्कूलों के शिक्षकों को पर्यावरण संरक्षण की तकनीक में माहिर करने की कवायद शुरू कर दी गई है। इसके लिए सेक्टर-12 स्थित राजकीय इंटर कॉलेज में सोमवार से कार्यशाला का आयोजन शुरू किया गया। इसमें जिले के विज्ञान के 40 शिक्षक हिस्सा ले रहे हैं। इसको बिना मिट्टी के पौधे उगाने (हाइड्रोपोनिक्स) की तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाएगा। पांच दिवसीय कार्यशाला के बाद प्रशिक्षित शिक्षक मास्टर ट्रेनर के रूप में ब्लॉकों व स्कूलों में लोगों को इस तकनीक के बारे में जानकारी देंगे। जिले में जिस तरह से पेड़-पौधों के लिए जमीन कम होती जा रही है। उसे देखते हुए हाइड्रोपोनिक्स तकनीक काफी महत्वपूर्ण है। खास बात यह है कि इस तकनीक के माध्यम से न केवल फूलों के पौधे बल्कि सब्जियों जैसे टमाटर, नींबू, लौकी समेत आम के पेड़ भी बिना मिट्टी के उगाए जा सकते हैं। सोमवार से राजकीय इंटर कॉलेज में 'बिना मिट्टी के पौधे उगाना (हाइड्रोपोनिक्स) पर पांच दिवसीय कार्यशाला आरम्भ हो गई। कार्यशाला नौ सितम्बर तक चलेगी। कार्यशाला को जिला विज्ञान क्लब द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

चश्मे से जल्द मिलेगा छुटकारा

लंदन। अगर आप चश्मे के बिना पढ़ाई-लिखाई से सम्बन्धित कोई भी काम नहीं कर सकते हैं, तो अब चिंता करने की जरूरत नहीं।

ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने एक नई चिकित्सा पद्धति विकसित की है, जिसमें आंखों के अंदर एक तरह का प्लास्टिक प्रतिरोपित कर चश्मे की जरूरत को खत्म किया जा सकता है। शुरुआती परीक्षणों में 'जेड कामरा' नामक इस शैली के काफी अच्छे परिणाम मिले हैं। 'डेली टेलिग्राफ' के मुताबिक इस शैली में लेजर की मदद से कॉर्निया (आँखों के बाहरी लेंस) में एक बारीक छेद करके काफी महीन परत डाल दी जाती है। यह परत आँखों में प्रवेश करने वाली रोशनी की मात्रा को नियंत्रित करती है, जिससे व्यक्ति सभी चीजों को स्पष्ट एवं साफ देख पाता है। शोधकर्ताओं को उम्मीद है कि 'जेड कामरा' से जीवन में हर काम के लिए चश्मे पर आश्रित लोगों को काफी मदद मिलेगी। वे नंगी आँखों से सभी चीजों को साफ तरह से देख सकेंगे। उन्होंने बताया कि फिलहाल इस तकनीक का परीक्षण शुरुआती दौर में है। चिकित्सा जगत के पास इसे उपलब्ध कराने से पहले और परीक्षण करने होंगे।

अब मोटापे पर लगाम लगाना आसान

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने पहली बार प्रयोगशाला में ब्राउन फैट का विकास किया है। उनका दावा है कि इस नवीनतम हथियार से मोटापा कम करने में मदद मिलेगी। यह एक अद्भुत उतक है जो ऊर्जा से गर्मी पैदा करता है। वैज्ञानिकों के अनुसार लोगों में बहुत ज्यादा ह्वाइट फैट के कारण उनका मोटापा बढ़ता जाता है जो मुख्यतः ऊर्जा संग्रह का एक स्थान है जबकि ब्राउन फैट ऊर्जा उत्पादक है। करीब 50 ग्राम ह्वाइट फैट में 300 किलो कैलरी ऊर्जा संग्रहित होती है। इतना ही ब्राउन फैट प्रतिदिन 300 किलो कैलरी कम करता है। सिडनी के गारवान इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल शोधकर्ताओं

ने पाया कि वयस्कों में उत्तक कोशिकाओं से ब्राउन फैट का निर्माण किया जा सकता है। इससे यह उम्मीद जगी है कि किसी भी व्यक्ति के लिए ब्राउन फैट शरीर से बाहर बनाई जा सकती है और फिर इसका प्रतिरोपण किया जा सकता है।

सरल व सुरक्षित होगी स्तन कैंसर की जाँच

लंदन। महिलाओं में स्तन कैंसर की पहचान अब बेहद सरल और सुरक्षित हो जाएगी। इजरायली वैज्ञानिक एक ऐसा स्कैनर बनाने में कामयाब रहे हैं, जो रेडिएशन का इस्तेमाल किए बिना ही कैंसर के ट्यूमर का पता लगा सकेगा। इससे रेडिएशन से स्वस्थ कोशिकाओं को नुकसान पहुँचने की आशंका भी खत्म हो जाएगी।

'डेली मेल' के मुताबिक येरुशलम स्थित हादसा युनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर के वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया नया स्कैनर इंफ्रारेड किरणों और ऊष्मा की मदद से ट्यूमर की पहचान करता है। यह यंत्र स्तन कैंसर की जाँच में इस्तेमाल की जाने वाली पारंपरिक एक्स-रे मैमोग्राम तकनीक से कहीं ज्यादा प्रभावी है। शोधकर्ता डॉक्टर रूबेन लिब्सन की मानें तो स्तन कैंसर से पीड़ित महिलाओं की बाहरी त्वचा से एक अलग तरह का सिगनल निकलता है। नया स्कैनर मरीज के शरीर को स्पर्श किए बिना ही इस सिगनल को भाँप लेता है। लिब्सन के अनुसार ब्रिटेन में 2500 महिलाओं पर नए स्कैनर का सफल परीक्षण किया जा चुका है। 92 फीसदी मामलों में इस यंत्र ने स्तन कैंसर की सही पुष्टि की है। वहीं, एक्स-रे मैमोग्राम की सफलता दर 80 फीसदी के आसपास दर्ज की गई है। उन्होंने कहा एक्स-रे मैमोग्राम पुरानी तकनीक है, जो डॉक्टरों के कौशल और तजुर्बे पर निर्भर करती है। जबकि नया स्कैनर हाई-टेक है।

खुशबू से घटेगा खाने में तेज नमक

लंदन। खाने में नमक ज्यादा हो जाए तो घबराने की जरूरत नहीं है। वैज्ञानिकों ने इसको कम करने का तरीका खोज निकाला है। यह कम होगा खाने में कुछ निश्चित सुगंध के इस्तेमाल से। खाने में अधिक नमक के इस्तेमाल से हाई ब्लड प्रेशर और दिल की बीमारियाँ होने की आशंका रहती है। शोधकर्ताओं ने ऐसी 14 खुशबुओं को खोज निकाला है, जिसके प्रयोग से भोजन में नमकीन की महक आएगी और इससे भोजन में चौथाई नमक कम करने में सहायता मिलेगी। खोजकर्ताओं की टीम के प्रमुख फ्रांस की बरगंडी यूनिवर्सिटी के थियरे थामस डाग्विन ने बताया कि हमारे अध्ययन में यह बात सामने आई है कि भोजन में सार्डिन का प्रयोग बढ़ाने से नमक जैसा स्वाद बढ़ाया जा सकता है।

नैनो आकार की बिजली मोटर बनाई

ह्यूस्टन। वैज्ञानिकों ने विश्व के पहले एक अणु वाले बिजली मोटर का विकास किया है। यह बिजली मोटर एक नैनोमीटर को मापने में सक्षम है। इससे नए प्रकार के उपकरणों को तैयार किया जा सकता है और इनका इस्तेमाल औषधि से लेकर इंजिनियरिंग जैसे क्षेत्रों में भी हो सकता है। वैज्ञानिकों की यह खोज एक क्रांतिकारी कदम है। 60,000 नैनोमीटर की चौड़ाई मानव के एक बाल की चौड़ाई के बराबर होती है। मैसाचूसेट्स स्थित टफ्टस यूनिवर्सिटी में केमिस्ट्री के सहायक प्रोफेसर चार्ल्स साइकेस के मुताबिक इस अणु मोटर के विकास से नए प्रकार के बिजली परिपथ बनाने का रास्ता खुल सकता है। टफ्टस दल ने कहा है कि यह बिजली का मोटर मात्र एक नैनोमीटर को मापने में सक्षम है।

पता चल गया लोगों में ऊर्जा का राज

लंदन। व्यक्ति में मौजूद एनर्जी का लेवल शरीर में मौजूद खास तरह के जींस पर निर्भर होता है। हर किसी का एनर्जी लेवल अलग-अलग होता है। इसी का कारण है कि कोई जल्दी काम करता है तो कोई धीरे चलता है। कनाड़ा की मैकमास्टर यूनिवर्सिटी की रिसर्च स्टडी के मुताबिक एक्सरसाइज करते वक्त शरीर में खास तरह का एएमपी काइनेज नाम का एनजाइम बनता है। यह एनजाइम आपके खाने को एनर्जी में बदलता है। इसके मुताबिक अगर आपके शरीर में काइनेज की मात्रा ज्यादा होगी तो आप ज्यादा काम कर पाएंगे, वहीं जिनमें यह मात्रा कम होगी वह जल्दी थक जाएंगे। रिसर्च के दौरान चूहों पर इसका टेस्ट किया गया, जिसमें देखा गया कि जिस चूहे में एनजाइम की मात्रा ज्यादा थी वह ज्यादा देर तक दौड़ा।

अब बोलने वाली कारें

लंदन। आपके सामने जल्द पेश होने वाली है 'बोलने वाली कार'। चौंकिएगा नहीं, क्योंकि इटली के वैज्ञानिकों का दावा है कि उन्होंने एक ऐसा साफ्टवेयर विकसित किया है जिसकी मदद से सड़क पर कारें एक-दूसरे से 'बातचीत' कर पाएंगी। 'बीबीसी' की खबर के अनुसार, बोलोग्ना विश्वविद्यालय के एक दल का कहना है कि इन कथित 'बोलने वाली कारों' को सड़क पर दूसरे वाहन से बातचीत करने के लिए मानव जैसे चेहरे की भी जरूरत नहीं होगी।

वैज्ञानिकों ने कहा कि इससे मिलती-जुलती तकनीक पहले भी प्रयोग में लाई जा चुकी है लेकिन इस नई तकनीक की मदद से कारें यह 'जानने' में भी सक्षम होंगी कि कुछ किलोमीटर आगे क्या घटना घटित हुई है।

हार्ट अटैक नहीं लेगा जान

लंदन। हार्ट अटैक अब मौत का सबब नहीं बनेगा। अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिकों ने 'आईजीएफ-1' और 'एचजीएफ' नामक दो ऐसे प्रोटीन खोजने का दावा किया है, जिनकी मदद से दिल का दौरा पड़ने के बाद हृदय की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को दोबारा जोड़ा जा सकेगा। वो भी किसी साइडइफेक्ट के बगैर।

लिवरपूल जॉन मूर्स यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने बताया कि 'आईजीएफ-1' और 'एचजीएफ' बहुत हद तक इंसुलिन से मेल खाते हैं। इंजेक्शन के जरिए दोनों प्रोटीन को दिल की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं तक पहुँचाया जाता है, ताकि उनमें मरम्मत का काम शुरू हो सके। प्रमुख शोधकर्ता डॉक्टर नडाल गिनार्ड के मुताबिक 'आईजीएफ-1' और 'एचजीएफ' परीक्षण की कसौटी पर खरे उतरे हैं। सुअरों पर अध्ययन के दौरान दोनों प्रोटीन की मदद से न केवल दिल की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत की जा सकी, बल्कि उन दोनों के पनपने की संभावनाएं भी बढ़ाई गईं। गिनार्ड की मानें तो 'आईजीएफ-1' और 'एचजीएफ' मानव शरीर में प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं। इनकी मदद से कोशिकाएं एक-दूसरे से सम्पर्क साधती हैं, जिससे न केवल क्षतिग्रस्त हिस्से दोबारा दुरुस्त हो पाते हैं, बल्कि कुछ ही दिनों बाद दिल सुचारू रूप से काम भी करने लगता है।

अन्तर्राष्ट्रीय बधिर दिवस के अवसर पर रैली का आयोजन

मूक बधिर बालक-बालिकाएँ भी सामान्य बालक-बालिकाओं की तरह प्रतिभावान होते हैं। उनके भी सपने होते हैं, जिन्हें हकीकत में बदलकर उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाने का काम निःसंदेह शिक्षकवृन्द का होता है। अतः हमें मूक बधिर, दृष्टिबाधित एवं शारीरिक रूप से असक्षम छात्र-छात्राओं के साथ संवेदनशीलता एवं प्रेम से व्यवहार करते उनके व्यक्तित्व निर्माण का प्रयास करना चाहिए।

ये उद्‌गार प्रदेश के शिक्षामंत्री मास्टर भँवरलाल मेघवाल ने शुक्रवार, 23 सितम्बर 2011 को 'राजस्थान एसोशिएशन ऑफ द डीफ' के तत्वावधान में अल्बर्ट हॉल, रामनिवास बाग में आयोजित मार्च के शुभारम्भ अवसर पर अपने भावपूर्ण उद्‌बोधन में प्रदान किए। आपने कहा कि राजस्थान प्रत्येक मूक बधिर बालक-बालिका को शिक्षा से जोड़ा जाएगा तथा गुणवत्तापूर्ण एवं व्यवस्थित शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए राज्य सरकार प्राथमिकता एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेगी। यह आयोजन राजस्थान एसोशिएशन ऑफ द डीफ के द्वारा 25 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय बधिर दिवस के उपलक्ष्य में किया गया था।

शिक्षा मंत्री महोदय ने फरमाया कि सामान्य शिक्षक भर्ती के साथ-साथ ही मूक बधिर बच्चों की शिक्षा हेतु विशेष शिक्षकों की भर्ती की जाएगी तथा आवश्यक उपकरण एवं अन्य शैक्षिक व सहशैक्षिक सुविधाएं भी विकसित की जाएगी। आवश्यकता होने पर अतिरिक्त कक्षाएँ भी खोली जाएँगी।

शिक्षा मंत्री महोदय ने रंग-बिरंगे गुब्बारे हवा में छोड़कर इस मार्च का शुभारम्भ किया जो अल्बर्ट हॉल, रामनिवास बाग से शुरू होकर स्टेच्यू सर्किल, उद्योग भवन तक विसर्जित हुआ।

राज्य स्तरीय साहित्य एवं कवि सम्मेलन का आयोजन

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी की ओर से माह अगस्त 2011 को राजस्थानी अकादमी व आकाशगंगा चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में रविवार, 29 अगस्त 2011 को हनुमान मंदिर सभागार में आयोजित राज्य स्तरीय साहित्य एवं कवि सम्मेलन का आयोजन रखा गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि मुख्य सचेतक श्री वीरेन्द्र बेनीवाल थे। उन्होंने मां, मातृभूमि व मातृभाषा का दर्जा स्वर्ग से ऊँचा होना बताया। विशिष्ट अतिथि राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र खड़गावत ने अकादमी की गतिविधियों से अवगत कराया। समारोह की अध्यक्षता महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गंगाराम जांगिड़ ने की। उन्होंने विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रारम्भ करने का आश्वासन दिया। मुख्य वक्ता साहित्यकार प्रो. जहूर खाँ मेहर, जोधपुर ने राजस्थानी भाषा को मान्यता हेतु जन-आंदोलन बनाने का आग्रह किया, आगन्तुक अतिथि कवि व साहित्यकारों को शाल व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन अकादमी सचिव पृथ्वीराज रतनू ने किया।

उद्‌घाटन सत्र में लगभग 30-35 साहित्यकारों का सम्मान किया गया। जिसमें सर्वश्री प्रो. जहूर खां मेहर (जोधपुर), डॉ. किरण नाहटा (बीकानेर), बैजनाथ पंवार, डॉ. भंवरसिंह सामोर, दुलाराम सहारण (चुरू), सत्यनारायण इंदौरिया (रतनगढ़), सत्यनारायण सोनी (परलीका), शिवराज छंगाणी (बीकानेर), भवानीशंकर व्यास 'विनोद' (बीकानेर), श्याम महर्षि (डूंगरगढ़), तारालक्ष्मण गहलोत, बसन्ती पंवार, अशोक जोशी (जोधपुर), लक्ष्मीनारायण रंगा, मालचंद तिवाड़ी, उपध्यानचन्द कोचर (बीकानेर), डॉ. राजेन्द्र बारठ (उदयपुर), उपेन्द्र अणु (ऋषभदेव), रवि पुरोहित, मदनगोपाल लढ्ढा (महाजन), राजूराम बीजारणिया व रामजीलाल घोड़ेला (लूणकरणसर) का सम्मान, श्रीमान् वीरेन्द्र बेनीवाल मुख्य सचेतक, राजस्थान सरकार के करकमलों से किया गया। राज बिजारणिया के चित्रों की प्रदर्शनी 'अंबेर' का भी उद्‌घाटन हुआ। आज का राजस्थानी कथा साहित्य और कविता साहित्य पर तीन सत्र हुए। चर्चा सार्थक रही।

रात्रि को कवि सम्मेलन रखा गया जिसमें कवि दुर्गादान सिंह गौड़, कोटा; भंवर जी भंवर, जयपुर; कल्याण सिंह राजावत, झोटवाड़ा; कविता किरण, फालना; कालूराम प्रजापति, जोधपुर; कैलाश मण्डेला, शाहपुरा; उपेन्द्र अणु, रिषभदेव; बीकानेर से शंकर सिंह राजपुरोहित थे। बाहर से पधारे कवियों को पाँच-पाँच हजार रुपये के चैक, स्मृति चिह्न, शाल व श्रीफल देकर डॉ. ए.के. गहलोत, कुलपति, पशु विज्ञान एवं चिकित्सा विश्वविद्यालय, बीकानेर के करकमलों से सम्मान किया गया। आकाशगंगा चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष डा. सुभाष गोयल एवं पृथ्वीराज रतनू ने आगन्तुकों का आभार जताया।

—पृथ्वीराज रतनू, सचिव
राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

'टाइम' की सूची में गाँधीजी सबसे ऊपर

महात्मा गाँधी को 'टाइम' मैगजीन ने दुनिया के 25 सर्वकालिक नेताओं की सूची में सबसे ऊपर रखा है। इसमें दलाई लामा और अकबर के नाम भी शामिल हैं। 'टाइम' में गाँधीजी के बारे में कहा गया है कि ब्रिटिश राज में शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने के कारण वे भारतीय आजादी की लड़ाई की प्राणवायु बन गए। वैसे तो देश का विभाजन हो गया और गाँधी की हत्या हो गई। लेकिन उनके दिखाए रास्ते पर दूसरे देशों में भी सामाजिक आंदोलन हुए। इनमें अमेरिका का नागरिक अधिकार आंदोलन भी एक था।

दलाई लामा के बारे में कहा गया है कि वे सिर्फ तिब्बतियों के अधिकारों और बौद्ध शिक्षा के नहीं बल्कि पूरी दुनिया में धार्मिक सहिष्णुता व शांति के सबसे बड़े प्रवक्ता हैं। तिब्बत के असंख्य लोग उन्हें धार्मिक गुरु और राज्य का प्रमुख मानते हैं।

टॉप 10 सर्वकालिक नेता–
1. महात्मा गाँधी, 2. अलेक्जेंडर द ग्रेट, 3. माओत्सेतुंग, 4. विंस्टन चर्चिल, 5. चंगेज खान, 6. नेल्सन मंडेला, 7. अब्राहम लिंकन, 8. एडोल्फ हिटलर, 9. अनेस्टो चे ग्वेरा, 10. रोनाल्ड रीगन।

(स्रोत : दैनिक भास्कर, बीकानेर, 07.02.11)

बांसवाड़ा

रा.मा.वि., बोड़ीगामा को ग्राम पंचायत बोड़ीगामा सरपंच ने 7000 रुपये का माइकसेट, श्री रमणलाल नानावटी से 1,500 रुपये का छात्र-छात्रा को निःशुल्क पोशाक, श्री फूलशंकर ने विद्यालय विकास हेतु 1,050 रुपये श्री रमणलाल कतीजा ने छात्र-छात्रा को 35 रजिस्टर लागत 700 रुपये। **रा.मा.वि., कुमजी का पारड़ा** में श्री लक्ष्मण सिंह ने 15,000 रुपये की लागत से प्रार्थना स्थल पर माँ सरस्वती मयमूर्ति का मन्दिर बनवाया। सर्वश्री महेन्द्र सिंह चौहान, जसवन्त सिंह पंवार, गजराज सिंह ने लोहे के टेबल-स्टूल 5 सेट प्रत्येक ने प्रदान किए। सर्वश्री हीरा भाई, लक्ष्मण सिंह ने लोहे के टेबल-स्टूल 2 सेट प्रत्येक ने प्रदान किए। सर्वश्री देवीसिंह, विक्रम सिंह, जयशंकर पाटीदार, हरिश गर्ग, मनोहर सिंह, भंवर सिंह ने लोहे के टेबल-स्टूल एक-एक सेट प्रत्येक ने प्रदान किए। कक्षा 10 व 9 के अभिभावकों ने विकास समिति के रजिस्ट्रेशन हेतु 4,000 रुपये नकद प्रदान किए।

बून्दी

रा.उ.मा.वि., डाबी में श्री युवराज राठौड़ द्वारा 75,000 रुपये की लागत से शाला का मुख्य द्वार बनवाया तथा छात्रों के लिए 125 फर्नीचर सैट, शुद्ध पेयजल हेतु आर.ओ. मशीन भेंट, श्री लालचन्द राठौड़ से सबमर्सिबल पम्प मोटर प्राप्त हुआ। श्री रामनिवास गुर्जर ने 10 छत पंखे, सर्वश्री केसरीमल हरसौरा, चांदमल जैन प्रत्येक से 11,000 रुपये नकद, श्री फूलचन्द जैन द्वारा बरामदा व फर्शपट्टी, शंकर टेन्ट हाउस ने 3 फर्श दरी सप्रेम भेंट की। **रा.बा.उ.मा.वि., इन्द्रगढ़** में श्री सुरेश कुमार (व.अ.) ने एक दीवार घड़ी विद्यालय को सप्रेम भेंट की। श्री जीवन्धर जैन से बेट्री लगाने हेतु 56 मीटर तार प्राप्त हुआ।

भरतपुर

शहीद सरमन सिंह रा.उ.मा.वि., गहनौली मोड़ को श्री हरेन्द्र सिंह गुर्जर द्वारा 10,000 रुपये की लागत से सबमर्सिबल पम्प विद्यालय को उपलब्ध कराया। **रा.बा.उ.मा.वि., कामां** में श्री मदनमोहन जी पुष्टिमार्गीय हवेली ट्रस्ट कामां द्वारा 5,00,000 रुपये की लागत से विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण करवाया।

राजसमन्द

रा.उ.मा.वि., कोठारिया के श्री रमेशचन्द्र बंशीलाल ने अपनी पुत्रियों के विवाह पर विद्यालय को 40,000 रुपये का माईकसेट एवम् बॉक्स सप्रेम भेंट किया। **रा.मा.वि., आत्मा** को श्री रंगलाल सुनील कुमार सिंपजी से 15,000 रुपये की लागत से 100 (एक सौ) स्कूल बैग प्राप्त हुए।

सवाईमाधोपुर

रा.उ.मा.वि., कुण्डेरा के श्री प्रह्लाद कुमार गुप्ता ने 25,051 रुपये लागत से स्टेज के निर्माण हेतु विद्यालय विकास कोष में सप्रेम भेंट किए। रा.उ.प्रा.वि., सीनोली के सर्व श्री प्रभूलाल मीना, हनुमान मीना, खिलाड़ी लाल मीना, ओम प्रकाश मीना, दिलकेश मीना, मुकेश मीना व राजूदास से प्रत्येक से एक-एक छत पंखा तथा सर्वश्री नानगराम प्रजापत, बाबूलाल मीना, रामण्डी मीना लखपत मीना से प्रत्येक से एक-एक कुर्सी प्राप्त हुई। श्री रामभजन मीना से एक लोहे की अलमारी लागत 1750 रुपये, श्रीमती रामदुलारी मीना से दो कुर्सी प्राप्त हुई। श्री रामकिसन मीना से लोहे का बक्सा एक लागत 1700 रुपये प्राप्त हुआ।

सिरोही

रा.उ.मा.वि., वेलांगरी के कक्षा-10 में अध्ययनरत 16 स्वयंपारी छात्र एवं छात्राओं द्वारा 17 सेट लोहे की टेबल-स्टूल प्राप्त हुए जिसकी लागत 13,600 रुपये। रा.उ.मा.वि., आदर्श डूंगरी की श्रीमती अमृत जोशी से एक अलमारी व एक पेटी लागत 5000 रुपये, गोपालराम पुरोहित से गेहूँ भरने हेतु बड़ा मडु एवं यू.पी.एस. लागत 7000 रुपये श्री भँवरलाल पुरोहित से दो पंखे, पाइप कुर्सी रिपेयरिंग व छुटकर कार्य हेतु 5000 रुपये, श्री किशोरिंग पुरोहित से टाइल्स व फिटिंग बाथरूम लागत 2500 रुपये, श्रीरामाराम मिस्त्री एवं इम्तियाज मोहम्मद से मीटिंग आयोजन व्यय लागत 5200 रुपये, जनसहयोग से नल फिटिंग बाबत 1500 रुपये प्राप्त हुए। रा.बा.उ.मा.वि., सरूपगंज को श्री रमेश कुमार मीणा से 3500 रुपये, श्री तेजनारायण सिंह बनास से 2000 रुपये, सुश्री ट्विंकल से 2,000 रुपये की लागत से एक लोहे की अलमारी, श्री महेन्द्र कुमार सोनी से 3000 रुपये, कक्षा 10 की छात्राओं से 1950 रुपये की लागत से एक लोहे का बक्सा, श्री तुषार डाँगी से एक माइक सैट लागत 9500 रुपये, श्री बींसाराम खाखरवाड़ा से एक रिवाल्विंग चेयर लागत, 1800 रुपये, सर्वश्री मुश्ताक भाई नागौरी, थानाराम पुरोहित, हितेश माली, हेमाराम चौधरी, अमृतलाल टेलर, श्याम आयुर्वेदिक स्टोर सरूपगंज, विनोद शर्मा (प्रबन्धक आदर्श को-ऑपरेटिव बैंक सरूपगंज, नीति प्रियंक साइंटिफिक आबूरोड, जे.के. बैटरी सरूपगंज, शंभू भाई रावल (साईं टेंट हाउस), गोरखा प्रजापत, वी.आई.टी. कम्प्यूटर सरूपगंज द्वारा 52000 रुपये की राशि से वाकपीठ कार्यक्रम, बैग एवं डिजिटल कैमरा, फर्नीचर व्यवस्था, माइक व्यवस्था, टेन्ट व्यवस्था व बैटरी व्यवस्था हेतु प्राप्त हुए। (श्री मूसाखान से 5000 रुपये, श्री ललित राजपुरोहित से 2500 रुपये की लागत से फाईबर सीट, गुप्तदान से प्रिंटर लागत 10,500 रुपये, छात्राओं के अभिभावकों से स्काउट गाइड राष्ट्रीय जम्बूरी (हैदराबाद) हेतु 35000 रुपये प्राप्त हुए। संघवी नत्थीबाई खुमाजी रा.मा.वि., तवरी में श्रीमती आशा प्रकाश गाँधी (संघवी नत्थी बाई खुमाजी ट्रस्ट सदस्य) द्वारा 25000 रुपये की लागत से विद्यालय में जल व्यवस्था, पाइप लाईन, मोटर, पाँच जल बिन्दुओं द्वारा 325 वृक्षों का संरक्षण हेतु कार्य करवाये गये। रा.उ.प्रा.वि., मण्डवाड़ा (ऊड़) को श्रीमती खासी बाई पुरोहित से पानी की मोटर हैण्डपम्प पर सैट कराई लागत 12,000 रुपये, श्री मीठालाल पुरोहित से कम्प्यूटर कुर्सी नग-2 लागत 1800 रुपये प्राप्त हुई।

प्रतिध्वनि

गाँधी होने के मायने

भारत के स्वाधीनता आंदोलन के नायक के रूप में महात्मा गाँधी को देश का हर नागरिक जानता है। एक साधारण लगने वाले असाधारण व्यक्ति द्वारा किए गए अद्वितीय कार्य का यह एक अद्भुत उदाहरण था। भले ही गाँधी की इस विलक्षण उपलब्धि के पश्चात्, जिसका आधार सत्याग्रह था, देश-दुनिया में तद्नुरूप हुए आंदोलनों में सफलता मिली हो, लेकिन भारतीय स्वतंत्रता हेतु चलाए गए आंदोलन दौर या कि गाँधी युग में वैसा होना नामुमकिन प्रायः लगा करता था।

सत्याग्रह यानी सत्य और न्याय के लिए निवेदन और इस निवेदन की पृष्ठभूमि में प्रेम, अहिंसा और सन्मति। सत्याग्रह की नाव और अहिंसा की पतवार। मगर, उस समय नामुमकिन लगने वाला यह काम सत्याग्रह और अहिंसा के बल पर मुमकिन हुआ। सत्याग्रह की नाव और उस पर लगी अहिंसा की पतवार इतनी मजबूत थी कि तूफानों और झंझावातों से टकरा-टकरा कर अन्ततः मंजिल पर पहुँच ही गयी। इस प्रकार प्रेम, अहिंसा और सन्मति के निर्मल नीर से नहाया और रसभरा **सत्याग्रह** तोप, तलवार व बंदूक से बड़ी ताकत बन कर उभरा जिस पर दुनिया भर में चर्चा हुई और हथियारों के बेअन्त जखीरे में अमोघ अस्त्र के रूप में वह स्थापित हो गया। सत्याग्रह एक ऐसा हथियार है जो अन्य किसी भी हथियार को हरा सकता है।

यह सच है कि जो लोग शान्ति और सहिष्णुता के लिए काम करते हैं, उन्हें एक न एक दिन सफलता और प्रतिष्ठा अवश्य मिलती है। गाँधी जी के द्वारा दिखाए गए रास्ते पर अन्य देशों में भी आंदोलन हुए और उनमें सफलता प्राप्त हुई। इनमें अमेरिका का नागरिक आंदोलन भी एक था। अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति बराक ओबामा गाँधी जी से अत्यधिक प्रभावित हैं। उन्हें अपना नायक बताते हुए ओबामा कहते हैं, 'अगर किसी भी जीवित अथवा दिवंगत हस्ती के साथ मुझे रात्रि भोज का मौका दिया जावे तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी मेरी पहली पसन्द होंगे। अगर भारत में अहिंसा आंदोलन शुरू नहीं हुआ होता तो अमेरिका में भी नागरिक अधिकारों के लिए आंदोलन नहीं हो पाता।'

वर्ष 2011 के प्रारम्भ में **टाइम मैगजीन** ने दुनिया के 25 सर्वकालिक महत्वपूर्ण नेताओं की सूची प्रकाशित की थी जिसमें सबसे ऊपर महात्मा गाँधी का नाम है। टाइम ने लिखा है कि अहिंसामय शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन के कारण वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्राणवायु बन गए। कितनी बड़ी बात कही है टाइम ने। हमें इस पर गर्व करना चाहिए। इस प्रकार पूज्य बापू भारत की एक अनमोल धरोहर हैं। उनके विचारों को हमारे संस्कारों में संजोकर तद्नुसार आचरण करना हर भारतीय का पुनीत कर्तव्य है और उसी में हमारा भला निहित है।

गाँधी केवल आजादी आंदोलन के ही हीरो नहीं थे बल्कि उन्होंने सम्पूर्ण जीवनचर्या पर अनुभूत दर्शन हमें प्रदान किया है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण है। राजनीति, अर्थनीति, समाजशास्त्र, धर्मशास्त्र, चिकित्साशास्त्र आदि-आदि, सभी क्षेत्रों में गाँधीजी के विचार हमारे लिए अमोल विरासत हैं।

– ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

प्रेम, अहिंसा और सन्मति के निर्मल नीर से नहाया और रसभरा सत्याग्रह तोप, तलवार व बंदूक से बड़ी ताकत बन कर उभरा जिस पर दुनिया भर में चर्चा हुई और हथियारों के बेअन्त जखीरे में अमोघ अस्त्र के रूप में वह स्थापित हो गया। सत्याग्रह एक ऐसा हथियार है जो अन्य किसी भी हथियार को हरा सकता है। यह सच है कि जो लोग शान्ति और सहिष्णुता के लिए काम करते हैं, उन्हें एक न एक दिन सफलता और प्रतिष्ठा अवश्य मिलती है।

प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक आलोक गुप्ता द्वारा डिपार्टमेंट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित एवं कोटावाला ऑफसेट, 82, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : आलोक गुप्ता

राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह, 2011 : पुरस्कृत शिक्षक

डाक पंजीयन संख्या
RJ/JPC/M-29/2011-13

शिविरा पत्रिका (मासिक)/अक्टूबर, 2011
प्रकाशन तिथि 2 अक्टूबर, 2011 पृष्ठ 52
प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

समाचार-पत्र पंजीयन संख्या
10350/66